मैथिली साहित्य • समीक्षा-श्रृंखला

नित नवल

कैलाश कुमार मिश्र

पाँच कृतिक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका • २०२७

नित नवल कैलाश कुमार मिश्र

मैथिली साहित्य • समीक्षा-शृंखला

नित नवल कैलाश कुमार मिश्र

पाँच कृतिक साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

लेखक

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

२०२७

प्रकाशन-विवरण

नित नवल कैलाश कुमार मिश्र

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका

प्रकाशकीय परिचय : www.videha.co.in

© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७

सर्वाधिकार सुरक्षित। लेखकक लिखित अनुमतिक बिना एहि पुस्तकक कोनो अंशक पुनर्मुद्रण वा व्यावसायिक पुनर्प्रकाशन नहि कएल जाए। उद्धरण आ शैक्षिक उपयोग प्रचलित सन्दर्भ-परम्पराक अनुसार कएल जा सकैत अछि।

अनुक्रम

अरेड़ : गामक लोक इतिहास **13**

सारांश 13

१. गामक लिखित आत्मबोधक अनिवार्यता 13

२. लोकगाथा, संस्मरण आ इतिहासक अलग-अलग प्रमाण 14

३. रचनाक बनावट : गामसँ व्यक्ति, फेर व्यक्तिसँ गाम 15

३.१. 'अरेड़ गामक सामान्य परिचय' : जीवित सूचीसँ उभरैत इतिहास 16

३.२. 'स्थान आ गामक नामक इतिहास, भूगोल आ भाव-भूगोल' : नामक बहुवचन 16

३.३. 'मिथिलाक गाम अनेक समस्या आ इतिहास' : गौरवक बीच असुविधाजनक प्रश्न 17

३.४. 'बच्चा झा प्रथम : लोककंठमे व्याप्त इतिहास गाथा' : पहलवानक महागाथा 18

३.५. 'बच्चा झा दोसर : अरेड़क मानवीय धरोहर' : बलसँ विद्यालय धरि 18

३.६. 'अरेड़क लोक इतिहास आ महादेव स्थान' : स्थानक भीतर चलैत परम्परा 19

३.७. 'कीर्तिपुरुष बुद्धिनाथ झा आ कीर्तिस्थल पुरवारी टोलक दुर्गास्थान' : दान, दन्तकथा आ संस्थागत स्मृति 19

३.८. 'दुर्गामंदिर आ पंडित रत्तेलाल झा वैदिक' : पाण्डुलिपिक विरासत आ अनुष्ठानक परिवर्तन 20

३.९. 'बाबा लक्ष्मण दास' : कुटी, पर्यावरण आ साधु-समाज 21

३.१०. 'सुदर्शन मिश्र बनाम सीताराम दास बनाम रामचन्द्र दास' : नाम बदलैत जीवनी 21

३.११. 'रामानन्द साहू : एक विलक्षण स्वतंत्रता सेनानी' : राजकीय सूचीसँ बाहरक स्मृति 22

३.१२. ‘अरेड़रत्न युगपुरुष विश्वम्भर झा’ : सामूहिक शोकक सौन्दर्य 22
३.१३. ‘यत्र जीव तत्र जाह : रघु बाबूक प्रसंग’ : हास्यक भीतर करुणा 23
३.१४. ‘एहन छलीह माय’ : घरेलू श्रमक सामाजिक इतिहास 23
३.१५. ‘लेटर बम’ : मल्लाह पहलवानक सामाजिक गरिमा 24
३.१६. ‘मायक अदम्य साहस’ : संकटमे निर्णायक कर्म 24
३.१७. ‘गाम समाज : गामक अस्मिता आ स्वरूपक निर्धारण—सभक योगदानक प्रजातन्त्र’ : आदर्श आ यथार्थ 25
४. ‘हमर गाम’क आख्यान-स्वर : अपनत्वक शक्ति आ सीमा 25
५. भूगोल, भावना आ राजकीय सीमा 26
६. खेती, हाट, ऊख आ श्रमक ग्राम्य अर्थव्यवस्था 27
७. शिक्षा, पुस्तकालय आ संस्थाक दीर्घजीवन 27
८. धर्मस्थानक बहुस्तरीय सामाजिक कार्य 28
९. जाति, समुदाय आ असमान दृश्यता 28
१०. माय, स्त्री आ लोकस्मृतिक पुनर्पाठ 29
११. गद्यक कारीगरी : दृश्य, संवाद, अतिशयोक्ति आ शोक 29
१२. मूल पाठक भीतरक तथ्यगत असंगति : सत्यापनक सुनिश्चित प्रश्न 30
१२.१. चीनी मिलमे नियुक्त फुटबॉल खेलाड़ीक संख्या 30
१२.२. राजकिशोर मिश्रक मैट्रिक परीक्षाक स्थान 31
१२.३. विश्वम्भर झाक निधनक वर्ष 31
१२.४. विश्वम्भर झाक चिकित्सकीय अवस्थाक अलग वर्णन 31
१२.५. अरेड़ नामक उत्पत्तिक भिन्न प्रस्ताव 31
१२.६. प्राचीनता, यात्रा आ न्यायिक घटनाक अप्रमाणित दावासभ 32
१३. बाहरी संस्थागत इतिहासक संग तुलना : पूसा 32
१४. पाण्डुलिपि, तस्वीर आ सांस्कृतिक अभिलेखागार 33
१५. आगामी अनुसन्धानक व्यावहारिक कार्य-विधि 33

१६. मैथिली भाषा, शैली आ परिमार्जनक सम्भावना 34

१७. संहत मूल्यांकन : स्थानीय स्मृतिक सार्वदेशिक महत्त्व 35

१८. सन्दर्भ-सूची 36

‘बुकमेनिया’ : पाठ, समाज आ समालोचनात्मक विवेक **37**

सारांश 37

१. प्रस्तावना : समीक्षा-संग्रहक असल प्रश्न 37

२. ग्रन्थक वस्तुगत परिचय आ रचनात्मक विन्यास 38

३. ‘लेखकीय’ : आलोचकक आत्मस्थितिक अर्थ 39

४. कविता-समीक्षाक पहिल अध्याय : ‘घसल अठन्नी’ आ मधुपक सार्वभौमिकता 40

५. ‘फुललोका’ : स्त्रीक स्वर, आधुनिक माध्यम आ प्रतिरोधक भाषा 41

६. ‘सबाक कुसुम कामिनी’ : राजनीतिक प्रतिवाद आ कविता-पंक्तिक निकटपाठ 42

७. ‘ककरा के दूस्त’ : प्रतिरोध, सामाजिक संरचना आ काव्यक खुला अर्थ 43

८. ‘कला’ : उपन्यासक ऐतिहासिक पुनर्पाठ आ समाजक कठोर व्यवस्था 43

९. ‘ककरा ले अरजब हे’ : परिवार, आधुनिकता आ पीढ़ीगत तनाव 44

१०. ‘भामती’ : प्रेम, ज्ञान आ अदृश्य स्त्री-श्रमक प्रश्न 45

११. ‘करार’ : आख्यान-विस्तार, राजनीतिक इतिहास आ सन्दर्भक जोखिम 46

१२. ‘हसीना मंजिल’ : विभाजन, स्मृति आ मनुष्यता 47

१३. ‘ठेठ परक मौलाएल गाछ’ : प्रवास, जड़ि आ पारिवारिक दूरी 47

१४. ‘सुन्दरी : निहुरि फूकू आगि’ : जीवन-वृत्त, रचनाधर्मिता आ समालोचनाक सीमा 48

१५. ‘दूषण पञ्जी’ : जाति, अभिलेख आ ज्ञानपरम्पराक विवाद 49

१६. बारह रचनामे चलैत साझा सूत्र 51

१७. स्त्रीक प्रतिरोध आ त्यागक महिमा : एक भीतरू तनाव 51

१८. जाति, पञ्जी आ सांस्कृतिक प्रतिनिधित्वक आलोचनात्मक अर्थ 52

१९. कथानक-सार आ आख्यानशास्त्रीय अध्ययनक बीच दूरी 53
२०. कविता-पाठमे अर्थ, ध्वनि आ रचनात्मक विराम 53
२१. ‘पाठकक प्रतिक्रिया’ : साहित्यिक सार्वजनिकता, न कि न्यायालयक अन्तिम निर्णय 54
२२. प्रमाण, उद्धरण आ इतिहाससम्बन्धी दावाक समीक्षा 55
२३. मैथिली गद्य, पदावली आ सम्पादकीय प्रश्न 55
२४. मैथिली साहित्येतिहासक व्यापक परिप्रेक्ष्यमे ग्रन्थक स्थान 56
२५. समेकित मूल्याङ्कन : उपलब्धि आ सीमा दूनूक हिसाब 57
२६. निष्कर्ष : पुस्तकप्रेमसँ प्रमाणपरक आलोचनाधरि 58
सन्दर्भ-सूची 58

मनसरबी 60

सार 60
प्रस्तावना : उपन्यासक मूल प्रश्न 60
१. पोथीक परिचय आ रचनात्मक आत्मस्वीकार 61
२. पन्द्रह भागक कथाविन्यास : प्रेमसँ प्रतिरोध आ अन्तिम प्रश्न धरि 62
३. ‘मनसरबी’ नाम : गामक सम्बोधनसँ आत्मपरिभाषा धरि 62
४. बुलकी : श्रम, देह आ अपन निर्णयक अधिकार 63
५. बाँसक मचान आ शोषणक देह-राजनीति 64
६. राघब–बुलकी : स्नेहक सत्य आ मर्यादाक असमर्थता 65
७. पाजेब, सहायता अस्वीकार आ अन्तक असाधारण गरिमा 65
८. नन्द–नैना : प्रतिशोधक षड्यन्त्रसँ प्रेमक मानवीकरण 66
९. समगोत्र, धन-सत्ता आ नैनाक वैवाहिक विपत्ति 67
१०. सौदामिनी : गृहस्थी भीतरक विवेक, शोक आ पुनर्निर्माण 68
११. राघबक माय : प्रतिशोधक विपरीत करुणाक व्यवहार 68

१२. महानन्दक सत्ता : सूदक बही, बेगार आ भयक जाल 69
१३. जाति आ वर्ग : परस्पर जुड़ल मुदा एक नहि 69
१४. सामूहिक प्रतिरोध आ ओकर नैतिक दोधार 70
१५. लखरू खलीफा आ रामबाबू : शक्ति, अपराध आ आत्मभय 71
१६. कर्मफल-विधान आ बुलकीक अपवाद 72
१७. लोकसंस्कृति : गीत, फकड़ा आ नैतिक स्मृति 72
१८. प्रकृति : पृष्ठभूमि नहि, अर्थ रचनिहार क्रियाशील परिवेश 73
१९. आख्यानकर्ता : सर्वज्ञ दृष्टि, पात्रक भीतरक स्वर आ टिप्पणी 74
२०. संवाद, बोली आ भाषिक रूप-संरचना 74
२१. स्त्री-पात्रक दृष्टि बनाम स्त्री-देहपर कथनक दृष्टि 75
२२. धार्मिक बिम्ब, करुणा आ सामाजिक न्याय 76
२३. समकालीन पाठकीय प्रतिक्रिया आ आलोचनात्मक मत 76
२४. मैथिली उपन्यास-परम्पराक संग विषयगत संवाद 77
२५. कलात्मक उपलब्धि आ विवेकपूर्ण आपत्ति 77
२६. निष्कर्ष : कर्मफलसँ आगाँ, न्यायविहीन जीवनक साक्ष्य 78
सन्दर्भ-सूची 79

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना : लोकसृजन, यायावरी आ साहित्यिक विवेक **80**

ग्रन्थपरिचय आ आलोचनात्मक प्रस्तावना 80
१. संकलनक भीतरी एकता : स्थान बदलैत अछि, प्रश्न नहि 81
२. मिथिला चित्रकला : ‘समानान्तर साक्षरता’क मौलिक विचार 82
३. हॉफलोंग : कार्यशाला, संवाद आ जनजातीय स्त्रीक सक्रियता 83
४. बृन्दावन : भक्तिक भावभूमि आ आधुनिक नगरक असुविधा 85
५. लोअर दिवांग घाटी : शीर्षक आ वास्तविक कथा-विस्तारक अन्तर 86

६. मलिक भाय : संवादक शक्ति, विचारक सीमाबोध 87
७. नन्दा-राजजात : मौखिक परम्परा आ स्त्री-देवीक सांस्कृतिक भूगोल 88
८. संगाईप्राऊ : गामक सूक्ष्म इतिहास आ पूर्वज-स्मरण 88
९. 'गामक जिनगी' : कथाक माध्यमसँ ग्रामीण समाजक पाठ 89
१०. 'जीवन संघर्ष' : बँसपुराक माध्यमसँ मिथिलाक सामूहिक चित्र 91
११. कथात्मक शिल्प : 'हम'क अनेक रूप 92
१२. मैथिली भाषाक स्वरूप : लोकबोली, अन्तरभाषिकता आ सम्पादन 92
१३. स्त्री, जाति आ सृजनाधिकार : पुस्तकक अन्तरपाठीय सूत्र 93
१४. पर्यावरण, पलायन आ जीविकाक साझा कथानक 94
१५. प्रमाण, पक्षधरता आ शोध-पद्धतिक सीमा 94
१६. बाहरी शोधसँ प्राप्त पुष्टि आ जाँचबाक शेष प्रश्न 95
१७. साहित्येतिहासमे स्थान : लोकज्ञानक विस्तार, आलोचनाक अपूर्ण परियोजना 96
निष्कर्ष : सहेजब मात्र नहि, प्रश्न करैत सहेजब 96
सन्दर्भ-सूची 97
प्राथमिक ग्रन्थ 97
शोधलेख आ आधिकारिक अभिलेख 97

लोकक जीवन, स्त्रीक स्वर आ प्रमाणक कसौटी **98**
पाठक परिचय आ समीक्षाक आधार 98
संग्रहक स्वरूप आ लेखकक रचनात्मक स्थिति 99
अनेक विधाक संकलन, एक शोध-दृष्टिक विस्तार 99
लेखकक आत्मस्थितिः मैथिलीमे लिखबाक संकोचसँ सार्वजनिक हस्तक्षेप धरि 99
कथासाहित्यक समाज, स्मृति आ आख्यान 100
'पण्डिताइन': एक स्त्रीक अनुपस्थितिमे उपस्थित जीवन 100

‘बुरिराज’: विद्वत्ताक आडम्बर आ संस्थागत अवसरवाद 101
‘चन्दा’: खेलक मैदानसँ सम्पत्तिक हिंसा धरि 101
‘प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री’: सहानुभूति, जनजातीय परिवेश आ भाषिक पूर्वग्रह 102
‘सखी कुन्ती’ आ ‘पुरुषक नहि विश्वासे’: स्त्रीजीवनक दू अलग बिम्ब 102
‘परिस्थिति लेखिका’: कथामे कथा आ स्त्रीक रचनात्मक आत्मरक्षा 103
लोकगीत, स्त्री-अनुभव आ अनुष्ठान 103
फकड़ा: लोकक ‘सार्वजनिक स्थान’मे मैथिलानीक अनुभव 103
सीता: श्रद्धाक भीतर प्रतिरोधक लोकस्वर 104
मधुश्रावणी: लोक-वेदक संयोग आ शरीरपर विधिक प्रश्न 105
मैथिलानीपर विमर्शक अधिकारी के? प्रतिनिधित्व आ उत्तरदायित्व 105
जोगगीत: प्रेम, यौन-संकेत आ तन्त्रक सांस्कृतिक भूमिका 106
सुग्गा आ कौआ: लोकगीतक पक्षी नहि, सम्बन्धक दूत 106
‘मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास’: खाद्य-सूचीसँ सामाजिक व्यवस्था धरि 107
मौखिक आख्यानक स्मृतिः नानी, भरथरी आ गोपीचन्द 107
यायावरी, सांस्कृतिक भूगोल आ प्रत्यक्ष अवलोकन 108
यात्रा-वृत्तान्त: भूगोल नहि, समाजसँ भेटक कथा 108
‘मलिक भाय केर फुटपाथी चिंतन’: वार्तालापक साहित्यिक उपयोग 108
लोककला, सामाजिक पुनर्विचार आ आलोचना 109
मिथिला चित्रकला आ सांझी: स्त्रीक चित्रित भाषा 109
सामाजिक परम्परापर आन्तरिक आपत्तिः बलिप्रदान आ तमाकू 109
आलोचक कैलाश: पोथी पढ़बाक सामाजिक मानक 110
लोकइतिहासक लेख: विश्वास, स्थलनाम आ ऐतिहासिक प्रमाण 111
कविता, आख्यान-शिल्प आ भाषिक विश्लेषण 112
‘गामक कचोट’: स्मृतिक सूचीसँ आधुनिक जीवनक विडम्बना 112

कथा-शिल्पः राघवक पुनरावृत्ति, संवादक बहुलता आ कालक घेरा 112

भाषाः बोलचालक ऊर्जा, तद्भवक जीवन आ सम्पादकीय असमानता 113

मानवशास्त्रीय पद्धतिक कसौटीः प्रेक्षण आ प्रमाणक दूरी 113

स्रोत-श्रेयक आलोचनात्मक परीक्षा 114

निष्कर्ष 114

सन्दर्भ-सूची 115

अरेड़ : गामक लोक इतिहास

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक कृतिक विस्तृत साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययन

सारांश

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक अरेड़ : गामक लोक इतिहास (२०२५) मिथिलाक एक गामक स्थान-स्मृति, व्यक्तिचरित, अखाड़ा, हाट, धार्मिक स्थल, संस्थागत प्रयास आ पारिवारिक अनुभवकेँ मैथिली गद्यक रूपमे संग्रहीत करैत अछि। एहि अध्ययनमे सत्रहो अध्यायक समीप-पाठ कऽ लोकगाथा आ अभिलेखित इतिहासक प्रमाणगत अन्तर, भाव-भूगोलक अवधारणा, सामाजिक सम्बन्धक चित्रण आ संस्मरणात्मक आख्यानक कलात्मकता विवेचित अछि। रेशमा मौसी, लेटर बम आ लेखकक मायसँ जुड़ल प्रसंग साधारण लोकक गरिमाकेँ साहित्यिक केन्द्रमे अनैत अछि; बच्चा झाक वीरगाथा सामुदायिक कल्पनाक रचनात्मक रूप उद्घाटित करैत अछि। वर्ष, संख्या आ चिकित्सकीय विवरणक आन्तरिक अन्तर तथा पूसा संस्थानक कालक्रमक बाह्य तुलनासँ स्रोत-समीक्षाक आवश्यकता स्पष्ट होइत अछि। कृतिक महत्त्व गामक अन्तिम, प्रमाणित इतिहास होयबामे नहि, वरन् स्थानीय स्मृतिक लिखित संरक्षण आ भविष्यक अनुसन्धानक प्रेरणामे अछि।

बीजशब्द : मिथिला, अरेड़, लोक-इतिहास, लोकस्मृति, भाव-भूगोल, मैथिली गद्य, स्रोत-समीक्षा।

१. गामक लिखित आत्मबोधक अनिवार्यता

कोनो गाम अपन वर्तमानमे जतेक देखाइत अछि, ओतेकहि अपन लोकक स्मृतिमे सेहो जीवित रहैत अछि। गाछी उजड़ैत अछि, पोखरि भराइत अछि, अखाड़ा बन्द होइत अछि, परिवार आन ठाम बसि जाइत अछि; मुदा गामक ‘पूर्व रूप’ लोकक बोली, नाम, संस्मरण आ प्रसंगमे जिऐत रहैत अछि। एहि विलुप्ति आ निरन्तरताक बीच डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक ‘अरेड़ : गामक लोक इतिहास’ अपन प्रस्थान-बिन्दु पबैत अछि। एकर उद्देश्य कोनो राजवंशीय कालगणना तैयार करब नहि, वरन् गामक लोकजीवनसँ बिखरल स्मृतिकेँ उठाकऽ लिखित सार्वजनिक धरोहर बनायब अछि। पोथी एहि कारण महत्त्वपूर्ण अछि जे लेखक प्रसिद्ध व्यक्तिक चरितक संग एहन प्रसंग सेहो समेटैत छथि जे प्रायः औपचारिक इतिहासक सीमाक बाहर रहि

जाइत अछि: हाटक मिठाइ-दोकान, मुस्लिम तरकारी बेचयवाली मौसीक अपनत्व, कुश्तीक अखाड़ा, मातृसाहस, मल्लाह पहलवानक सेवाभाव आ सार्वजनिक चौपाड़िक जीवन।

लेखकीय वक्तव्यसँ स्पष्ट होइत अछि जे एहि परियोजनाक प्रेरणा लेखकक अपन गामसँ दूर रहबाक अनुभवमे निहित अछि। अनेक शिक्षास्थल आ स्थानक यात्राक बाद गाम चेतनामे आओर तीव्रतासँ उपस्थित भेल। ग्रामीण समाजक विषयमे परियोजना-काज, लोक-अध्ययनक प्रशिक्षण आ हितनाथ झाक स्थानीय प्रसंगक प्रकाशनसँ लेखक लेल एकटा निर्णय निकलैत अछि: लोकक कथा लोकक भाषामे लिखल जाय। ‘हमर गाम’ कहैत ओ अपन दृष्टिक कोण पहिनहि स्पष्ट करैत छथि; ताहि कारण पोथीक आत्मीयता ओकर बल अछि, मुदा एहि आत्मीयतासँ आलोचनात्मक दूरी कम होयबाक जोखिम सेहो बनैत अछि।[1]

ई पोथीकेँ सम्पूर्ण दस्तावेजित ‘अरेड़क इतिहास’ मानि लेब ओकर घोषित स्वरूपक संग न्याय नहि होयत। लेखक स्वयं एहि संकलनकेँ पहिल खेप आ आगाँक लेखनक आरम्भ मानैत छथि। ताहि हिसाबे कृतिक स्थिति एकटा विकसित होइत लोक-इतिहासक प्रारम्भिक अभिलेख, संस्मरण-गद्यक संचय आ आगामी क्षेत्र-अनुसन्धानक प्रस्तावक बीच अछि। आलोचनाक वास्तविक प्रश्न ई अछि जे लेखक लोकबोलीक विविध प्रमाण-स्तरकेँ कोना सम्हारैत छथि, हुनक गद्य स्मृतिकेँ कोना दृश्य बनबैत अछि आ पाठक भीतरक असंगतिक समाधान लेल कोन विधि आवश्यक अछि।

२. लोकगाथा, संस्मरण आ इतिहासक अलग-अलग प्रमाण

एहि पोथीमे चारि प्रमुख प्रकारक सामग्री एक संग अछि। पहिल, लेखकक स्वानुभव—बाल्यकाल, माय, सम्बन्धी, शिक्षा आ गामक प्रत्यक्ष दृश्य। दोसर, परिजन अथवा वृद्धजनसँ सुनल प्रसंग—जकर कथक कथियो नामित छथि, कथियो नहि। तेसर, अनेक पीढ़ीसँ चलैत दन्तकथा—जहिना बच्चा झाक अतिमानवीय बल अथवा कखनो खाली नहि होमयवाली धानक भकारी। चारिम, विद्यालय, मंदिर, जमीन, चीनी मिल अथवा स्वतन्त्रता-आन्दोलनसँ जुड़ल एहन कथन जकर अभिलेखीय जाँच सम्भव अछि। एहि अलग सामग्रीकेँ एके प्रकारक प्रमाण बनायब लोक-इतिहासक मूल पद्धतिगत चूक होयत।

लोकगाथाक साहित्यिक सत्य आ घटनाक अभिलेखीय सत्य समान नहि। ‘फलाँ पहलवान अद्भुत बलशाली छलाह’—ई सामुदायिक आदरक कथात्मक सत्य भऽ सकैत अछि। मुदा ‘फलाँ व्यक्तिक फेकल ढेपसँ अंग्रेजक मृत्यु भेल आ मुकदमा चलल’—ई जाँच-योग्य विशिष्ट दावा अछि। ताहि लेल थाना-पञ्जी, न्यायालयक कागज, औपनिवेशिक अभिलेख अथवा स्वतन्त्र साक्षी चाही। एहिसँ लोकगाथाक गरिमा कम

1 मिश्र, कैलाश कुमार, अरेड़ : गामक लोक इतिहास, प्रथम भाग (नव दिल्ली : पेन टु प्रिन्ट पब्लिशिंग एलएलपी, २०२५), “लेखकीय”।

नहि होइत; उलटे सामाजिक स्मृतिक अर्थ आ घटनाक ऐतिहासिक स्थिति दुनू अलग-अलग स्पष्ट होइत अछि।

ओरल हिस्ट्री एसोसिएशनक मूल सिद्धान्त अभिलेखित मौखिक साक्षात्कार, कथक-साक्षात्कारकर्ताक परस्पर सम्बन्ध, स्मृतिक समयसापेक्षता, सहमति आ संरक्षणक महत्त्व बतबैत अछि। डॉ. मिश्रक पोथी मुख्यतः लोककंठक स्मृति आ लेखक-रचित पुनर्कथन अछि; एकरा मूल्यवान आख्यान-संकलन कहब उचित अछि, मुदा पद्धतिबद्ध साक्षात्कार-संग्रह मानबाक लेल कथक, तिथि, स्थान, प्रश्नोत्तर आ मूल ध्वनि-अभिलेखक विवरण आवश्यक अछि। ई भेद दोषारोपण नहि, भविष्यक शोधक सम्भावनाक पहचान अछि।[2]

यूनेस्कोक २००३क अभौतिक सांस्कृतिक धरोहरसम्बन्धी अभिसमयक धारा २ मौखिक परम्परा, सामाजिक रीति, अनुष्ठान, प्रकृतिसँ सम्बन्धित ज्ञान आ पारम्परिक शिल्पकेँ सांस्कृतिक धरोहरक क्षेत्रमे रखैत अछि। एहि अन्तरराष्ट्रीय परिभाषाक प्रकाशमे अरेड़क अखाड़ा, हाट, पूजा-विधि आ लोकसंस्मरण धरोहर-अध्ययनक विषय भऽ सकैत अछि। तथापि सांस्कृतिक धरोहर होयब अपने-आपमे कोनो ऐतिहासिक दावाक अभिलेखीय प्रमाणीकरण नहि।[3]

३. रचनाक बनावट : गामसँ व्यक्ति, फेर व्यक्तिसँ गाम

मुख्य पाठ सत्रह अध्यायमे विन्यस्त अछि। पहिल तीन अध्याय भूगोल, नाम, अर्थव्यवस्था आ सामाजिक समस्याक पृष्ठभूमि दैत अछि। तकर बाद दू बच्चा झा, महादेवस्थान, बुद्धिनाथ झा, रत्तेलाल झा, साधुसन्त, स्वतन्त्रता-आन्दोलन आ विश्वम्भर झाक प्रसंगसँ सामूहिक स्मृति विशिष्ट मानव-आकृतिमे उतरत अछि। अन्तिम पाँच अध्यायमे रघु बाबूक हास्य-करुण संस्मरण, मायक जीवनी, लेटर बमक स्वाभिमानी चरित्र, मायक साहस आ गामक साझा जीवन पर विचार आयल अछि। ई गति देखबैत अछि जे गाम मानचित्र अथवा बस्ती मात्र नहि; मनुष्यक सम्बन्ध, कर्म आ संस्थाक जीवित जगत् अछि।[4]

रचनाक क्रम शुद्ध कालानुक्रमिक नहि। प्राचीनताक अनुमान, बीसम शताब्दीक गतिविधि, बाल्यक स्मरण आ धार्मिक दन्तकथा परस्पर आगाँ-पाछाँ अबैत अछि। एहि असमान काल-गतिक साहित्यिक लाभ अछि: अनेक युग एकहि स्मृतिक अखाड़ामे देखाइत अछि। मुदा ऐतिहासिक पाठक लेल पृथक् कालक्रम, प्रत्येक

2 Oral History Association, “OHA Core Principles,” विशेषतः मौखिक इतिहासक स्वरूप आ मूल सिद्धान्त, https://oralhistory.org/oha-core-principles/ (अवलोकन : १६ नवम्बर २०२६)।

3 यूनेस्को, Convention for the Safeguarding of the Intangible Cultural Heritage (२००३), अनुच्छेद २, https://www.unesco.org/en/legal-affairs/convention-safeguarding-intangible-cultural-heritage (अवलोकन : १६ नवम्बर २०२६)।

4 मिश्र, अरेड़ : गामक लोक इतिहास, विषय-सूची आ सत्रहो अध्याय।

व्यक्तिक जीवन-वर्ष, घटना-सम्बन्धी साक्ष्य आ स्रोत-सूचीक आवश्यकता रहैत अछि। ई पाठ कथा-सम्पदा सेहो अछि आ इतिहासक स्रोत-सामग्री सेहो; दुनू अर्थक एकरूपता नहि, अन्तरक सावधानी आवश्यक अछि।

३.१. 'अरेड़ गामक सामान्य परिचय' : जीवित सूचीसँ उभरैत इतिहास

पहिल अध्याय गामक समाज-मानचित्र अछि। अंडी-वृक्षसँ नामक सम्भावित सम्बन्ध, नेपाल दिस व्यापारिक मार्ग, रैयाम चीनी मिल, ऊखक ढुलाई, हाट, विद्यालय, खेल, कुश्ती, पशुपालन आ जातीय बहुलताक वर्णन एक ठाम भेटैत अछि। विशेष रूपसँ मिठाइक दोकान, चूड़ा-दही, जलेबी आ व्यापारीक चर्चित नाम ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक ओ सूक्ष्म स्तर देखबैत अछि जे आँकड़ाक सारणीमात्रसँ उपलब्ध नहि होयत। वस्तुक स्वाद, प्रतिष्ठा आ पारस्परिक परिचय एतय आर्थिक सम्बन्धक अङ्ग बनैत अछि।

एहि अध्यायक अत्यन्त मार्मिक अंश रेशमा मौसीक प्रसंग अछि। मुस्लिम कुजरा समुदायसँ आयल तरकारी विक्रेत्रीकेँ लेखकक माय अपन बहिन मानैत छथि आ बालकसभकेँ हुनका 'मौसी' कहबाक निर्देश दैत छथि। एहि छोट दृश्यकेँ केवल साम्प्रदायिक सद्भावक घोषणामे सीमित नहि करबाक चाही। एतय नाता जन्मसँ नहि, व्यवहारसँ बनैत अछि; बजारक लेनदेन घरेलू आत्मीयतामे प्रवेश करैत अछि; स्त्री अपन सम्बन्धक स्वतन्त्र स्थापिका बनैत छथि। एहि गद्यांशक दृश्यात्मकता औपचारिक प्रशंसासँ अधिक प्रभावकारी अछि।[5]

आरम्भमे बज्रयानी भिक्षु, मगधसँ नेपालक पुरान मार्ग, रामायण-महाभारतसँ सीधा जुड़ाव आ कालिदासक एहि बाटसँ यात्राक सम्भावना व्यक्त भेल अछि। एहि दावाक ठोस प्राथमिक स्रोत उद्धृत नहि अछि। परिकल्पनाक रूपमे चर्चा उचित अछि; 'सिद्ध इतिहास'क रूपमे नहि। पहिल अध्यायमे पन्द्रह फुटबॉल खेलाड़ीकेँ मिलमे रोजगार भेटबाक बात अछि, मुदा चौठ अध्यायमे एहि संख्याक भिन्न पाठ भेटैत अछि।[6]

३.२. 'स्थान आ गामक नामक इतिहास, भूगोल आ भाव-भूगोल' : नामक बहुवचन

दोसर अध्याय कृतिक विचारात्मक मेरुदण्ड अछि। गामक नाम एतय मात्र भौगोलिक पहचान नहि, स्मृति आ प्रतिष्ठाक वाहक अछि। 'अरेड़', संस्कृताभिमुख 'अरेरू' आ प्रशासनिक-अंग्रेजी 'अनरेर'क रूपान्तर लेखक ध्यानमे लबैत छथि। सरकारी लिखतमे नाम बदललापर स्थानीय लोक ओकरा कोना अनुभव करैत अछि—ई महत्त्वपूर्ण साहित्यिक-सामाजिक प्रश्न अछि।

5 मिश्र, अरेड़ : गामक लोक इतिहास, अध्याय १, "अरेड़ गामक सामान्य परिचय"।

6 ततैव, अध्याय १ आ ४; एहि दू अध्यायक संख्यात्मक वृत्तान्तक आपसी तुलना कयल गेल अछि।

'भाव-भूगोल'क मूल अर्थ एतय ई अछि जे राजकीय परिसीमन आ सांस्कृतिक अपनत्वक सीमा सदिखन एक नहि होइत। पुरवारी टोलक किछु परिवार उत्तर फेरौंजाक प्रशासनिक सीमान्तर्गत गेलाक बादो अपनाकेँ बृहत् अरेड़क अङ्ग मानैत छथि। भोजभात, देवस्थान, साझा इतिहास आ नातेदारी एहि मान्यताकेँ पोसैत अछि। आधुनिक प्रशासन आ पारम्परिक सांस्कृतिक भूगोलक दोहरापन स्थानीय अध्ययनक सशक्त प्रारम्भ बनि सकैत अछि।[7]

मुदा स्थाननामक व्युत्पत्ति लेल ध्वनि-विकास, पुरान नक्शा, राजस्व अभिलेख आ प्राचीन लिखित उल्लेखक तुलना जरूरी अछि। एके ध्वनि-जैसन रूप भेटलासँ उद्गम सिद्ध नहि होइत। लेखक उठबैत छथि अनुसन्धानीय प्रश्न; ओकरा बिना प्रमाण निर्णायक उत्तर मानल नहि जाय।

३.३. 'मिथिलाक गाम अनेक समस्या आ इतिहास' : गौरवक बीच असुविधाजनक प्रश्न

तेसर अध्याय गामक सुखद स्मृतिक बीच असहज सामाजिक इतिहास आनि राखैत अछि। बालविवाह, विधवा-जीवन, स्त्रीक अस्वाधीनता, नील-ऊखक अर्थव्यवस्था, चीनी मिलक उत्थान-पतन आ पूसा कृषि संस्थानक प्रसंगसँ लेखक स्पष्ट करैत छथि जे गामकेँ केवल 'धरोहर' कहि महिमामण्डित नहि कयल जा सकैत। बालिकाक जीवन, श्रमक वितरण आ संस्थागत शक्तिक प्रवेश सामाजिक इतिहासक महत्त्वपूर्ण आयाम अछि।[8]

एहि अध्यायक बल ई अछि जे पितृसत्तात्मक रूढ़िकेँ गामक गौरवक आड़मे नहि नुकाओल गेल अछि। मुदा बालविवाहक उद्गमकेँ कोनो एक बाहरी धार्मिक-राजनीतिक शक्तिक संग जोड़बाक व्यापक प्रस्ताव पर्याप्त प्रमाणबिना ऐतिहासिक निष्कर्ष नहि बनि सकैत। सम्पत्ति, उत्तराधिकार, धर्मग्रन्थीय विचार, वर्ग, विवाहक सामाजिक नियम आ स्त्री-श्रमक सम्बन्धमे पृथक् साक्ष्य चाही।

पूसा संस्थानक स्थापना-कालक्रमक उल्लेख आधिकारिक संस्थागत इतिहाससँ मेल नहि खाइत। एहि कारण एहि अनुच्छेदक क्षेत्रीय प्रश्न महत्त्वपूर्ण रहितो वर्ष आ कारणक पुनःजाँच अनिवार्य अछि। विस्तृत जाँच एहि समीक्षाक पृथक् खण्डमे देल अछि।

7 मिश्र, अरेड़ : गामक लोक इतिहास, "लेखकीय" आ अध्याय २, "स्थान आ गामक नामक इतिहास, भूगोल आ भाव-भूगोल"।

8 ततैव, अध्याय ३, "मिथिलाक गाम अनेक समस्या आ इतिहास"।

३.४. 'बच्चा झा प्रथम : लोककंठमे व्याप्त इतिहास गाथा' : पहलवानक महागाथा

पहिल बच्चा झाक कथामे गद्य वीरगाथाक शैली ग्रहण करैत अछि। अखाड़ाक माटि, असाधारण देहबलक लोकवर्णन, नेपालक पहलवानक संग मुकाबला, दरभंगा महाराजक प्रशंसा, सौराठ सभागाछीमे अंग्रेज अधिकारीक संग टकराहट आ अनन्त पराक्रमक अनुश्रुति—एहि सभसँ सामुदायिक नायकक आभा बनैत अछि। कथानक क्रमशः अपेक्षा, चुनौती, विजय आ नैतिक प्रतिष्ठाक सोपान चढ़ैत अछि। समाज अपन सामूहिक साहसकेँ एक प्रतीकात्मक देहमे रूपायित करैत अछि।[9]

एहि गाथाक साहित्यिक सत्य ओकर जीवित लोककथा-स्वरूपमे अछि। अंग्रेजक देह पर फेकल ढेपसँ मृत्यु आ तकर बाद न्यायिक वृत्तान्त जँ विशिष्ट ऐतिहासिक घटना मानल जाय तँ स्वतन्त्र दस्तावेज चाही। पुस्तकमे एहन प्रमाण प्रस्तुत नहि अछि। अतः बच्चा झाक साहसक लोकप्रतिमा इतिहासक अध्ययनक वस्तु अछि; मुदा हिंसक घटनाक वास्तविकता पर निर्णय स्थगित रहबाक चाही।

वीरता एतय केवल शरीर-बल नहि, स्थानीय मर्यादाक रक्षा करबाक दृढ़ता बनैत अछि। तथापि नायकक आलोचक, प्रतिपक्षी अथवा समकालीन स्त्रीक स्वर सुनाइत नहि। लोक-इतिहासक बहुवचन तैयार करबाक लेल एहि मौन पर सेहो शोध करब आवश्यक अछि।

३.५. 'बच्चा झा दोसर : अरेड़क मानवीय धरोहर' : बलसँ विद्यालय धरि

दोसरा बच्चा झाक चरित पहिलक वीरगाथासँ भिन्न अछि। एतय खेती, जमीन, पारिवारिक उत्तरदायित्व, दान आ विद्यालयक निर्माणक चर्चा प्रमुख अछि। लेखक लगभग १८७०–७५क आसपास जन्मक अनुमान दैत छथि; जन्मक अभिलेख नहि प्रस्तुत करैत। बच्चा झा जनता हाई स्कूलक प्रसंग, जमीनक दान आ आर्थिक सहयोगसँ मानवीय पूँजीक निर्माणक दृश्य बनैत अछि।[10]

'पहलवान'क सामाजिक प्रतिष्ठा एतय शारीरिक शक्तिसँ आगाँ बढ़ि विद्यालय बनबयवाला लोक-निर्माताक रूप धरैत अछि। भूमि-दानपत्र, विद्यालयक पञ्जी, प्रबन्धसमितिक पुरान अभिलेख आ दाताक उत्तराधिकारीसभक साक्ष्य मिललासँ ई चरित ग्रामीण शिक्षा-इतिहासक ठोस अध्याय बनि सकैत अछि। प्रमाणक माँग सामुदायिक गौरवक विरोध नहि, ओकर स्थायित्वक पक्षमे अछि।

9 ततैव, अध्याय ४, "बच्चा झा प्रथम : लोककंठमे व्याप्त इतिहास गाथा"।

10 ततैव, अध्याय ५, "बच्चा झा दोसर : अरेड़क मानवीय धरोहर"।

एहि अध्यायमे ‘अरेड़’ नामकेँ अंडी-वृक्षक अतिरिक्त गामक लोकक ‘अड़ियल’ स्वभावसँ जोड़बाक दोसर व्युत्पत्ति उपस्थित अछि; दुनूमे सँ कोनो एक निर्णायक नहि मानल जाय। विश्वम्भर झाक निधन-वर्ष आ विद्यार्थी राजकिशोर मिश्रक परीक्षा-स्थानक उल्लेख अन्यत्रक कथनसँ टकराइत अछि, जकर जाँच अगिला खण्डमे कयल गेल अछि।

३.६. ‘अरेड़क लोक इतिहास आ महादेव स्थान’ : स्थानक भीतर चलैत परम्परा

छठम अध्याय पोथीक पद्धतिगत आत्मवक्तव्यक निकट अछि। लेखक अरेड़केँ जन्मभूमि, शोधक क्षेत्र आ प्रशिक्षण-स्थल एक संग मानैत छथि। ‘भीतरक जानकार’ आ ‘प्रश्न करयवाला अनुसन्धाता’ एके व्यक्तिक भीतर उपस्थित छथि। एहि स्थितिसँ पुरखाक कथा, पूजा-प्रथा, गामक आपसी सम्बन्ध आ स्थानीय लोकभाषा धरि दुर्लभ पहुँच भेटैत अछि। मुदा नजदीकीक कारण लेखक प्रत्येक परम्पराक परीक्षणसँ मुक्त नहि भऽ जाइत छथि। ‘हमरा कहल गेल’ आ ‘हम देखलहुँ’क अन्तर स्पष्ट राखब एतय आओर महत्त्वपूर्ण अछि।[11]

महादेवस्थानक कथा केवल देवमूर्ति-प्रतिष्ठाक इतिहास नहि। ओकरा लग शिक्षा, संस्कृत-अध्ययन, सामुदायिक श्रम, श्रद्धा, दान आ लोकक आवागमन जुड़ल अछि। धार्मिक स्थल संस्था कोना बनैत अछि—एहि प्रश्नक उत्तर परिवारक स्मृतिसँ सामूहिक प्रबन्ध धरि बहि जाइत अछि। लेखक अन्य क्षेत्रक पाण्डुलिपि-संरक्षणक तुलनात्मक प्रसंग सेहो आनैत छथि, मुदा ओहि तुलनाक विशिष्ट स्रोत देल जाय तँ ओकर तर्क अधिक मजबूत होयत।

ई अध्याय स्मृति-संरक्षणक मूल चेतावनी दैत अछि: जीवित कथक रहला धरि कथाक पुनःश्रवण आ पुष्टि सम्भव अछि; तकर बाद एक भाग सदा लेल लुप्त भऽ सकैत अछि। एहि प्रेरणासँ पूर्ण पोथीक लोक-अभिलेखनक परियोजना अर्थ ग्रहण करैत अछि।

३.७. ‘कीर्तिपुरुष बुद्धिनाथ झा आ कीर्तिस्थल पुरवारी टोलक दुर्गास्थान’ : दान, दन्तकथा आ संस्थागत स्मृति

सातम अध्यायमे बुद्धिनाथ झाक जन्मसँ सम्बन्धित दू भिन्न दन्तकथा भेटैत अछि। पारिवारिक सन्तान-आकांक्षा, बैद्यनाथ-आराधना, विपत्ति आ आशिषक कथा एक पुरुषक जन्मकेँ धार्मिक अर्थ दैत अछि। एके

11 ततैव, अध्याय ६, “अरेड़क लोक इतिहास आ महादेव स्थान”।

प्रसंगक दू रूपक सहअस्तित्व स्वयं मूल्यवान तथ्य अछि: लोकस्मृति अपरिवर्तनीय पञ्जी नहि, बहु-कथकीय स्मरणक प्रक्रिया अछि। भविष्यक अनुसन्धानमे प्रत्येक रूपक कथकक नाम, निवास, वय आ कथन-तिथि राखल जाय तँ लोककथाक रूपान्तर सम्भवतः बुझल जा सकत।[12]

‘लक्ष्मीनिया-बखारी’मे धान कखनो समाप्त नहि होयबाक कथा चमत्कारी समृद्धिक प्रतीक अछि। एकरा प्रत्यक्ष प्रमाणित कृषि-घटना मानबाक आधार पोथीमे नहि अछि। साहित्यिक रूपमे एहि कथाक अर्थ दानशील व्यक्तिक कल्पित असीमता, सामुदायिक अपेक्षा आ विपुल उदारतामे अछि। एकर बरक्स पुरवारी टोलक दुर्गास्थान, पोखरि, उत्सव आ पूजा-प्रबन्ध गामक सार्वजनिक इतिहासक तुलनात्मक रूपसँ जाँच-योग्य हिस्सा अछि।

लेखक बुद्धिनाथक परोपकारकेँ अपन जाति धरि सीमित नहि रखैत छथि। अमात समुदाय लेल संसाधन अथवा चरागाहक संकेत सामाजिक वितरणक अनुसन्धानीय प्रसंग अछि। मुदा दाताक वंशक गाथासँ स्वतन्त्र भऽ लाभ पाबयवाला समुदायसँ साक्षात्कार कयल जाय। पुजारी आ पुरोहितक भेद तथा परम्परा निभाबयवाला व्यक्तिसभक क्रम संस्था-इतिहासक दुर्लभ सूक्ष्मता प्रदान करैत अछि।

३.८. ‘दुर्गामंदिर आ पंडित रत्तेलाल झा वैदिक’ : पाण्डुलिपिक विरासत आ अनुष्ठानक परिवर्तन

आठम अध्याय पंडित रत्तेलाल झा ‘वैदिक’क संस्कृत-पाण्डित्य, पूजा-विधि, पाण्डुलिपि आ वंशगत परम्पराक विवरण समेटैत अछि। लेखकक अनुसार अनेक ग्रन्थक रचना भेल आ सोलह पाण्डुलिपिक उपलब्धि सम्बन्धी जानकारी अछि। जँ पाण्डुलिपिसभ सुरक्षित अछि तँ ओकर विषय, लिपि, कागज, पृष्ठ-संख्या, स्वामित्व, अपूर्णता आ प्रतिलिपि-सम्बन्धक सूचीकरण कयल जा सकैत अछि। मात्र ‘महान पंडित’क विशेषणसँ बेसी ठोस काज मूल पाठक वैज्ञानिक सम्पादन होयत।[13]

पूजा-पद्धतिमे परिवर्तनक कथा विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। मूल विधिमे पशुबलिक अभाव आ बादक पद्धतिमे बलि-सम्बन्धी प्रथाक प्रवेश देखबैत अछि जे धर्मस्थलक परम्परा स्थिर नहि, समाजक निर्णय आ मतभेदसँ बदलैत रहैत अछि। कोन विधि पुरान, कोन संशोधित, निर्णय के लेने छलाह, अलग समुदाय एकरा कोना बुझैत छल—एहि प्रश्नसभक संग ठोस धर्म-सामाजिकी बनि सकैत अछि।

12 ततैव, अध्याय ७, “कीर्तिपुरुष बुद्धिनाथ झा आ कीर्तिस्थल पुरवारी टोलक दुर्गास्थान”।

13 ततैव, अध्याय ८, “दुर्गामंदिर आ पंडित रत्तेलाल झा वैदिक”।

लेखक जनकपुरक जानकी-मन्दिरसँ सम्बन्धित एक दावाक पुष्टि नहि भऽ सकबाक बात स्वीकार करैत छथि। ई स्रोत-सजगताक प्रशंसनीय उदाहरण अछि: गौरवशाली प्रसंगक पुनरुक्ति मात्र ओकर सत्यापन नहि। एहन सावधानी जँ सभ इतिहास-दावामे बरती तँ सम्पूर्ण ग्रन्थक विश्वसनीयता आओर बढ़त।

३.९. 'बाबा लक्ष्मण दास' : कुटी, पर्यावरण आ साधु-समाज

नवम अध्यायमे लक्ष्मण दासक कुटी खेती, पशुपालन, पोखरि, गाछवृक्ष, आश्रय आ लोकभक्तिक संग जुड़ैत अछि। साधुक स्थान मात्र निजी साधनाक केन्द्र नहि; आसपासक लोक लेल ठहरबाक, भोजन पयबाक आ सामूहिक भेला करबाक सामाजिक स्थल सेहो बनैत अछि। धर्मक विश्लेषण एतय ग्रामीण पर्यावरण आ संसाधन-व्यवस्थाक अध्ययनमे प्रवेश करैत अछि। जमीनक व्यवस्था, भेंट-दान आ श्रमक भागीदारीक अभिलेख भेटलासँ संस्थाक आर्थिक इतिहास सेहो लिखल जा सकैत अछि।[14]

अग्नि पर शयन, जाड़मे जलमग्न साधना अथवा असाधारण शारीरिक क्षमताक कथासभ लोकआस्थाक विषय अछि। एहि कथाक सांस्कृतिक अर्थ महत्त्वपूर्ण भऽ सकैत अछि, मुदा परीक्षणक अभावमे एकरा वैज्ञानिक सत्य नहि कहल जाय। कुटीमे विभिन्न समुदाय लेल खुलल बैठकक प्रशंसा करैत ओहिठाम स्त्रीक पहुँच अथवा आचार-विधिक सीमाक परीक्षण सेहो जरूरी अछि; साझा स्थानक अर्थ स्वतः सभ लेल समान अधिकार नहि।

३.१०. 'सुदर्शन मिश्र बनाम सीताराम दास बनाम रामचन्द्र दास' : नाम बदलैत जीवनी

दसम अध्याय सुदर्शन मिश्रक सांसारिक पहचानसँ संन्यासी पहिचान धरि गमनकेँ कथा बनबैत अछि। अरेड़सँ जुड़ल जन्म, साधु सीताराम दाससँ सम्बन्ध, रामचन्द्र दास नाम, उत्तर प्रदेशक मठक जीवन, गौसेवा आ २०१८क निधन—एहि वृत्तान्तमे एक स्थानीय जीवनी व्यापक आध्यात्मिक भूगोलसँ जुड़ैत अछि। व्यक्तिक नाम बदलैत अछि मुदा गाम ओहि व्यक्तिक जीवनसँ अपन आत्मीय सम्बन्ध नहि छोड़ैत; एहि सँ लोक-जीवनीक प्रव्रजनशील स्वरूप प्रकट होइत अछि।[15]

चरितक रचनात्मक बल गुरु-शिष्य सम्बन्ध, आत्म-निर्णय आ सेवाक क्रममे अछि। मुदा अलौकिक शक्ति अथवा दूरदेशक विद्युत्-विघ्न सम्बन्धी असाधारण प्रसंग श्रद्धालु लोकक कथनक श्रेणीमे रहबाक चाही। ऐतिहासिक जीवनरेखा लेल मठक पञ्जी, दीक्षा-विवरण, स्थानीय आ बाहरी स्वतन्त्र साक्षात्कार तथा मृत्यु-

14 ततैव, अध्याय ९, "बाबा लक्ष्मण दास"।

15 ततैव, अध्याय १०, "सुदर्शन मिश्र बनाम सीताराम दास बनाम रामचन्द्र दास"।

सूचना आवश्यक होयत। एहि सामग्रीसँ पोथीक जीवनीक मान कम नहि होयत; ओकर परीक्षण अधिक सम्भव होयत।

३.११. 'रामानन्द साहू : एक विलक्षण स्वतंत्रता सेनानी' : राजकीय सूचीसँ बाहरक स्मृति

एगारहम अध्याय १९४२क भारत छोड़ो आन्दोलनक समय व्यापारी रामानन्द साहूक संघर्षक कथा कहैत अछि। लेखकक पारिवारिक स्मृतिमे पुलिसक दुर्व्यवहार, मूँछ पकड़ि अपमान, आन्दोलनमे भागीदारी आ सरकारी प्रमाण-पत्र अथवा पेंशनक पाछाँ नहि दौड़बाक बात विशेष महत्त्व राखैत अछि। एहि चरितक नैतिक केन्द्र ई अछि जे देशक स्वतन्त्रताक इतिहास केवल मान्यता-पत्र प्राप्त व्यक्तिसभक सूची नहि; अनेक स्थानीय सहभागी औपचारिक स्मारकक बाहर रहि जाइत छथि।[16]

मुदा सरकारी सूचीमे नाम नहि भेटब स्वयं घटना सत्य सिद्ध नहि करैत; तहिना नामक अनुपस्थितिसँ घटना असत्य सेहो प्रमाणित नहि होइत। एहि द्वन्द्वक समाधान अछि स्वतन्त्र साक्ष्य: १९४२क थाना-अभिलेख, जिलाक प्रतिवेदन, समकालीन पत्र, दुकानक पुरान कागज आ आन्दोलनकारी परिवारसभक तुलनात्मक साक्षात्कार। ई कार्य ऐतिहासिक न्याय लेल उतबे आवश्यक अछि जतेक चरितक सम्मानपूर्ण साहित्यिक अभिलेखन।

३.१२. 'अरेड़रत्न युगपुरुष विश्वम्भर झा' : सामूहिक शोकक सौन्दर्य

बारहम अध्याय पोथीक सर्वाधिक सघन साहित्यिक अंशसभमे अछि। विश्वम्भर झाक नेतृत्व पुस्तकालय, खादी, विद्यालय, सार्वजनिक पाठ आ गामक विकाससँ जुड़ैत अछि। लेखक सामाजिक परिवर्तनक प्रतीक लेल अमूर्त विशेषण मात्र नहि, पुस्तकालयमे रुचि, विद्यार्थीसभक उत्साह, खादीक काम आ लोकक आशाक दृश्य चुनैत छथि। ताहि कारण मृत्यु-प्रसंग अबैतहि पाठककेँ अनुभव होइत अछि जे एक व्यक्ति मात्र नहि, सामूहिक सम्भावनाक केन्द्र हेराइ गेल।

छठि-पर्वक समय बीमारी आ शल्यक्रियाक प्रसंगमे पुस्तकालय आ संस्थासभक उदासी, वस्तुक मानवीकरण आ गामक सामूहिक विषाद गद्यकेँ शोकगीतक लय दैत अछि। साहित्यिक रूपमे ई करुणा प्रभावकारी अछि। मुदा कालक्रम इतिहासक परीक्षण माँगैत अछि: पाँचम अध्यायमे १९६९, एतय १० नवम्बर १९७० निधनक विवरण अछि। लेखकक अल्सरक उल्लेख आ डॉ. आशा झाक उद्धृत प्रतिक्रियामे

16 ततैव, अध्याय ११, "रामानन्द साहू : एक विलक्षण स्वतंत्रता सेनानी"।

एपेन्डिक्सक बात चिकित्सकीय कारणक दू अलग वृत्तान्त अछि। बिना उपचार-अभिलेख एहि दुनूकेँ एकमे नहि मिलाओल जा सकैत।[17]

अध्यायमे पाठकक प्रतिक्रियाकेँ स्थान देब एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग अछि। सामाजिक माध्यमक पाठक एकर सहकथक जकाँ उभरैत छथि। मुदा पाठकक टिप्पणी—मत, अतिरिक्त साक्ष्य अथवा सुधार—कोन श्रेणीक अछि, से स्पष्ट करब आवश्यक अछि।

३.१३. ‘यत्र जीव तत्र जाह : रघु बाबूक प्रसंग’ : हास्यक भीतर करुणा

तेरहम अध्याय रघुनन्दन मिश्र ‘रघु बाबू’क जीवनक हानि, संघर्ष आ हास्यप्रद प्रसंग जोड़ैत अछि। एक दिस पारिवारिक दुःख, दोसर दिस साधारण घटनासँ व्यंग्य उत्पन्न करबाक अद्भुत लोकबुद्धि—एहि विरुद्ध भावक सहअस्तित्व एकर कलात्मक विशेषता अछि। गामसँ बाहर यात्राक भाषिक उलटफेर आ साधुसभक माछ पकड़बाक घटनामे संवादक सहज गति अछि। शीर्षकमे धार्मिक-वक्रोक्तिक प्रयोग पाठककेँ हँसाबैत अछि, मुदा हँसीक भीतर स्वार्थ आ ढोंगक तीक्ष्ण पहचान अछि।[18]

एहि कथासभक संवाद स्मृति-आधारित पुनर्कथन अछि, प्रमाणित शब्दशः प्रतिलेख नहि। साहित्यिक मूल्यक परीक्षण लेल ई सीमा स्वीकार कयल जाय। एतय देखाइत अछि जे लोक-इतिहासमे केवल ‘महापुरुष’क महान कार्य नहि, साधारण मनुष्यक भाषिक कारीगरी आ दुख-सुख सेहो सांस्कृतिक इतिहासक भाग अछि।

३.१४. ‘एहन छलीह माय’ : घरेलू श्रमक सामाजिक इतिहास

चौदहम अध्यायमे शिवदुलारी देवीक स्मरण गामक इतिहासकेँ पितृवंशक यशसँ हटाकऽ स्त्रीक श्रम, क्षमता आ सूझबूझ पर लबैत अछि। बाल्यकालक बन्धन, विवाह, परिवारक आर्थिक संकट, सूत कातब, प्रसवक समय सहयोग, पड़ोसक स्त्रीक देखभाल—एहि सभसँ ओ काम देखाइत अछि जाहि बिना गामक जीवन चलि नहि सकैत मुदा जकर उल्लेख सरकारी अभिलेखमे प्रायः नहि भेटैत अछि। लेखक मायक चरित्रकेँ नायकत्व दैत छथि, मुदा एहि नायकत्वक आधार दैनिक जीवनक धैर्य आ परसेवा अछि।[19]

एहि अध्यायक स्रोत लेखकक निकट पारिवारिक अनुभव अछि; ताहि कारण भावात्मक विश्वसनीयता आ ऐतिहासिक परीक्षणक स्वरूप पहिल बच्चा झाक पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत गाथासँ भिन्न अछि। एक सन्तानक

17 ततैव, अध्याय ५ आ १२; विश्वम्भर झाक जीवन-वृत्तक तथ्यगत अन्तर एहि दुनू पाठसँ चिह्नित भेल अछि।

18 ततैव, अध्याय १३, “यत्र जीव तत्र जाह : रघु बाबूक प्रसंग”।

19 ततैव, अध्याय १४, “एहन छलीह माय”।

प्रेमिल दृष्टिक सीमा मानैत सेहो घरेलू स्त्री-श्रमक लिखित स्मरणक महत्त्व कम नहि होइत। जड़ी-बूटी वा लोकचिकित्साक कथाकेँ आजुक प्रमाणित स्वास्थ्य-परामर्श नहि, अतीतक व्यवहारक विवरण मानल जाय।

३.१५. 'लेटर बम' : मल्लाह पहलवानक सामाजिक गरिमा

पन्द्रहम अध्यायमे लेटर मुखिया 'लेटर बम'क चरित्र पोथीक व्यापक सामाजिक प्रयोजनकेँ मूर्त करैत अछि। पहलवानी, साहस, दोसरक सेवा, पोखरिसँ जुड़ल काम, परिजनक संग स्नेह आ लेखकक परिवारसँ निकटता—एहि नायकक महत्त्व प्रतिष्ठित सनद नहि, सामाजिक व्यवहारमे निर्मित गरिमा अछि। ओ मल्लाह समुदायसँ छथि, मुदा लेखक हुनका स्वतन्त्र व्यक्तित्व दैत छथि जे पारम्परिक ऊँच-नीचक आख्यानसँ बाहर उभरैत अछि।[20]

कुष्ठरोगीसँ व्यवहार, अभावग्रस्तक सेवा आ बेटाक नाम राखबाक आत्मीय विवरण व्यक्तिगत निकटताक सजीव उदाहरण अछि। मुदा एक व्यक्तिक सामाजिक सम्मान सम्पूर्ण गाममे जातीय असमानता नहि छल—एहन निष्कर्षक प्रमाण नहि। भविष्यक लेखनमे मल्लाह श्रमिक, स्त्री आ भूमिहीनक अपन कथन सेहो रहबाक चाही। साँप काटलाक प्रसंगमे कथित राख-औषधि लोकवृत्तान्तक सामग्री अछि, चिकित्सकीय उपचारक विश्वसनीय निर्देशन नहि।

३.१६. 'मायक अदम्य साहस' : संकटमे निर्णायक कर्म

सोलहम अध्याय चौदहम अध्यायक मातृचरितकेँ नूतन आख्यानिक ऊँचाई दैत अछि। सेनहा क्षेत्रमे स्त्री आ बालकसभ पर डंक मारयवाला कीटसभक आक्रमण, भयक फैलाव आ शिवदुलारी देवीक त्वरित निर्णय—एहि दृश्यसभमे नाटकीय तनाव अछि। माय एतय केवल करुणामूर्ति नहि; संकटमे जोखिम उठाबयवाली, तात्कालिक उपाय खोजयवाली आ लोककेँ अस्पताल पहुँचयबाक निर्णय करयवाली सक्रिय नायिका बनैत छथि।[21]

ई लेखकक जीवनसँ जुड़ल प्रत्यक्ष अथवा निकट अनुभूत घटना अछि। ताहि कारण वर्णित अनुभूतिक आधार प्राचीन लोकगाथासँ अलग प्रकारक अछि; तथापि अनेक वर्ष बाद स्मरण कयल गेल संवादकेँ शब्दशः अभिलेख नहि मानल जाय। साहित्यिक दृष्टिसँ संकट-विस्तार, नायिकाक प्रवेश आ राहतक क्रम बहुत प्रभावी अछि।

---

20 ततैव, अध्याय १५, "लेटर बम"।

21 ततैव, अध्याय १६, "मायक अदम्य साहस"।

३.१७. 'गाम समाज : गामक अस्मिता आ स्वरूपक निर्धारण—सभक योगदानक प्रजातन्त्र' : आदर्श आ यथार्थ

अन्तिम अध्यायमे चौपाड़ि, साझा बैठक, आपसी संवाद, पाँति-पड़ोस, जातीय बहुलता आ प्रत्येक समुदायक योगदानसँ 'गामक प्रजातन्त्र'क कल्पना बनैत अछि। कृतिक आरम्भमे जतेक विशिष्ट नायक छथि, समाप्तिमे ओतबे समाजकेँ सामूहिक नायक मानबाक प्रयास अछि। 'सभक योगदान' एतय नारा मात्र नहि; ई प्रश्न अछि जे इतिहास लिखबाक अधिकार ककरा भेटैत अछि, कोन श्रम गिनल जाइत अछि आ कोन नाम छूटि जाइत अछि।[22]

मुदा सामञ्जस्यक आदर्शकेँ बराबरीक ऐतिहासिक प्रमाण नहि मानल जा सकैत। प्रमुख दाता, विद्वान, साधु आ शिक्षित पुरुषक विस्तारक अनुपातमे दलित श्रमिक, मुस्लिम स्त्री, खेतिहर मजदूर, विधवा आ भूमिहीनक अपन आवाज कम अछि। लेखक एहि सभकेँ पूर्णतः अदृश्य नहि करैत छथि; तथापि सामाजिक 'प्रजातन्त्र'क निष्कर्ष लेल भूमि, संसाधन, विद्यालय, देवस्थान आ सार्वजनिक निर्णयमे वास्तविक सहभागिताक प्रमाण आवश्यक अछि। अयाची मिश्रक परिवारसँ सम्बद्ध चमार स्त्रीक योगदानक प्रसंग अर्थपूर्ण अछि, मुदा हुनकर अपन नाम अथवा स्वतन्त्र स्वरक अभाव ऐतिहासिक अभिलेखनक विषमता उजागर करैत अछि।

चौपाड़िक उपस्थिति मात्रसँ समान-अधिकारयुक्त सार्वजनिक क्षेत्र सिद्ध नहि भऽ जाइत। ओतय के बैसि सकैत छल, के बाजि सकैत छल, स्त्रीक पहुँच छल कि नहि, विवादक निर्णय किनकर पक्षमे होइत छल—ई प्रश्न 'सभक योगदान'क दावाकेँ अनुसन्धानीय आधार देत। शीर्षक कठिन अनुसन्धानकेँ आमंत्रित करैत अछि; एकरा सम्पन्न ऐतिहासिक निष्कर्ष नहि मानल जाय।

४. 'हमर गाम'क आख्यान-स्वर : अपनत्वक शक्ति आ सीमा

लेखकक सर्वोच्च शैलीगत गुण हुनक आत्मीय वक्ता-रूप अछि। ओ कोनो अनाम बाहरी इतिहासकारक स्वरमे नहि, गामक एहन व्यक्ति जकाँ बजैत छथि जे अपन पुरखा, सम्बन्धी, पोखरि, विद्यालय, धार्मिक स्थल आ हाटकेँ स्मृतिमे सँ पहचानैत छथि। एहि 'हम'क भीतर बालक, वयस्क, क्षेत्र-अध्येता आ लोकस्मृति-संकलक एक संग उपस्थित छथि। माय अथवा रेशमा मौसीक प्रसंग एहि कारण मनमे घर करैत अछि जे दृश्यक वस्तु, बोली, सम्बोधन आ भावनात्मक प्रतिक्रिया ठोस अछि।

22 ततैव, अध्याय १७, "गाम समाज : गामक अस्मिता आ स्वरूपक निर्धारण—सभक योगदानक प्रजातन्त्र"।

दोसर दिस, गामक मान-प्रतिष्ठाक रक्षा करबाक इच्छा लेखककेँ कतेको बेर व्यापक दावा करबाक दिशामे लऽ जाइत अछि। कालिदासक सम्भावित यात्रासँ वर्तमान गामक प्राचीन महत्त्व सिद्ध करबाक प्रवृत्ति, पहलवानीक अतिशयोक्तिपूर्ण गाथाकेँ निर्विवाद इतिहास बनायब अथवा व्यक्तिक महत्ता विशेषणक संचयमे कहल जायब—ई सभक सामाजिक प्रेरणा बुझना जाइत अछि। बाहरी नकारात्मक छविक प्रतिवाद लेखक करऽ चाहैत छथि, मुदा इतिहासक स्तर पर प्रतिवादक सर्वश्रेष्ठ रूप अधिक ठोस प्रमाण होइत, अधिक दीर्घ प्रशस्ति नहि।

लेखकीय सूत्र 'किछु गामक आ किछु अपन'क मिश्रण अछि। संस्मरण-गद्यक भीतर ई गुण अपन ठाम उचित अछि। अनिवार्य सम्पादकीय आवश्यकता विधाक स्पष्टता अछि: जतय स्वानुभव, ओतय ताहि रूपमे कथन; जतय लोकश्रुति, ओतय कथकक पहचान; जतय अभिलेख, ओतय दस्तावेजक विवरण। तखन आत्मीयता आ अनुसन्धान परस्पर विरोधी नहि रहत।

५. भूगोल, भावना आ राजकीय सीमा

गामक सीमा केवल राजस्व-मानचित्रसँ परिभाषित नहि होइत, ई पोथीक महत्त्वपूर्ण स्थापनासभमे अछि। अरेड़क दक्षिणी आ उत्तरी दू पंचायत, चौदह टोल आ फेरौंजाक परिसीमनक बावजूद 'बृहत् अरेड़'मे आत्मीय समावेश—एहि वृत्तान्तमे लोक अपन स्थानकेँ निरन्तर पुनर्गठित करैत देखाइत छथि। टोलक सूचीक संग परिवारक निमन्त्रण, सांस्कृतिक आवागमन आ साझा देवस्थानक स्मृति जोड़ल गेल अछि।[23]

एकर विशिष्ट विचार ई नहि जे प्रत्येक प्रशासनिक विभाजन गलत अछि। असल बिन्दु ई जे 'राज्यक सीमा', 'स्थानीय उच्चारण', 'अनुष्ठानिक क्षेत्र' आ 'नातेदारीक नेटवर्क'—चारू मानचित्र एक-दोसर पर पूर्ण रूपसँ नहि चढ़ैत। अरेड़/अरेरू/अनरेरक बहुरूपी नाम एहि असामञ्जस्यक भाषिक रूप अछि, उत्तर फेरौंजाक आत्मीय सम्बन्ध सामाजिक रूप। एहि कारण 'भाव-भूगोल' एकटा उपयोगी स्थानीय अनुसन्धान-अवधारणा बनबाक सामर्थ्य रखैत अछि।

तथापि चौदह टोलक वर्तमान प्रशासनिक परिभाषा, पंचायतक रेखा आ संस्थाक स्थापना समय जाँचबाक लेल समसामयिक अभिलेख आवश्यक अछि। राजस्व-नक्शा, जनगणनाक ग्राम-निर्देशिका, पंचायतक पुरान कागज आ स्थानीय लोक-मानचित्रकेँ एके ठाम तुलना कयल जाय तँ भावनात्मक सीमा आ दस्तावेजित सीमाक सम्बन्ध अधिक स्पष्ट होयत।

23 मिश्र, अरेड़ : गामक लोक इतिहास, "लेखकीय" आ अध्याय २।

६. खेती, हाट, ऊख आ श्रमक ग्राम्य अर्थव्यवस्था

पोथीक आर्थिक इतिहास सूक्ष्म अछि, यद्यपि व्यवस्थित आँकड़ा कम अछि। अंडी-वृक्ष, धान, तरकारी, पान, तमाकू, ऊख, पशुपालन, रैयाम चीनी मिल, ढुलाई-साधन, हाट, मिठाइ-दोकान, खादी आ सूत कातयवाली स्त्री—एहि बिम्बसभसँ गामक उत्पादक जीवनक बहुरूपी तस्वीर बनैत अछि। विद्यालय बनबयवाला दाता, व्यापारसँ सम्पन्न साहू, खेतीक परिवार, दूध-दहीक विक्रेता आ घरक भीतर श्रम करयवाली स्त्री आर्थिक सम्बन्धक अलग-अलग स्तर पर छथि।

ऊखक इतिहास मात्र फसलक इतिहास नहि। चीनी मिलक कार्यालय, तौल, परिवहन, रोजगार, उद्योगक संगठन आ मिलक क्षय—एहि सभकेँ जोड़ल जाय तँ ग्रामीण उत्पादनक एकटा व्यापक शृङ्खला उभरैत अछि। पोथी ओकर अंश उपस्थित करैत अछि, मुदा वर्षवार उत्पादन, मजदूरी, जमीनक स्वामित्व, किसानक ऋण आ मिल बन्द होयबाक ठोस तिथि नहि दैत। किसानक रसीद, चीनी मिलक नियुक्ति-अभिलेख, ढुलाईक कागज आ हाटक पुरान लेखा एहि विवरणकेँ प्रमाणित आर्थिक इतिहासमे रूपान्तरित कऽ सकैत अछि।

घरेलू स्त्री-श्रमकेँ ‘परिवारक सेवा’क नैतिक शब्दक भीतर बिलीन नहि करबाक चाही। शिवदुलारी देवीक सूतक काम अथवा प्रसव-सम्बन्धी देखभाल सामाजिक जीवनक पुनरुत्पादनक आधार छल। रेशमा मौसीक नियमित हाट-यात्रा सेहो स्त्रीक श्रम, चलनशीलता आ उद्यमक इतिहास कहैत अछि। एहि योगदानसभक आर्थिक मूल्य विचारमे अनला पर गामक समृद्धिक चित्र अधिक समावेशी बनत।

७. शिक्षा, पुस्तकालय आ संस्थाक दीर्घजीवन

एहि पोथीमे धार्मिक आ शैक्षिक संस्थासभ परस्पर जुड़ल देखाइत अछि। महादेवस्थान लग संस्कृत-अध्ययन, पुरवारी दुर्गास्थानक सामूहिक आयोजन, बच्चा झा जनता विद्यालय, विश्वम्भर झाक पुस्तकालय, खादीसँ जुड़ल काम आ विद्यार्थीसभक उपलब्धि—ई सभ सांस्कृतिक पूँजीक निर्माणक स्थल अछि। संस्थाक सफलता केवल एकटा करिश्माई व्यक्तिक श्रेय नहि; भूमि, भवन, पुस्तक, शिक्षक, छात्र, दान आ सामूहिक निरन्तरता ओहिमे रहैत अछि।

दोसरा बच्चा झाक जमीन-दानक कथासँ प्रश्न उठैत अछि—विद्यालयक स्थापना-पञ्जी आ स्वामित्वक कागज कतय अछि? विश्वम्भर झाक पुस्तकालयसँ दोसर प्रश्न—पाठकक जातीय आ लैंगिक पहुँच केहन छल? रत्तेलाल झाक पाण्डुलिपिसँ तेसर—बची रहल पाठक भौतिक स्थिति की अछि? एहि सभक संग एक समग्र संस्थागत इतिहास लिखल जा सकैत अछि। पोथीक वर्तमान रूपमे व्यक्तिक श्रेय पर विशेष बल अछि;

भविष्यक शोधमे संस्था चलाबयवाला श्रमिक, शिक्षक, छात्र, पुस्तकपाल आ महिला-उपयोगकर्ताक अनुभव सेहो आबए।

विश्वम्भर झाक मृत्यु-चित्रक प्रभावक कारण ई अछि जे लेखक हुनक सार्वजनिक काजकेँ व्यक्तिगत गुणक सूची नहि बनबैत छथि; अनेक संस्था ओहि व्यक्तिक जीवनक विस्तार बनि उभरैत अछि। एहि दृष्टिसँ पुस्तकक नायकत्वक परिभाषा बदलैत अछि—कुश्तीक वीरसँ लोक-निर्माता धरि।

८. धर्मस्थानक बहुस्तरीय सामाजिक कार्य

महादेवस्थान, दुर्गामन्दिर, लक्ष्मण दासक कुटी आ साधु-मठक प्रसंग श्रद्धाक आधार पर लिखल गेल अछि; मुदा एहि स्थानसभकेँ पूजा-गृह मात्र मानब त्रुटिपूर्ण होयत। पोखरि, गाछवृक्ष, गाय, उत्सव, अतिथि-सेवा, अनुष्ठानक प्रबन्ध, पुजारीक उत्तराधिकार आ दानक सार्वजनिक उपयोग—एहि सभमे धर्मक संग सामुदायिक संसाधनक इतिहास अछि। बुद्धिनाथ झाक कथित उदारता संस्थागत रूपमे कोना टिकल, ई प्रश्न मन्दिरक इतिहासक केन्द्र अछि।

पूजा-पद्धतिक परिवर्तन दर्ज करब पोथीक विशेष उपलब्धि अछि। रत्तेलाल झाक मूल विधि आ बादक बलि-सम्बन्धी व्यवहारमे अन्तरसँ स्पष्ट होइत अछि जे 'पुरान' कहल जायवाली परम्परा सेहो सामाजिक निर्णय, बहस आ पुनर्रचनासँ बदलैत अछि। मूल पाण्डुलिपि, संशोधित पाठ आ सम्भावित सभा-निर्णयक तुलना कयल जाय तँ अरेड़ धार्मिक व्यवहारक परिवर्तन-अध्ययनक उल्लेखनीय स्थल बनि सकैत अछि।

साधुक असाधारण सामर्थ्य अथवा अनन्त अन्नक चमत्कारक लोककथासभक साहित्यिक स्थान अछिये। एकरा अभिलेखीय इतिहाससँ अलग श्रेणीमे राखब आस्थाक अवमानना नहि; कथा-कहबाक सामाजिक जरूरतक अध्ययन वास्तवमे श्रद्धाक सांस्कृतिक अर्थकेँ स्पष्ट करैत अछि।

९. जाति, समुदाय आ असमान दृश्यता

'लेखकीय'मे अरेड़क बहुविध जाति आ समुदायक उल्लेख अछि: ब्राह्मण, कायस्थ, भूमिहार, यादव, मल्लाह, डोम, मुसहर, धानुक, कुर्मी, कोइरी, तेली, मुस्लिम पेशागत समूह, लोहार, धोबी आ आन अनेक। एहि सूचीसँ लेखक गामकेँ एक वंशक निजी सम्पत्ति नहि, विविध लोकक साझा कर्मभूमि मानबाक प्रयास करैत छथि।[24]

24 ततैव, "लेखकीय"; सामाजिक समुदायसभक उल्लेख लेखकक अपन विवरणमे अछि।

मुदा सूचीमे उपस्थित होयब आ आख्यानक केन्द्रमे समान रूपसँ उपस्थित होयब अलग बात अछि। पंडित, दाता, प्रमुख पुरुष आ साधुक विशद चरितक अनुपातमे खेतिहर मजदूर, मुसहर परिवार, डोम समाज, मुस्लिम महिलाक अपन साक्षात्कार आ भूमिहीनक जीवन कम विस्तृत अछि। ई आलोचना लेखकक उदार उद्देश्यक नकार नहि; एक अपरिहार्य साहित्यिक-ऐतिहासिक निरीक्षण अछि। रेशमा मौसी, लेटर बम आ चमार स्त्रीक स्मरण दृष्टिक विस्तार अछि, मुदा अन्तिम समावेशिता नहि।

'सभक योगदानक प्रजातन्त्र'क पहिने सामूहिक स्मृतिमे बजबाक आ लिखबाक अधिकारक प्रजातन्त्र चाही। भविष्यक खण्डमे गैर-प्रमुख समुदायसभक अपन भाषामे कथन, नारीक श्रम, मजदूरीक व्यवहार, पोखरिक उपयोगक अधिकार, जातीय भोज-व्यवस्था आ विद्यालयक प्रवेशक इतिहास लेल अलग स्थान बननाइ उचित होयत। व्यक्तिगत सद्भाव आ संरचनात्मक असमानता एके समाजमे एक संग रहि सकैत अछि; एहि विरोधकेँ स्वीकार करब इतिहासक परिपक्वता अछि।

१०. माय, स्त्री आ लोकस्मृतिक पुनर्पाठ

'एहन छलीह माय' आ 'मायक अदम्य साहस'केँ भावुक अन्तिम जोड़ मानि सीमित नहि करबाक चाही। ई दुनू अध्याय एकटा अनौपचारिक स्त्री-इतिहास रचैत अछि। पहिलमे मितव्ययिता, आजीविका, प्रसव-सहायता आ धैर्यक लम्बा समय अछि; दोसरमे अचानक संकटमे निर्णायक कर्मक सघन क्षण। स्त्रीक श्रम आ स्त्रीक साहसक एहि दू अलग काल-मापसँ माय आदर्श प्रतिमासँ आगाँ बढ़ि सामाजिक क्रियाकर्त्री बनि प्रकट होइत छथि।

एहि चित्रणक आधार सन्तानक प्रेम अछि; ताहि लेल प्रशंसाक एकतरफापन कतहु रहि सकैत अछि। मुदा घरेलू स्त्री-श्रमक लिखित स्मरण स्वयं दुर्लभ सांस्कृतिक सामग्री अछि। लेखकक दृष्टि जँ भविष्यक लेखनमे विधवा, खेतिहार स्त्री, दलित स्त्री, अल्पसंख्यक समुदायक स्त्री आ शिक्षिकाक जीवन धरि विस्तृत होयत तँ गामक इतिहासक लैंगिक परिप्रेक्ष्य अधिक न्यायपूर्ण बनत।

रेशमा मौसीक प्रसंग एहि दृष्टिसँ पुनः पठनीय अछि। ओकरा केवल धार्मिक सद्भावक प्रतीक बनाओलासँ महिला व्यापारीक वास्तविक श्रम आ चलनशीलता झँपि जाइत अछि। 'मौसी' सम्बोधन ओहि नाताक संवेदनशील रूप अछि जाहिमे धर्म आ व्यापारक औपचारिक सीमा घरेलू आत्मीयताक बाट खोलैत अछि।

११. गद्यक कारीगरी : दृश्य, संवाद, अतिशयोक्ति आ शोक

कृतिक गद्य एकरूप नहि। परिचयात्मक अध्यायमे सूची, स्थान आ पेशाक घनत्व अछि; बच्चा झाक अध्यायमे लोकवीरगाथाक उछाह; बुद्धिनाथक प्रसंगमे दन्तकथाक आवृत्ति; रघु बाबू लग हास्य-विसंगति;

विश्वम्भर झा लग शोकक कल्पना; मायक प्रसंगमे संस्मरणक ऊष्मा; अन्तिम अध्यायमे सामाजिक विचारक व्याख्यात्मक चाल। एहि वैविध्यसँ पोथी साधारण चरित-संग्रहसँ पृथक् बनैत अछि।

संवादक उपयोग पाठककेँ कथास्थलमे प्रवेश करबैत अछि। रेशमा मौसीक सम्बोधनमे भाषा सम्बन्ध रचैत अछि; रघु बाबूक प्रसंगमे भाषा हास्य बनैत अछि; पहलवानक गाथामे चुनौती आ प्रत्युत्तर कथानककेँ गति दैत अछि। पुरान कथाक संवाद जँ प्रत्यक्ष लिखित स्रोतसँ नहि अछि तँ ओकर शब्दशः प्रमाणक दावा नहि कयल जाय। साहित्यिक संवादक सफलताकेँ तथ्यक निश्चिततासँ अलग पढ़ब आवश्यक अछि।

अतिशयोक्ति बच्चा झा आ लक्ष्मीनिया-बखारीक प्रसंगमे सामूहिक गौरवकेँ जन्म दैत अछि; विश्वम्भर झाक मृत्यु-चित्रमे वस्तुक मानवीकरण संस्था आ व्यक्ति बीच करुण एकता दैत अछि; रघु बाबूक कथामे व्यंग्य धार्मिक आडम्बरक परीक्षण करैत अछि। मुदा बारम्बार 'महान', 'दिव्य', 'युगपुरुष' कहब दृश्यात्मक विशिष्टताकेँ पाछाँ धकेलैत अछि। जखन लेखक ठोस दृश्य दैत छथि—मायक साहस, मौसीक आगमन, पुस्तकालयक उदासी—तखन प्रशस्ति बिना सेहो पाठक व्यक्तिक महत्त्व अनुभव करैत अछि।

१२. मूल पाठक भीतरक तथ्यगत असंगति : सत्यापनक सुनिश्चित प्रश्न

मूल पोथीक प्रति सम्मानक अर्थ ओकर तथ्यगत अन्तर पर मौन रहब नहि। एके पुस्तकमे अलग वर्ष, संख्या आ निदान भेटब ऐतिहासिक विश्वसनीयताकेँ प्रभावित करैत अछि। निम्नलिखित बिन्दु कोनो 'गलती-सूची' मात्र नहि, वरन् संशोधित संस्करण लेल जाँचबाक स्पष्ट प्रश्न अछि। एकर कोनो एक पाठकेँ बिना स्वतन्त्र प्रमाण निर्णायक मानल नहि गेल अछि।

१२.१. चीनी मिलमे नियुक्त फुटबॉल खेलाड़ीक संख्या

पहिल अध्यायमे अरेड़क पन्द्रह युवा फुटबॉल खेलाड़ीकेँ रैयाम चीनी मिलमे रोजगार भेटबाक उल्लेख अछि; चौठ अध्यायमे सम्बन्धित वृत्तान्त तेरहक रूपमे उपस्थित अछि। सम्भव अछि दुनू अलग अवसरक गणना हो, मुदा पुस्तक एहन अन्तर स्पष्ट नहि करैत। मिलक नियुक्ति-पञ्जी, खेलसमितिक कागज अथवा नियुक्त व्यक्तिक परिवारसभक स्वतन्त्र सूचीसँ संख्या निश्चित कयल जाय।[25]

25 ततैव, अध्याय १ आ ४। नियुक्त खेलाड़ीक संख्या सम्बन्धी पाठभेद।

१२.२. राजकिशोर मिश्रक मैट्रिक परीक्षाक स्थान

पहिल अध्यायमे राजकिशोर मिश्रक बिहार-स्तरीय मैट्रिक परीक्षामे दसम स्थानक चर्चा अछि, मुदा पाँचम अध्यायमे नवम स्थानक उल्लेख अछि। एतय परीक्षा-वर्ष आ मूल बोर्ड-परिणामक जाँच जरूरी अछि। विद्यार्थी-प्रतिभाक सम्मान केवल क्रमांक पर निर्भर नहि, मुदा सटीक अभिलेखन ओकर सार्वजनिक स्मृतिक उचित आधार अछि।[26]

१२.३. विश्वम्भर झाक निधनक वर्ष

पाँचम अध्यायमे छठि-पर्वक समय १९६९ ई.क कथन भेटैत अछि; बारहम अध्यायमे १० नवम्बर १९७० ई. निधनक विवरण अछि। ई कालक्रमक गम्भीर अन्तर अछि। मृत्यु-प्रमाणपत्र, अस्पतालक पुरान विवरण, पारिवारिक डायरी, विद्यालयक शोकसभा-अभिलेख वा समकालीन समाचार भेटलासँ पुष्टि सम्भव अछि। छठिक स्थानीय पर्व-तिथिक संग नागरिक पञ्चाङ्गक वर्षक मिलान करब सेहो जाँचक भाग हो।[27]

१२.४. विश्वम्भर झाक चिकित्सकीय अवस्थाक अलग वर्णन

लेखकक मुख्य कथा पेटक अल्सरक कारण शल्यक्रियाक उल्लेख करैत अछि; बारहम अध्यायमे उद्धृत डॉ. आशा झाक प्रतिक्रियामे एपेन्डिक्सक प्रसंग आयल अछि। ई दूटा कथकक अलग वृत्तान्त अछि, एक चिकित्सकीय निष्कर्ष नहि। ओहिमे सँ कोन तथ्य सही अछि से मात्र उपचार-अभिलेख अथवा समकालीन पुष्ट साक्ष्यसँ जाँचल जा सकैत अछि। एखन स्रोतक भिन्नता सुरक्षित राखब उचित अछि।[28]

१२.५. अरेड़ नामक उत्पत्तिक भिन्न प्रस्ताव

अंडी-वृक्षक बहुलता नामोत्पत्तिक एक लोकमान्यता अछि; पाँचम अध्यायमे लोकक स्वभावसँ नाम बनबाक दोसर व्याख्या अछि। दुनू लोकव्युत्पत्तिक रूपमे रोचक अछि। ध्वनिशास्त्र, पुरान राजस्व-नक्शा, क्षेत्रीय उच्चारण आ प्राचीन लिखित नामक उपलब्ध रूप जुटा निर्णायक अध्ययन कयल जाय।[29]

26 ततैव, अध्याय १ आ ५। राजकिशोर मिश्रक मैट्रिक परीक्षा-क्रम सम्बन्धी पाठभेद।

27 ततैव, अध्याय ५ आ १२। विश्वम्भर झाक निधन-वर्षक दू भिन्न कथन।

28 ततैव, अध्याय १२। चिकित्सकीय विवरणक भिन्न कथनकेँ एकटा प्रमाणित निदान नहि मानल गेल अछि।

29 ततैव, “लेखकीय”, अध्याय १ आ ५। अरेड़ नामक लोकव्युत्पत्तिसभ।

१२.६. प्राचीनता, यात्रा आ न्यायिक घटनाक अप्रमाणित दावासभ

कालिदासक एहि बाटसँ यात्रा, विशेष बौद्ध समुदायसभक प्राचीन आवागमन, महान धार्मिक महाकथासँ सीधा स्थल-सम्बन्ध अथवा बच्चा झाक हिंसक टकराहटक औपनिवेशिक मुकदमा—एहि सभक स्वतन्त्र कागजी प्रमाण मूल पाठमे उद्धृत नहि अछि। लेखकक अनुमान आ लोकविश्वासकेँ ऐतिहासिक घटना मानबाक पहिने स्वतन्त्र जाँच हो। अभिलेखक अभाव ‘असत्य’क स्वचालित प्रमाण नहि, मुदा ‘सिद्ध’ होयबाक प्रमाण सेहो नहि।[30]

१३. बाहरी संस्थागत इतिहासक संग तुलना : पूसा

तेसर अध्यायमे पूसा कृषि संस्थानक इतिहास आ मिथिलासँ संस्थागत संसाधनक हटबाक प्रश्न उठाओल गेल अछि। एहि प्रश्नक क्षेत्रीय महत्त्व बनल रहैत अछि। मुदा कालक्रमक जाँच लेल भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थानक पूसा, बिहार स्थित क्षेत्रीय केन्द्रक आधिकारिक इतिहास देखल गेल। ओहि विवरणक अनुसार २६ दिसम्बर १९०३ केँ भूमि सम्बन्धी सरकारी हस्तान्तरण भेल; १ अप्रैल १९०४ केँ तत्कालीन वायसराय लॉर्ड कर्जन द्वारा कृषि अनुसन्धान संस्थानक आधारशिला रखल गेल; १९०५मे पाँच विभागक काज शुरू भेल। १९११ आ १९१९मे संस्थानक नाम बदलबाक विवरण अछि। १५ जनवरी १९३४क भूकम्पसँ मूल भवन क्षतिग्रस्त भेल, २९ जुलाई १९३६ केँ संस्थान दिल्ली स्थानान्तरित भेल आ ७ नवम्बर १९३६ केँ दिल्लीक नूतन भवनक उद्घाटन भेल। पूसामे वनस्पति-सम्बन्धी उपकेन्द्र बचल; १९६९मे क्षेत्रीय अनुसन्धान केन्द्रक रूपमे ओकर पुनर्नामकरण आ १९७५मे उन्नयन भेल। (आइसीएआर–भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, पूसा बिहार क्षेत्रीय केन्द्रक आधिकारिक ‘परिचय’)[31]

पुस्तकमे देल स्थापना-वर्ष आ अंग्रेज अधिकारीसँ जुड़ल विवरण एहि आधिकारिक क्रमसँ मेल नहि खाइत। अतः मूल पाठक सम्बन्धित अनुच्छेदमे तथ्यगत संशोधन अपेक्षित अछि। मुदा कालक्रमक त्रुटि लेखकक मूल प्रश्न—मिथिलाक कृषि-इतिहासमे पूसाक भूमिका आ आधुनिक अनुसन्धानक स्थानीय पहुँच—केँ असंगत सिद्ध नहि करैत। सही कालक्रमसँ प्रश्न अधिक उपयोगी होइत अछि: १९३४क भूकम्पक बाद दिल्ली स्थानान्तरणक निर्णयमे कोन प्रशासनिक तर्क छल? बिहारमे बचल केन्द्रकेँ कोन संसाधन उपलब्ध भेल? आधुनिक कृषि-सम्बन्धी शोधक क्षेत्रीय विस्तार लेल की विकल्प अछि? एहि सभक उत्तर लेल नीति-अभिलेख आ संस्थानक वार्षिक प्रतिवेदन आवश्यक अछि, केवल अनुमान नहि।[32]

30 ततैव, अध्याय १ आ ४। पुरातन आवागमन आ औपनिवेशिक संघर्षक कथनसभक स्वतन्त्र अभिलेखीय जाँच बाकी अछि।

31 मिश्र, अरेड़ : गामक लोक इतिहास, अध्याय ३। पूसा संस्थानक प्रसंग एहि अध्यायमे प्रस्तुत अछि।

ई बाहरी जाँचक एकटा सीमित, प्रमाणित उदाहरण अछि। एहि समीक्षामे गामक प्रत्येक व्यक्ति, दान, न्यायिक मुकदमा, परीक्षा-फल, मंदिरक स्थापना अथवा स्वतन्त्रता-संघर्षक घटनाकेँ बाहरी अभिलेखसँ सत्यापित कयल गेल अछि—एहन दावा नहि कयल जाइत अछि। जतय संस्थागत प्रमाण भेटल ओतय ओकर उल्लेख स्पष्ट अछि; अन्यत्र पुस्तकक कथनकेँ पुस्तकक कथन मानि पढ़ल गेल अछि।

१४. पाण्डुलिपि, तस्वीर आ सांस्कृतिक अभिलेखागार

पंडित रत्तेलाल झाक पाण्डुलिपिक उल्लेख कृतिक एक सम्भावित मूर्त धरोहरसँ जोड़ैत अछि। नाजुक कागज, पुरान लिपि, बिखरल पारिवारिक संग्रह आ अपूर्ण प्रतिलिपिक संरक्षण स्थानीय स्तर पर अत्यावश्यक अछि। प्रत्येक उपलब्ध पाण्डुलिपिक डिजिटल चित्र, माप, पृष्ठ-संख्या, प्रारम्भिक आ अन्तिम पंक्ति, लिपि, भौतिक अवस्था, अनुमानित काल, मालिकक सहमति आ प्रतिक सुरक्षित स्थानक सूचना बनाओल जाय। तकर बाद प्रशिक्षित पाठसम्पादक विभिन्न प्रतिक तुलना करथि। ई निश्चयपूर्वक नहि कहल जा सकैत जे पुस्तकमे उल्लिखित सभ पाण्डुलिपि आजुओ उपलब्ध अछि; ताहि कारण प्राथमिक सूचीकरण पहिल शर्त अछि।

मंदिर, पोखरि, अखाड़ा-गाछी, चीनी मिलक कार्यालय, विद्यालय, खादी केन्द्र आ चौपाड़िक पुरान तस्वीरसभ स्वतन्त्र साक्ष्य बनि सकैत अछि। चित्रक संग तिथि, उपलब्ध कराबयवाला व्यक्ति, दृश्य व्यक्तिक पहिचानक प्रमाण आ प्रकाशनक अनुमति दर्ज हो। तस्वीरकेँ सजावट मात्र नहि, प्रश्न पूछबाक ऐतिहासिक सामग्री मानल जाय।

लेखकक आग्रह—आन ग्रामवासी सेहो अपन-अपन स्मृति लिखथि—सामुदायिक अभिलेखागारक बीज अछि। एकरा विद्यालय अथवा पुस्तकालयमे लोक-इतिहास संग्रहक रूप देल जा सकैत अछि; जतय पुरान पत्र, निमन्त्रण-पत्र, दुकानक खाताबही, खेतक रसीद, दानक कागज, सार्वजनिक निर्णयक पञ्जी आ रिकॉर्ड कयल साक्षात्कार क्रमशः सुरक्षित हो। निजी सामग्रीक संरक्षण आ प्रकाशनमे स्वामीक सहमति अनिवार्य बनाओल जाय।

१५. आगामी अनुसन्धानक व्यावहारिक कार्य-विधि

पहिल काज कथकसभक सूची तैयार करब अछि। प्रत्येक घटना लेल कथकक नाम, वय, निवास-टोल, लेखक अथवा पात्रसँ सम्बन्ध, साक्षात्कारक तिथि आ स्थान, भाषा, कथन प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित

32 भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, “पूसा, बिहार क्षेत्रीय केन्द्र : परिचय”; संस्थानक आधिकारिक कालक्रम, https://iari.res.in/hi/introduction.php?div_id=33 (अवलोकन : १६ नवम्बर २०२६)।

अछि वा सुनल, आ प्रकाशनक अनुमति दर्ज हो। एके कथा अलग पीढ़ी, समुदाय आ लिंगक लोकसँ सुनल जाय। भिन्न पाठ भेटलासँ ‘गलत’ कहि कऽ काटल नहि जाय; ओकर स्वतन्त्र रूप सुरक्षित रखल जाय। सम्पादित पाठक संग ध्वनि-अभिलेख उपलब्ध होय तँ भावी अध्येताक लेल पुनःजाँच सम्भव होयत।[33]

दोसर काज वर्षवार संस्था-कालक्रम तैयार करब अछि। विद्यालयक स्थापना, शिक्षक-नियुक्ति, पुस्तकालयक आरम्भ, चीनी मिलक काम, पोखरिक खुदाई, मंदिर-पूजाक प्रारम्भ, बैंकक शाखा, थाना आ पंचायतक परिसीमनसँ जुड़ल घटना उपलब्ध कागजक संग क्रमबद्ध हो। प्रत्येक प्रविष्टि पर ‘लिखित अभिलेख’, ‘एक प्रत्यक्ष साक्षी’, ‘अनेक स्वतंत्र साक्षी’, ‘लोकश्रुति’ अथवा ‘लेखकक अनुमान’क स्पष्ट निशान देल जाय। ई विभाजन मनुष्यक सम्मानक क्रम नहि, प्रमाणक स्वरूपक भेद अछि।

तेसर काज समुदाय-केन्द्रित सर्वेक्षण अछि। स्त्री, मल्लाह, डोम, मुसहर, कुजरा, लोहार, धोबी, खेतिहर मजदूर, भूमिहीन, दस्तकार आ आन समुदायकेँ अपन इतिहासक सहलेखक बनाओल जाय। ‘ककर श्रमसँ गाम बनल?’क संग ‘ककरा सार्वजनिक निर्णयमे बजबाक अधिकार छल?’ सेहो पूछल जाय। सद्भावक वृत्तान्त वास्तविक बहिष्कार ढँकि सकैत अछि; केवल संघर्ष पर केन्द्रित वर्णन वास्तविक सौहार्दकेँ अदृश्य कऽ सकैत अछि। दुनू सम्भावनाक जाँच स्वतन्त्र साक्षीसँ हो।

चारिम काज संयुक्त स्थान-मानचित्र अछि। पुरान आ नव टोल, फेरौंजासँ सम्बन्ध, पोखरि, गाछी, अखाड़ा, विद्यालय, मंदिर, कुटी, हाट आ ऊखक पुरान परिवहन-पथ राजस्व-नक्शा तथा लोकस्मृतिसँ मिलाओल जाय। प्रत्येक स्थल पर अलग पीढ़ीक कथासभकेँ समय-सन्दर्भसहित रखल जाय। एहि सँ कृतिक ‘भाव-भूगोल’ ठोस शोध-पद्धतिमे विकसित होयत।

पाँचम काज संशोधित मुद्रणक कठोर पाठ-सम्पादन अछि। वर्ष, संख्या, नामक वर्तनी, कथकक पहचान, तथ्यक सन्दर्भ, अनुच्छेदक क्रम आ चित्रक विवरण जाँचल जाय। लोकबोलीक स्वाद बनल रहए, मुदा वर्तनीक आकस्मिक अस्थिरता आ स्रोतक अस्पष्टता दूर हो। मूल मैथिलीकेँ अनावश्यक रूपसँ कृत्रिम संस्कृतनिष्ठ बनायब वांछनीय नहि—एहि पोथीक प्राण ओकर सहज लोकभाषामे अछि।

१६. मैथिली भाषा, शैली आ परिमार्जनक सम्भावना

कृतिक महत्त्वपूर्ण भाषा-सम्बन्धी निर्णय मैथिलीमे लिखनाइ अछि। लोककंठसँ संकलित प्रसंगकेँ लोकक भाषासँ लिपिबद्ध करब ओकर सामाजिक परिवेशक सम्मान अछि। क्षेत्रीय सम्बोधन, दैनिक क्रिया, घरेलू सम्बन्ध, व्यंग्यक बोलचाल आ लोकशब्दक प्रयोगक कारण पात्रसभ कागजी छवि नहि बनैत। ‘मौसी’, अखाड़ाक पदावली, कुटीक भाषा आ ग्राम्य नाताक शब्द अलग-अलग सामाजिक जगतक चिह्न बनैत अछि।

33 Oral History Association, “OHA Core Principles”; मौखिक साक्षात्कारक सहमति, अभिलेखन आ संरक्षणक अनुशंसा।

सुसम्पादित संस्करणमे तीन भेद आवश्यक अछि। पहिल, स्थिर नामक वर्तनी—अरेड़, अरेरू, अनरेर—जतय भिन्नता स्वयं शोध-विषय अछि ओतय सभ रूप सुरक्षित रहए, मुदा अन्यत्र आकस्मिक परिवर्तन नहि हो। दोसर, संवादक बोली स्वाभाविक रहए, तथापि विवरणात्मक गद्यक विरामचिह्न, वाक्य-विन्यास आ अनुच्छेद विभाजन स्पष्ट हो। तेसर, बाहरी अकादमिक शब्द अनिवार्य हो तँ पहिल प्रयोग पर ओकर मैथिली अर्थ देल जाय; एहि सँ सामान्य पाठक आ शोधक दुनू लाभान्वित होथि।

‘इतिहास’क संग ‘गाथा’, ‘संस्मरण’, ‘लोकविश्वास’, ‘स्वानुभव’, ‘मौखिक साक्ष्य’ आ ‘क्षेत्र-अभिलेख’क सटीक शब्दसभक उपयोग भावी संस्करणक गम्भीरता बढ़ाओत। लेखक जे घटना देखलनि ओहि सन्दर्भमे स्वानुभव, पुरखासँ सुनल गाथामे लोकश्रुति, नामोत्पत्तिमे लोकव्युत्पत्ति आ लिखित कागज भेटल घटनामे दस्तावेजसँ पुष्ट—एहि भिन्न शब्दक उपयोग भाषा-संस्कारक अतिरिक्त ज्ञानक नैतिक अनुशासन अछि।

१७. संहत मूल्यांकन : स्थानीय स्मृतिक सार्वदेशिक महत्त्व

‘अरेड़ : गामक लोक इतिहास’क मौलिक योगदान ऐतिहासिक सर्वज्ञतामे नहि, इतिहास लिखबाक सामाजिक साहसमे अछि। लेखक औपचारिक इतिहासक बाहर परल व्यक्ति, स्थान आ स्मृतिकेँ सार्वजनिक पाठक केन्द्रमे बनबैत छथि। गाम एतय राजकीय आँकड़ा मात्रसँ नहि, लोकक सम्बोधन, विद्यालयक निर्माण, अखाड़ाक देह, हाटक स्वाद, मायक श्रम आ सामूहिक शोकसँ प्रकट होइत अछि। एहि बहुविध सामग्रीक कारण ई पोथी मिथिलाक स्थानीय संस्मरणात्मक गद्यक एक महत्त्वपूर्ण अध्ययन-सामग्री बनैत अछि।

साहित्यक स्तर पर सर्वाधिक सफल अंश ओ अछि जतय सामान्य व्यक्तिक अनुभव ठोस अछि—रेशमा मौसीक आगमन, रघु बाबूक हास्य, शिवदुलारी देवीक साहस, लेटर बमक सेवा आ विश्वम्भर झाक निधन पर शोकाकुल संस्थागत जीवन। एहि अंशसभमे लेखकक संवेदनशीलता पात्रक सम्मान करैत अछि, हुनका विशेषणक भीड़मे विलीन नहि करैत। बच्चा झा प्रथम आ बुद्धिनाथक दन्तकथासभक अलग साहित्यिक महत्त्व अछि—ई समाजक आत्मकल्पनाक रूपक अछि; एकरा कठोर तथ्य-समीक्षा बिना ऐतिहासिक निर्णय नहि मानल जाय।

कृतिक सीमा सेहो उल्लेखनीय अछि। ऐतिहासिक तिथि आ संख्यामे अन्तर, विशिष्ट दावाक अपर्याप्त सन्दर्भ, चमत्कार आ प्रमाणित घटनाक बीच रेखाक अस्थिरता, प्रमुख पुरुषसभक अनुपातमे स्त्री आ वंचित समुदायक कम स्वतन्त्र आवाज, तथा स्थाननाम आ प्राचीन यात्राक निर्भीक अनुमान—ई सभ गम्भीर आलोचनात्मक प्रश्न अछि। मुदा एहि सीमासभसँ कृतिक आधारभूत उपलब्धि नकारल नहि जा सकैत। उलटे एहि सभक स्पष्ट पहचान आगामी स्थानीय शोधक आधार बनैत अछि।

कृतिक स्थायी प्रश्न ‘अरेड़ कतेक प्रसिद्ध छल?’सँ व्यापक अछि: ‘अरेड़कैं बनबयमे ककरा सभक जीवन लागल आ ओहि जीवनसभक कोन स्मृति अगिला पीढ़ी लेल बचत?’ लेखकक व्यक्तिगत गाम-प्रेम जखन एहि सार्वजनिक प्रश्नक रूप ग्रहण करैत अछि तखन पोथी अपन स्थानीय सीमा अतिक्रमित करैत अछि। एकरा गामक अन्तिम इतिहास नहि, स्थानीय इतिहास लिखबाक महत्त्वपूर्ण आरम्भ कहनाइ एकर प्रति न्यायसंगत आलोचनात्मक आदर होयत।

१८. सन्दर्भ-सूची

मिश्र, कैलाश कुमार। २०२५। अरेड़ : गामक लोक इतिहास। प्रथम भाग। नव दिल्ली : पेन टु प्रिन्ट पब्लिशिंग एलएलपी। आइएसबीएन ९७८-९३-९२८७७-५२-०।

भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान। तिथि निर्दिष्ट नहि। “पूसा, बिहार क्षेत्रीय केन्द्र : परिचय।” भारतीय कृषि अनुसन्धान परिषद्। https://iari.res.in/hi/introduction.php?div_id=33 (अवलोकन : १६ नवम्बर २०२६)।

Oral History Association। तिथि निर्दिष्ट नहि। “OHA Core Principles।” https://oralhistory.org/oha-core-principles/ (अवलोकन : १६ नवम्बर २०२६)।

यूनेस्को। २००३। Convention for the Safeguarding of the Intangible Cultural Heritage। पेरिस : यूनेस्को। https://www.unesco.org/en/legal-affairs/convention-safeguarding-intangible-cultural-heritage (अवलोकन : १६ नवम्बर २०२६)।

‘बुकमेनिया’ : पाठ, समाज आ समालोचनात्मक विवेक

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक मैथिली समीक्षा-संग्रहक आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक ‘बुकमेनिया’ मैथिली कविता, उपन्यास आ सांस्कृतिक गद्य पर केन्द्रित बारह समीक्षात्मक लेखसभक संग्रह अछि। प्रस्तुत अध्ययनमे कृतिक सामाजिक आशय आ साहित्यिक रूप-विधानक बीच आलोचकक आवागमनकेँ परखल गेल अछि। स्त्री-अनुभव, जातीय अनुशासन, पारिवारिक सम्बन्ध, प्रवास, इतिहास-बोध आ अभिलेखीय प्रतिनिधित्व पुस्तकक प्रमुख चिन्ताक रूपमे उभरैत अछि। संग्रहक उपलब्धि सामाजिक संवेदनशीलता आ व्यापक पाठकीय संवादमे अछि; ओकर सीमा अनेक अवसर पर कथानक-सारक विस्तार, सैद्धान्तिक कसौटीक असमान प्रयोग आ ऐतिहासिक दावाक अपर्याप्त स्रोत-वर्गीकरणमे देखल जा सकैत अछि। एहि विवेचनक निष्कर्ष अछि जे साहित्यिक प्रतिबद्धताकेँ प्रमाण-शुचिता आ रूपात्मक निकटपाठसँ जोड़ल जाए, तखन ‘बुकमेनिया’क आरम्भ कएल संवाद अधिक फलदायी बनि सकैत अछि।

मुख्य शब्द : मैथिली आलोचना, पुस्तक-समीक्षा, स्त्री-विमर्श, आख्यान, जाति, पञ्जी, सामाजिक इतिहास

१. प्रस्तावना : समीक्षा-संग्रहक असल प्रश्न

‘बुकमेनिया’केँ मात्र बारह टा पुस्तकक प्रशंसा अथवा परिचय मानि लेब ओकर वास्तविक बनावटकेँ छोट करब होयत। एहि ग्रन्थमे कविता-पाठ, उपन्यासक कथानक-विवेचन, व्यक्तित्व-परिचय, सामाजिक सरोकार, मानवीय अधिकार, सांस्कृतिक चिन्ता, पाठकीय प्रतिक्रिया आ पञ्जी-इतिहासक आलोचनात्मक प्रश्न एक-दोसरासँ भेटैत अछि। लेखकक रुचि रचनाक अन्तर्वस्तु आ समाजक बीच सम्बन्ध बनयबामे स्पष्ट अछि। ओ रचनामे जीवनक ताप, वर्गगत विषमता, स्त्रीक स्थान, जातीय प्रतिबन्ध, प्रवास, विस्थापन आ लोकसंस्कृतिक निरन्तरताकेँ ताकैत छथि। एहि कारणेँ ई पुस्तक साहित्यक संग-संग समकालीन मिथिलाक

चिन्ताक एकटा दस्तावेज सेहो बनैत अछि। मुदा दस्तावेज आ सुसंगत साहित्यिक समीक्षा एके वस्तु नहि थिक। एहि दूनू रूपक सफल मिलन आ परस्पर टकराव, ईएह ग्रन्थक केन्द्रीय मूल्याङ्कन-बिन्दु अछि।[34]

समीक्षा दू स्तर पर पढ़ल जएबाक चाही। पहिल स्तर पर देखबाक अछि जे कैलाश कुमार मिश्र अपन चयनित कवि आ उपन्यासकारक रचनाकेँ केना बुझैत छथि। दोसर स्तर पर पूछबाक अछि जे हुनकर आलोचनात्मक भाषा, प्रमाण-विधान, निष्कर्ष आ पाठकीय संवाद स्वयं कतेक विश्वसनीय अछि। एहि दोसर प्रश्नकेँ छोड़ि देल जाए तँ समीक्षा केवल समीक्षकक विचारक पुनर्कथन बनि रहि जायत। तेँ एहि विवेचनमे संग्रहक सामाजिक संवेदनशीलताकेँ ओकर प्रमाणगत कमीसँ अलग राखि परखल गेल अछि। जतय लिखित पाठ प्रत्यक्ष सहारा दैत अछि, ओतय निर्णय दृढ़ अछि; जतय ग्रन्थक भीतरक संकेत मात्र उपलब्ध अछि, ओतय निर्णय सीमित अछि।

'बुकमेनिया'क नाममे पुस्तकप्रेमक सहज उत्कंठा सुनाइत अछि। मुदा एहिमे आलोचनाक एकटा उपयोगी सङ्कट सेहो छिपल अछि: पुस्तकसँ प्रेम करबाक अर्थ की ओकर प्रत्येक कथनपर सहमति जनाएब होयत? साहित्यिक निष्ठा लेखकक पक्ष लेबाक नाम अछि अथवा तर्क, पाठ आ संशयक आधार पर ओकरा कठिन प्रश्न पूछबाक साहस? 'बुकमेनिया'क श्रेष्ठ क्षण ओहि ठाम अछि जतय लेखक समाजक बनेल असमानताकेँ प्रश्न करैत छथि; कमजोर क्षण ओहि ठाम अछि जतय उत्साह आलोचनात्मक दूरीकेँ ओझराए दैत अछि।

२. ग्रन्थक वस्तुगत परिचय आ रचनात्मक विन्यास

मुद्रित प्रकाशन-विवरणक अनुसार पुस्तकक नाम 'बुकमेनिया', उपशीर्षक 'मैथिली समीक्षा-संग्रह', लेखक डॉ. कैलाश कुमार मिश्र, प्रकाशक नवारम्भ, प्रथम संस्करण २०२५ आ मूल्य २५० टाका अछि। प्रकाशन-विवरणमे ISBN 978-93-48495-59-4 अंकित अछि। विषय-सूचीमे तीन भाग आ कुल बारह मुख्य रचना अछि। एहि स्पष्ट विषय-विन्यासक कारण पाठक आरम्भे बुझि सकैत छथि जे अध्ययनक पहिल क्षेत्र कविता, दोसर उपन्यास आ तेसर विषयान्तर गद्यक रचना अछि।[35]

पहिल भाग 'कविता-संग्रह' अन्तर्गत 'घसल अठन्नी' आ मधुपक सार्वभौमिकता: एक मानवशास्त्रीय विवेचन, मुन्नी मधुक 'फुललोका', विनोद कुमार झाक 'सबाक कुसुम कामिनी' आ मुन्नी मधुक 'ककरा के दूस्त' अछि। दोसर भाग 'उपन्यास' अन्तर्गत चतुरानन मिश्रक 'कला', हेतुकर झाक 'ककरा ले अरजब हे', उषाकिरण खानक 'भामती', केदारनाथ चौधरीक 'करार', उषाकिरण खानक 'हसीना मंजिल' आ रवीन्द्र नारायण मिश्रक 'ठेठ परक मौलाएल गाछ' सम्मिलित अछि। तेसर भाग 'अन्यान्य'मे विश्वनाथ झाक

34 कैलाश कुमार मिश्र, बुकमेनिया: मैथिली समीक्षा-संग्रह (मधुबनी: नवारम्भ, २०२५)।

35 मिश्र, बुकमेनिया, 'विषय-सूची' आ प्रकाशन-विवरण।

‘सुन्दरी: निहुरि फूकू आगि’ आ गजेन्द्र ठाकुरक ‘दूषण पञ्जी’क सांस्कृतिक योगदानपर दीर्घ विवेचन रखल गेल अछि।

एहि विन्यासमे एकटा अविलम्ब देखल जएबाक विशेषता अछि: दोसर भागक आकार अपेक्षाकृत पैघ अछि, मुदा तेसर भागक अन्तिम रचना सेहो पर्याप्त विस्तृत अछि। एहि सँ ग्रन्थक भार मात्र विधागत विभाजन पर नहि, लेखकक किछु विशेष सामाजिक-सांस्कृतिक सरोकार पर सेहो पड़ैत अछि। किछु समीक्षाक बाद ‘पाठकक प्रतिक्रिया’ शीर्षकसँ अलग-अलग व्यक्तिक टिप्पणी सेहो राखल गेल अछि। एहि प्रतिक्रियासभक उपस्थितिसँ पुस्तकक सम्प्रेषण-इतिहासक संकेत भेटैत अछि; मुदा प्रतिक्रिया, आलोचकक स्वविवेचन आ स्वतन्त्र समीक्षात्मक साक्ष्यक बीच भेद स्पष्ट राखब आवश्यक अछि।

३. ‘लेखकीय’ : आलोचकक आत्मस्थितिक अर्थ

पुस्तकक ‘लेखकीय’ संग्रहक पद्धति बुझबाक प्रमुख कुञ्जी अछि। लेखक मैथिली पढ़बाक आ मैथिलीमे लिखबाक अपन यात्राकेँ अपन शैक्षिक तथा व्यावसायिक जीवनसँ जोड़ैत छथि। ओ स्पष्ट करैत छथि जे हुनकर मूल अध्ययन-रुचिमे मानवविज्ञान, मानवाधिकार, लोकविद्या आ सामाजिक प्रश्न सम्मिलित रहल अछि। इएह कारण अछि जे साहित्यिक कृति हुनका लेल केवल भाषिक सौन्दर्यक विषय नहि, लोक-व्यवहार आ सामाजिक रचनाक परीक्षणक अवसर सेहो बनैत अछि। ओ अपन समीक्षात्मक लेखनक प्रेरणामे साहित्यिक सम्पर्क, प्रोत्साहन आ पाठकीय सम्बन्धक चर्चा करैत छथि। एहि आत्मस्वीकारोक्तिक कारण पाठककेँ आलोचकक स्थिति बुझबाक एकटा दुर्लभ अवसर भेटैत अछि।[36]

एहि पृष्ठभूमिक लाभ ई अछि जे उपन्यासक पात्र साहित्यिक आभूषण मात्र नहि रहैत छथि; ओहि पात्रक पाछाँ विवाह-व्यवस्था, जाति, जनजीवन, धर्म, भौगोलिक गमनागमन आ आर्थिक सम्बन्ध देखबाक आग्रह पैदा होइत अछि। कविता पढ़ैत काल सेहो लेखक भावोच्छ्वाससँ अधिक सामाजिक आचरणकेँ महत्त्व दैत छथि। मुदा एहि प्रवेशद्वारक सीमा सेहो अछि। मानवशास्त्रीय प्रश्न कविता अथवा उपन्यासक प्रत्येक कलात्मक प्रश्नक विकल्प नहि भऽ सकैत अछि। कथा कहबाक क्रम, दृष्टिबिन्दु, भाषिक बुनावट, मौन, रूपक, पात्रक अन्तर्विरोध आ अर्थक बहुलता—एहि सभकेँ केवल सामाजिक सन्देशमे बदलि देब साहित्यिक रूपकेँ क्षति पहुँचा सकैत अछि।

अतएव ग्रन्थक समीक्षा करैत समय लेखकक सामाजिक प्रतिबद्धताकेँ स्वीकार करब आ तकर संग कला-संरचनाक स्वतन्त्रताकेँ जाँचब, दूनू आवश्यक अछि। ‘लेखकीय’ समीक्षाक विश्वसनीय आरम्भ प्रदान करैत

36 मिश्र, बुकमेनिया, ‘लेखकीय’।

अछि, किन्तु पद्धतिक सर्वथा सिद्ध प्रमाण नहि। लेखकक घोषित रुचि आ प्रत्येक लेखमे सम्पन्न विश्लेषणक बीच दूरी कतेक अछि—एहि प्रश्न पर आगूक विवेचन आधारित अछि।

४. कविता-समीक्षाक पहिल अध्याय : 'घसल अठन्नी' आ मधुपक सार्वभौमिकता

पहिल लेख अपन शीर्षकेमे 'मानवशास्त्रीय विवेचन' कहैत अछि। एहि सँ लेखकक पठन-दिशा स्पष्ट भऽ जाइत अछि: मधुपक कविता सामाजिक चोट, मानवीय संवेदना, समानता, स्त्री-अनुभव आ लोकजीवनक पाठ थिक। लेखमे विविध कवितांशक सहारा लऽ कऽ हिंसा, शोषण, गरिमा, दरिद्रता, सामाजिक असमानता आ मानवीय सम्बन्धक चर्चा कएल गेल अछि। खास कऽ 'घसल अठन्नी'क बिम्बकेँ उपयोग आ अवमूल्यनक सामाजिक अनुभवसँ जोड़बाक प्रयत्न साहित्यिक रूपसँ फलदायी अछि। घसल मुद्रा अपन विनिमय-मूल्यक प्रश्न जगबैत अछि; तकर तुलना मनुष्यक सामाजिक हैसियतसँ करब उपेक्षाक अर्थ खोलबाक एकटा सम्भावित पद्धति अछि।[37]

लेखक कविता-सामग्रीकेँ एहन नैतिक संवेदनाक रूपमे पढ़ैत छथि जाहिमे वंचित जनक पीड़ा आ सत्ता-सम्बन्धक आलोचना भेटैत अछि। स्त्रीक देह, श्रम आ प्रतिष्ठा सम्बन्धी प्रसंग पर ओ विशेष ठहरैत छथि। एहि स्तर पर लेख प्रशंसनीय अछि, कारण ओ कविताकेँ केवल छन्द, अलंकार आ भावुकताक सीमामे नहि बाँधैत अछि। लेखक प्रश्न करैत छथि जे सामाजिक व्यवहार केकरा गरिमा दैत अछि आ केकरा साधन बनाकऽ छोड़ि दैत अछि। एहि प्रश्नसँ कविताक लोकधर्मी ऊर्जा उजागर होइत अछि।

मुदा 'सार्वभौमिकता' एकटा बहुत पैघ आलोचनात्मक दावा अछि। कोनो कवितामे सामाजिक पीड़ा भेटल मात्रसँ ओकर अनुभव बिना ऐतिहासिक आ भाषिक मध्यस्थताक सर्वत्र एकरूप होयत, ई सिद्ध नहि होइत। एकर लेल बिम्बक संरचना, सम्बोधनक प्रकार, स्थानीय शब्दावली आ रूपान्तरणक सम्भावना पर विशिष्ट विश्लेषण आवश्यक अछि। लेखमे उद्धरणक प्रचुरता अछि, मुदा अनेक ठाम कविता उद्धृत करबाक बाद तकर कलात्मक तर्क पर अपेक्षित ठहराव कम अछि। कविताक कथ्य आ कविताक उपलब्धि एक-दोसराक पूरक अछि, एक-दोसराक पर्याय नहि।

एहि लेख केर अन्तमे समाहित 'पाठकक प्रतिक्रिया' लेखकक लेखन पर पाठकीय उत्साह देखबैत अछि। मुदा ओ प्रतिक्रिया स्वतन्त्र समीक्षा अथवा मूल कविता-संग्रहक प्रमाण नहि मानल जएबाक चाही। विशेषतः प्रशंसात्मक टिप्पणी सभक पंक्तिकेँ विश्लेषणक निष्कर्षक समर्थनमे रखबाक बजाय साहित्यिक

37 मिश्र, बुकमेनिया, 'घसल अठन्नी' आ मधुपक सार्वभौमिकता: एक मानवशास्त्रीय विवेचन।

सार्वजनिकताक अभिलेख रूपेँ राखल जाए तँ वस्तुनिष्ठता अधिक रहत। तथापि पहिल लेख संग्रहक बौद्धिक दिशा स्थापित करैत अछि: साहित्यिक सौन्दर्यक संग सामाजिक न्यायक प्रश्न जोड़बाक अविरत इच्छा।

५. ‘फुललोका’ : स्त्रीक स्वर, आधुनिक माध्यम आ प्रतिरोधक भाषा

मुन्नी मधुक ‘फुललोका’ पर विवेचनमे लेखक कवयित्रीक सार्वजनिक उपस्थिति, सामाजिक माध्यम पर रचनाक प्रसार, स्त्री-अनुभव आ पुरुषप्रधान व्यवहारपर कविताक चोटकेँ विशेष महत्त्व दैत छथि। एहि लेखमे कविताक लेखन-परिस्थिति आ कविताक कथ्यक बीच एकटा गतिशील सम्बन्ध बनैत अछि। मैथिली कविता केवल मुद्रित पुस्तकक भीतर बन्द नहि अछि; डिजिटल माध्यम पर पाठ, पाठक, बहस आ तत्काल प्रतिक्रिया एकर ग्रहण-प्रक्रियाकेँ बदलि रहल अछि। पुस्तकक आरम्भिक चर्चा एहि परिवर्तनकेँ पहिचानैत अछि।[38]

विषयगत स्तर पर आलोचक स्त्रीक स्वत्व, देहपर अधिकार, हिंसाक प्रतिकार आ सामाजिक दोहरापनक प्रश्न उठबैत छथि। कवितासभमे प्रत्यक्ष सम्बोधन, व्यंग्य, सवाल आ अस्वीकारक स्वरक प्रति हुनकर ध्यान प्रशंसनीय अछि। एहन कविता पढ़ैत समय मात्र ‘स्त्री-वेदना’ कहब पर्याप्त नहि; देखबाक होइत अछि जे कवयित्री केकरा सम्बोधित करैत छथि, भाषा कोना सत्ता-सम्बन्ध उलटैत अछि, तथा व्यक्तिगत अनुभव सामूहिक विरोधमे केना परिणत होइत अछि। लेख एहि दिशामे अनेक प्रवेशद्वार खोलैत अछि।

तथापि सामाजिक साहसकेँ साहित्यिक सफलता मानि लेबाक जोखिम एतय सेहो उपस्थित अछि। तर्कपूर्ण समीक्षा पूछत जे आक्रोशक भाषिक गठन कतेक मौलिक अछि, एक कवितासँ दोसर कवितामे स्वरक परिवर्तन कोना होइत अछि, तथा प्रत्यक्ष वक्तव्य आ सांकेतिक अभिव्यक्तिक अनुपात की अछि। लेखक अनेक कवितांश लैत छथि, किन्तु समूचा संग्रहक कविताक्रम, ध्वनि-संरचना आ अप्रत्यक्ष अर्थसृजन पर अलग, सुसंगत अध्ययन अपेक्षित रहि जाइत अछि।

आलोचकक दृष्टिमे कविता सामाजिक जागरणक साधन बनैत अछि; ई महत्त्वपूर्ण चिन्ता अछि। मुदा कविता कखनो-कखनो प्रश्नकेँ अनुत्तरित छोड़ैत अछि, विरोधाभासकेँ खुला राखैत अछि आ पाठककेँ असुविधामे रखैत अछि। एहन साहित्यिक अनिश्चयकेँ सेहो उपलब्धि मानबाक अवसर एहि लेखमे कम अछि। तइयो ‘फुललोका’ पर लेख ‘बुकमेनिया’क भीतर स्त्री-विमर्श आ बदलैत पाठकीय माध्यमक एकटा महत्त्वपूर्ण साक्ष्य अछि।

38 मिश्र, बुकमेनिया, ‘मुन्नी मधुक कविता-संग्रह फुललोका’।

६. 'सबाक कुसुम कामिनी' : राजनीतिक प्रतिवाद आ कविता-पंक्तिक निकटपाठ

विनोद कुमार झाक 'सबाक कुसुम कामिनी' पर केन्द्रित रचना संग्रहक ओहि लेखसभमे सँ अछि जाहिमे मूल कविताक पृष्ठ-संख्या सहित अनेक स्थान पर उदाहरण देल गेल अछि। आलोचक साहित्यक सामाजिक दायित्व, उपेक्षित समुदाय, सार्वजनिक जीवनक असमानता आ सांस्कृतिक बहुलताक दृष्टिसँ काव्य-संसार पर विचार करैत छथि। कविताक विभिन्न अंशक माध्यमसँ लोक, भूगोल, इतिहास, श्रम, धर्म आ सत्ता-विमर्शक परस्पर सम्बन्ध देखाबय चाहैत छथि। कवितामे सार्वजनिक नैतिकता आ मानवीय बराबरीक आग्रहकेँ पहिचानब एहि लेख केर उल्लेखनीय उपलब्धि अछि।[39]

एहि लेख केर एकटा मजबूत पक्ष मूल काव्य-पाठक निरन्तर उपस्थिति अछि। किछु स्थान पर विशेष कविता आ मूल संग्रहक पृष्ठ-सन्दर्भक संग समीक्षक अपन निष्कर्ष जोड़ैत छथि। फलतः पाठक चाहथि तँ आलोचकक व्याख्याक मूलाधार अनुगमन कऽ सकैत छथि। ई पद्धति कविता-समीक्षाकेँ अभिरुचिक कथन मात्र बनि रहबासँ बचा सकैत अछि।

मुदा उदाहरणक संख्या आ व्याख्याक गहराइ एके वस्तु नहि। अनेक उद्धरणक बाद निष्कर्ष सामाजिक-सांस्कृतिक सदाशयताक सामान्य प्रतिपादनमे बदलि जाइत अछि। अलग-अलग कविता भिन्न कथ्य, लय, रूपक अथवा व्यंग्यक पद्धति अपनबैत होयत; ओहि भिन्नताक तुलना अधिक विस्तृत होइत तँ कविता-संग्रहक सौन्दर्यात्मक विशेषता स्पष्ट होइत। 'सबाक' शब्दक समावेशी राजनीति आ कविताक वस्तुनिष्ठ कलात्मक उपलब्धिक बीच जाँच-योग्य दूरी कायम रखबाक आवश्यकता एहि प्रसंगमे बहुत बेसी अछि।

एहि लेखसँ एकटा पैघ प्रश्न उभरैत अछि: सामाजिक समावेशनक नैतिक घोषणा अपने-आपमे पर्याप्त अछि, अथवा कविता ओकरा विशिष्ट कल्पना-लोक आ जटिल भाषिक सम्बन्धमे रूपान्तरित करैत अछि? कैलाश कुमार मिश्र पहिल प्रश्न पर दृढ़ छथि; दोसर प्रश्न पर अधिक निकटपाठक अवकाश अछि। एतय आलोचनाक कमजोरी सामाजिक चिन्ताक अभाव नहि, कलात्मक तहक विश्लेषणक अपेक्षाकृत कम विस्तार अछि।

39 मिश्र, बुकमेनिया, 'सबाक कुसुम कामिनी'।

७. 'ककरा के दूस्त' : प्रतिरोध, सामाजिक संरचना आ काव्यक खुला अर्थ

मुन्नी मधुक दोसर संग्रह 'ककरा के दूस्त' पर लेख पहिल 'फुललोका' विवेचनसँ मिलैत-जुलैत होइतो अधिक तीक्ष्ण सामाजिक प्रतिरोधक पाठ प्रस्तुत करैत अछि। लेखक कविता मार्फत स्त्रीपर लादल नियम, हिंसा, अपमान, परिवारक भीतर सत्ता, धार्मिक अथवा सांस्कृतिक बहाना आ आधुनिक सार्वजनिक जीवनक असमान अवसरक चर्चा करैत छथि। स्त्रीकेँ केवल दया-पात्र बनबैत नहि, प्रश्न करबाक आ इनकार करबाक समर्थ स्वर रूपमे पढ़ब एहि लेख केर महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि।[40]

कवितासभक सम्बोधन-शैली, अस्वीकारक वाक्य-विन्यास आ प्रत्यक्ष प्रश्नक सहारा लऽ कऽ रचनामे विरोधक ऊर्जा उपस्थित अछि—एहि बातपर समीक्षक बेर-बेर लौटैत छथि। संगहि समाजक दोगलापन आ साहित्यक नैतिक जिम्मेदारीक प्रश्न उठैत अछि। पठनक एहन ढंग मिथिलाक पारिवारिक रीतिकेँ स्वतः निर्दोष मानबाक प्रवृत्तिक विरोध करैत अछि। परम्पराक भीतर शक्तिक वितरण कोना होइत अछि, ई प्रश्न लेखकेँ प्रासंगिक बनबैत अछि।

एहि रचनाक सीमा सेहो 'फुललोका'सँ तुलनीय अछि। कविताक तीव्र घोषणात्मकताकेँ मात्र साहसक कसौटी पर प्रशंसा करब पर्याप्त नहि। एकर भाषिक तनाव, बिम्बक पुनरावृत्ति, विडम्बनापूर्ण मोड़, पाठकीय सम्भावना आ अन्तर्विरोध पर चर्चा कएल जाए तँ मुन्नी मधुक दूनू संग्रहक बीच काव्यात्मक विकासक वास्तविक मानचित्र बनि सकैत छल। 'फुललोका' आ 'ककरा के दूस्त' पर दुइ अलग लेख पुस्तकमे अछि, मुदा दूनूक अन्तर्सम्बन्धपर एकटा तुलनात्मक उपसंहार नहि रहब अनुभूत कमी थिक। ताहिमे लेखकक चयनक भीतरसँ उभरैत स्त्री-साहित्यक एकटा समग्र विवेचनक अवसर छूटि जाइत अछि।

८. 'कला' : उपन्यासक ऐतिहासिक पुनर्पाठ आ समाजक कठोर व्यवस्था

चतुरानन मिश्रक 'कला' पर लेख संग्रहक उपन्यास-विवेचनक आरम्भ अछि। कैलाश कुमार मिश्र कृतिमे बालविवाह, पारिवारिक आ सामाजिक दबाव, स्त्रीक भविष्य, आर्थिक स्थिति आ परिवर्तनशील मानवीय सम्बन्धक बिन्दु पकड़ैत छथि। नायिका कला आ महेश बाबू इत्यादि पात्रक परिप्रेक्ष्यमे लेख समाजक

40 मिश्र, बुकमेनिया, 'ककरा के दूस्त'।

लिखित-अलिखित नियमक ओर ध्यान खींचैत अछि। आलोचकक दृष्टिमे उपन्यास मानवीय पीड़ा आ परम्परागत समाजव्यवस्थाक सीमाकेँ देखबाक साधन बनैत अछि।[41]

एहि लेख केर विशेष महत्त्व ओकर ऐतिहासिक चेतनामे अछि। मूल कृतिक प्रकाशन-सम्बन्धी विवरणक चर्चा करैत लेखक ई प्रश्न खोलैत छथि जे समय बदलला पर पुरान उपन्यासकेँ पुनः केना पढ़ल जाए। कृतिक अलग-अलग संस्करणक उल्लेख सेहो अछि। एहि सँ कृतिक एकटा पुस्तक-इतिहास सामने अबैत अछि, यद्यपि संस्करण-विवरणक स्वतन्त्र ग्रन्थसूची-आधारित सत्यापन एहि समीक्षा-संग्रहमे व्यवस्थित रूपेँ प्रस्तुत नहि कएल गेल अछि। अध्ययनक दृष्टिसँ 'लेखकक देल विवरण' आ 'इतिहासक पुष्ट तथ्य'क बीच ई भेद सदैव अपेक्षित रहत।

उपन्यासक कथानकक विस्तृत पुनर्कथन पढ़ैत समय पाठककेँ पात्रक संयोग, निर्णय आ सामाजिक परिस्थिति बुझबामे सहायता भेटैत अछि। मुदा पुनर्कथन आ साहित्यिक विश्लेषणक अनुपात बराबर नहि अछि। कथा केकर दृष्टिसँ कहल गेल अछि, समयक प्रवाह केना रचल गेल अछि, नायिकाक अन्तर्मनकेँ की भाषा भेटैत अछि, आ कथा-संघर्षक समाधान उपन्यासक आरम्भिक सम्भावनाक संग संगत अछि कि नहि—एहि प्रश्नसभ पर केन्द्रित उपशीर्षक रहितथि तँ विमर्श सघन होइत।

लेखक बौद्धिक आ नैतिक उत्साहसँ उपन्यासक आगामी विस्तारक कल्पना करैत छथि। ई पाठकीय सहभागिताक आकर्षक रूप अछि; किन्तु मूल उपन्यास आ आलोचकक सम्भावित कथा-विस्तारक बीच स्पष्ट सीमा होयबाक चाही। एहि लेख केर बादक 'पाठकक प्रतिक्रिया' खण्डमे अधिकांशतः अभिनन्दनमूलक स्वर अछि। एहि सामग्रीकेँ साहित्यिक स्वागतक साक्ष्य मानल जा सकैत अछि, पर समीक्षाक निर्णयक स्वतन्त्र पुष्टिकरण नहि। 'कला'क अध्ययनसँ 'बुकमेनिया'क महत्त्व आ कमी दूनू एक संग देखबामे अबैत अछि: सामाजिक इतिहासक प्रश्न गम्भीर अछि, पर कलाक निकट विश्लेषण आर अधिक कठोर बनल रहि सकैत छल।

९. 'ककरा ले अरजब हे' : परिवार, आधुनिकता आ पीढ़ीगत तनाव

हेतुकर झाक 'ककरा ले अरजब हे' पर लेख आकारमे अपेक्षाकृत संक्षिप्त, मुदा वस्तुमे घना अछि। समीक्षक श्रीकान्त, जया आ परिवारक अन्य सम्बन्धक माध्यमसँ शिक्षा, अभियान्त्रिकी-पेशा, शहर-गामक दूरी, वैवाहिक जीवन, संयुक्त परिवार आ जातीय-सामाजिक परम्पराक टकरावक चर्चा करैत छथि।

41 मिश्र, बुकमेनिया, 'कला: मैथिली उपन्यास'।

कथानक-परिस्थितिकेँ पढ़ैत लेखक बार-बार पूछैत छथि जे आधुनिक शिक्षा अपन आपमे मनुष्यकेँ सामाजिक रूपसँ मुक्त करैत अछि कि पुरान संस्कार नब रूपमे फेर लौटैत अछि।[42]

जया आ श्रीकान्तक सम्बन्ध पर चर्चा करैत समय स्त्रीक स्थानकेँ केवल घरेलू भूमिकाक रूपमे नहि, निर्णय आ सहभागिताक प्रश्नक रूपमे देखबाक सम्भावना बनैत अछि। एतय विवाह दूनू व्यक्तिक निजी प्रसंग नहि रहि परिवार, जाति, वर्ग, रोजगार, प्रतिष्ठा आ संस्कृतिक अदृश्य दबावक संग आबद्ध होइत अछि। समीक्षक एहि अनेक स्तरकेँ रेखांकित करैत छथि, जे एहि लेख केर उपलब्धि अछि।

लेखकक विवेचनक अन्तिम भागमे सामाजिक उत्तरदायित्व, आर्थिक उपार्जन आ आधुनिक व्यक्तिक नैतिक प्रश्न विशेष रूपेँ सामने अबैत अछि। एहि निष्कर्षक बल ई अछि जे उपन्यासकेँ केवल प्रेमकथा अथवा दाम्पत्य-कथा नबनि सामाजिक व्यवस्था पर विचारक क्षेत्र मानल गेल अछि। तथापि पात्रसभक भीतरक विरोधाभास आ कथाक संधान पर प्रश्न कम भेटैत अछि। श्रीकान्तक विचार सामाजिक भाषण छी कि उपन्यासक कलात्मक विडम्बना, एकर निर्णय लेल पात्रवाणी आ कथावाचकक स्वर अलग कऽ परखब आवश्यक छल। एहि भेदक बिना उपन्यासमे कहल बातकेँ सीधा उपन्यासकारक मत मानि लेबाक संकट उपस्थित होइत अछि।

१०. ‘भामती’ : प्रेम, ज्ञान आ अदृश्य स्त्री-श्रमक प्रश्न

उषाकिरण खानक ‘भामती’ पर ‘अविस्मरणीय प्रेमकथा’ शीर्षकसँ कएल विवेचन संग्रहक आकर्षक नारीकेन्द्रित अध्ययनसभमे सँ अछि। आलोचक वाचस्पति मिश्र आ भामतीक पारम्परिक कथा-संसार, ज्ञान-साधना, स्नेह, समर्पण, जीवनक विलम्बित मान्यता आ स्त्रीक अनुभवकेँ एक संग रखैत छथि। ई समीक्षा उपन्यासमे इतिहासक स्मृति आ कल्पनात्मक पुनर्रचनाक सम्बन्ध बुझबाक अवसर दैत अछि। भामतीकेँ व्यक्ति रूपमे देखबाक आग्रह, केवल विद्वान पुरुषक जीवनक परिशिष्ट मानबाक विरुद्ध, विशेष महत्त्व रखैत अछि।[43]

एहि प्रसंगक गम्भीर प्रश्न ई अछि जे ज्ञानक सार्वजनिक कीर्ति कोन श्रमपर टिकल अछि, आ ओहि श्रमक कतेक भाग इतिहासमे अदृश्य रहि जाइत अछि। आलोचक भामतीक प्रेम, धैर्य आ योगदानकेँ उच्च स्थान दैत छथि। एहि पाठक नैतिक आकर्षण सहज अछि। मुदा समर्पणक प्रशंसा करैत समय ओकर सामाजिक मूल्यक परीक्षा सेहो आवश्यक अछि। स्त्रीक जीवन केवल त्यागक महिमा बनि रहि जाए, तँ आलोचना अनजाने पितृसत्तात्मक आदर्शकेँ पुनः पुष्ट कऽ सकैत अछि। भामतीक स्वतन्त्र इच्छा, ज्ञानलाभक अधिकार,

42 मिश्र, बुकमेनिया, ‘ककरा ले अरजब हे’।

43 मिश्र, बुकमेनिया, ‘भामती: अविस्मरणीय प्रेमकथा’।

अप्रकट आकांक्षा आ मौनक अर्थ—एहि सभकेँ पूछब भावनात्मक प्रशंसाक विरुद्ध नहि, बरु ओकर गहिराइ बढ़ेनिहार कार्य अछि।

समीक्षा-लेखमे अनेक स्थान पर कथाक प्रभाव आ पात्रक चरित्रनिर्माणक वर्णन अछि। एकर संग कथावाचकक दृष्टिबिन्दु, ऐतिहासिक आख्यान आ आधुनिक उपन्यासक अन्तर, तथा रचनामे ज्ञान आ प्रेमक रूपक-संरचना पर दीर्घ निकटपाठ होइत तँ ई विवेचन आर प्रभावी बनैत। ‘भामती’क अध्ययन ‘बुकमेनिया’क भीतर स्त्री-सम्मानक विचारकेँ गहिर करैत अछि; पर सम्मान आ स्वायत्तता एके नहि, एहि भेदकेँ अन्तिम निष्कर्ष धरि निरन्तर राखब आवश्यक अछि।

११. ‘करार’ : आख्यान-विस्तार, राजनीतिक इतिहास आ सन्दर्भक जोखिम

केदारनाथ चौधरीक ‘करार’ पर लेख संग्रहक सबसँ विस्तृत उपन्यास-चर्चासभमे सँ एक अछि। समीक्षक कथानकक अनेक स्तर, राजशेखर आ अङ्गिला-संबन्धी प्रसंग, सामाजिक-राजनीतिक अव्यवस्था, सत्ता, हिंसा, भूगोल, आवागमन आ बदलैत समयक ब्योरा प्रस्तुत करैत छथि। किताबमे दरभंगा आ सीतामढ़ी जकाँ मिथिलाक स्थान, अन्य भारतीय क्षेत्र आ देश-बाहरक प्रसंग उपन्यासक कथासंसारक विस्तारक रूपमे सामने अबैत अछि। समीक्षकक मुख्य रुचि कथामे जीवन-जगतक बहुलता देखबामे अछि।[44]

एहि लेख केर बल ओकर ध्यानक विस्तार अछि। ओ उपन्यासक छोट-बड़ पात्र, घटना आ स्थानक बीच सम्बन्ध खोजबाक प्रयत्न करैत छथि। अनेक प्रसंगमे व्यक्तिक सामाजिक स्थिति आ भूगोलक चर्चाक संग कथाक समयबोध पर टिप्पणीक आधार भेटैत अछि। किछु खण्डमे कथ्यकेँ मूल पाठसँ उद्धृत कऽ देखाबयक प्रयत्न सेहो अछि। एहि कारण पाठककेँ उपन्यासक सामाजिक विस्तारक प्रारम्भिक मानचित्र भेटैत अछि।

मुदा पैघ कथाविस्तार आलोचकक प्रमुख चुनौती सेहो बनैत अछि। जखन बहुत घटनाक क्रमबद्ध पुनर्कथन होइत अछि, तखन आलोचनाक केन्द्रीय प्रश्न पाछाँ पड़ि सकैत अछि। उपन्यासक आरम्भ, मोड़, चरम क्षण, अलग-अलग पात्रक कथन-शैली आ अन्तक अर्थक नियोजित जाँचकेँ कथानक-सारसँ अलग स्थापित करब चाही। इतिहासपर आधारित अथवा इतिहाससँ मिलैत-जुलैत कथा-प्रसंगकेँ प्रत्यक्ष ऐतिहासिक घटना मानि लेबाक जगह उपन्यासक भीतरक कल्पनात्मक रूपान्तरण मानि पढ़ब अधिक सुरक्षित पद्धति अछि।

विवेचनक उपसंहारमे लेखक सन्दर्भ-समृद्ध कथाजगतक रूपमे ‘करार’केँ देखैत छथि। एहि निष्कर्षमे विचारशील रुचि अछि, पर अनुभवजन्य भूगोल, ऐतिहासिक संकेत आ उपन्यासक आन्तरिक सत्यक बीच

44 मिश्र, बुकमेनिया, ‘करार’।

सीमा स्पष्ट करब चाही। ई लेख पाठककेँ कृतिक विस्तार देखबैत अछि; हुनका अध्ययनकेँ अधिक परिपक्व बनयबाक लेल कथा-कौशलक प्रश्न पूछबाक आमन्त्रण सेहो दैत अछि।

१२. 'हसीना मंजिल' : विभाजन, स्मृति आ मनुष्यता

उषाकिरण खानक 'हसीना मंजिल' पर लेखमे ऐतिहासिक विभाजन, सांप्रदायिक दूरी, प्रेम, पारिवारिक स्मृति आ मनुष्यक व्यथा एक-दोसरामे गुँथल भेटैत अछि। समीक्षक उपन्यासक सामाजिक पृष्ठभूमिकेँ महत्त्व दैत छथि आ संकेत करैत छथि जे भारतीय उपमहाद्वीपक राजनीतिक बदलाब निजी जीवनक निकटतम सम्बन्धकेँ प्रभावित करैत अछि। हसीना, उसमान आ अन्य पात्रक प्रसंगमे घर, सम्बन्ध, भरोसा आ असुरक्षाक कथा बनैत अछि।[45]

एहि उपन्यास पर विचार करबाक समय 'मुसलमान पात्र'केँ मात्र समुदाय-प्रतिनिधि मानि पढ़ब एकटा त्रुटि होएत। पात्रक विशिष्ट दुविधा, स्मृति आ व्यक्तित्वक जटिलता बुझब साहित्यक स्वतंत्र कार्य अछि। कैलाश कुमार मिश्र मानवतावादी दृष्टिसँ सम्बन्धक गरिमा देखैत छथि; एहि कारण विभाजनकारी राजनीति विरुद्ध हुनकर नैतिक स्वर स्पष्ट सुनाइत अछि। साहित्यक संवेदनात्मक प्रयोजनक दृष्टिसँ ई उल्लेखनीय अछि।

तथापि ऐतिहासिक प्रसंगक व्याख्या करैत समय अलग-अलग कालखंड, भू-राजनीतिक घटना आ उपन्यासक कल्पनात्मक निर्माणकेँ अलग राखब अत्यावश्यक अछि। लेखकक आरम्भिक विवेचनमे विभाजन आ बांग्लादेशसम्बन्धी पृष्ठभूमिक उल्लेख अछि, मुदा उपन्यासक कथामे स्मृति आ घटनाक काल-गठन कोना रचल गेल अछि, एहि पर पृथक विश्लेषण अधिक उपयोगी होइत। अन्यथा उपन्यासक साहित्यिक जटिलता इतिहासक नैतिक उपदेशमे रूपान्तरित भऽ जाइत अछि।

ई रचना संग्रहक ओहि पक्षकेँ प्रकट करैत अछि जाहिमे लेखक सामुदायिक पहिचानसँ ऊपर मानवीय सम्बन्धक खोज करैत छथि। मुदा नैतिक मनुष्यता आ साहित्यिक बहुवचनता दूनूक सम्मान करब जरूरी अछि: दया अथवा सद्भावक घोषणासँ पात्रक अनुभवक पूरा तनाव समाप्त नहि भऽ जाइत।

१३. 'ठेठ परक मौलाएल गाछ' : प्रवास, जड़ि आ पारिवारिक दूरी

रवीन्द्र नारायण मिश्रक 'ठेठ परक मौलाएल गाछ' पर लेख बदलैत मैथिल जीवनक एकटा विशिष्ट अनुभव उठबैत अछि: गाम छोड़ि दूर देशमे बसब, बूढ़ माता-पिताक चिन्ता, पारिवारिक अनिश्चितता, सामाजिक प्रतिष्ठाक मोह आ आकस्मिक संकटमे सम्बन्धक असल परीक्षा। समीक्षक उपन्यासमे विदेशगमन, अमेरिका-

45 मिश्र, बुकमेनिया, 'हसीना मंजिल'।

संबन्धी प्रसंग, दिल्लीक आवागमन तथा महामारीकालक बाधाक उल्लेख करैत छथि। एहि सँ आधुनिक प्रवासक चमकदार सपना आ घरक भीतरक एकाकीपन एक-दोसराक सम्मुख अबैत अछि।[46]

एहि लेख केर महत्त्व ओकर पारिवारिक नैतिक प्रश्नमे अछि। पैसा, नौकरी आ सफलता व्यक्तिक उपलब्धि भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा सँ सम्बन्धक शारीरिक-सामयिक उपस्थिति सुनिश्चित नहि होइत। परिवारक वृद्ध सदस्य, घरक स्मृति आ विपत्तिक समयक असुरक्षा एहि अन्तरकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि। समीक्षक एहि द्वन्द्वकेँ बुझबाक प्रयास करैत छथि आ उपन्यासकेँ सरल प्रवासी-रोमांस नहि मानैत छथि।

'मौलाएल गाछ'क रूपक पर अधिक निकट विचार सम्भव छल। गाछक जड़ि, ठेठ भूमि, पराया वातावरण, विकास आ मुरझाएब—ई सभ एकटा समृद्ध अर्थ-शृंखला बना सकैत अछि। लेखमे कथाक विवरण पर्याप्त अछि, मुदा शीर्षक-रूपक कोना पात्रक जीवनसँ जुड़ैत अछि, प्रकृति आ देहक बिम्ब कोना कार्य करैत अछि, समयक छलाँग आ स्मृतिक क्रम कथा केना रचैत अछि—एहि प्रश्न पर अपेक्षित विस्तार नहि भेटैत। ताहि सँ कृतिक भावात्मक प्रभाव स्पष्ट भइतो ओकर औपन्यासिक निर्माण आंशिक रूपेँ अनकहल रहि जाइत अछि।

लेखकक उपसंहार उपन्यासक महत्त्व स्थापित करैत अछि, आ तकर बाद पाठक-प्रतिक्रियासभ आओर प्रशंसा जोड़ैत अछि। आलोचकक निहित निष्कर्षकेँ स्वीकार करितो ई पूछब आवश्यक अछि जे प्रवासी पात्रक चुनाव सामाजिक संरचनाक परिणाम अछि कि मात्र नैतिक भूल। एहन भेद पर विचारसँ उपन्यासक समीक्षा अधिक न्यायपूर्ण बनैत।

१४. 'सुन्दरी : निहुरि फूकू आगि' : जीवन-वृत्त, रचनाधर्मिता आ समालोचनाक सीमा

विश्वनाथ झाक 'सुन्दरी: निहुरि फूकू आगि' पर लेख पुस्तकक विधागत मोड़ अछि। एतय आलोचक लेखकक ज्ञान-विस्तार, प्रकृति, पर्यावरण, मिथिलाक सामाजिक रचना, व्यक्तिगत अनुभव, लेखकीय स्वभाव आ गद्यशैलीक चर्चा करैत छथि। एहि लेखमे रचना-पाठक संग लेखक-परिचय आ सांस्कृतिक अवदानपर बल अधिक अछि। फलतः ई पुस्तक-समीक्षा आ लेखक-व्यक्तित्वक विवेचनक बीचक एकटा मिश्रित रूप धारण करैत अछि।[47]

विश्वनाथ झाक विभिन्न रुचिक प्रति समीक्षकक सम्मान स्पष्ट अछि। ओ साहित्यकारक ज्ञान-संसारकेँ एकाध विधामे सीमित नहि करैत छथि; इतिहास, लोकजीवन, वातावरण आ समाजक अनेक प्रसंगक सहारे

46 मिश्र, बुकमेनिया, 'ठेठ परक मौलाएल गाछ'।

47 मिश्र, बुकमेनिया, 'सुन्दरी: निहुरि फूकू आगि'।

लेखनक विस्तार देखबाक प्रयास करैत छथि। एहि दृष्टिकोणक उपयोगिता अछि, कारण साहित्यिक गद्य अनेक विषयसँ ऊर्जा प्राप्त करैत अछि।

मुदा आलोचनाक एकटा बुनियादी भेद एतय फेर जरूरी अछि। लेखकक बहुज्ञता आ प्रकाशित कृतिक कलात्मक उपलब्धि समानार्थी नहि अछि। विषय-विस्तारकेँ प्रमाणित करब लेखकक परिचयसँ सम्भव अछि, किन्तु कथा अथवा गद्यक विशिष्ट रूपक मूल्याङ्कन लेल शैली, कथानक, भाषिक प्रसंग, छविक पुनरागमन, लय तथा संरचनात्मक संगतिक अलग जाँच आवश्यक अछि। विवेचनक अन्तिम भागमे समीक्षक अन्य भाषाक पाठकधरि पहुँचक सम्भावना व्यक्त करैत छथि; एहि विचारसँ रचनाक प्रसार-सम्बन्धी रुचि बुझाइत अछि, मुदा अनुवादक उपयोगिता आलोचनात्मक पाठक स्थानापन्न नहि भऽ सकैत।

एहि लेख केर विशिष्ट अवदान ई अछि जे आधुनिक मैथिली साहित्यक एकटा वैकल्पिक बौद्धिक व्यक्तित्व-रूप सामने रखैत अछि। एकर सीमा ई अछि जे व्यक्तिगत प्रशंसा कखनो-कखनो गद्यक अन्तर्वस्तु आ शिल्पक तुलनात्मक परीक्षण पर भारी पड़ैत अछि। एहि सीमाकेँ स्वीकार कएलासँ लेख केर महत्त्व घटैत नहि; बरु ओकर विधा स्पष्ट होइत अछि।

१५. 'दूषण पञ्जी' : जाति, अभिलेख आ ज्ञानपरम्पराक विवाद

गजेन्द्र ठाकुरक 'दूषण पञ्जी' पर लिखल अन्तिम लेख सम्पूर्ण संग्रहक वैचारिक रूपसँ सबसँ अलग आ महत्त्वाकांक्षी सामग्री अछि। एतय कविताक भाषा अथवा उपन्यासक कथा मात्र विषय नहि, बल्कि पञ्जी-प्रथा, वंशपरिचयक अभिलेखीकरण, विवाहाधिकार, जातीय सीमा, सामाजिक वैधता आ मिथिलाक ऐतिहासिक स्मृतिक प्रश्न केन्द्रमे अछि। लेखक ग्रन्थकेँ मैथिली संस्कृतिक चर्चासँ जोड़ि देखैत छथि आ परम्परागत पञ्जी-विवेचनक संकीर्ण दायरा विस्तारक आवश्यकता पर विचार करैत छथि।[48]

ई लेख शुरुआतसँ साहित्यिक समीक्षा आ सामाजिक अनुसंधानक बीचक सीमा लाँघैत अछि। लेखक पञ्जीसम्बन्धी कतेको आधारभूत प्रश्न क्रमवार उठबैत छथि: पञ्जी दस्तावेज होएबाक अर्थ की, पञ्जीमे केकर नाम आ जानकारी उपलब्ध अछि, गोत्र-सम्बन्धी विवरण केना उपयोगमे अबैत अछि, आ विवाहसम्बन्धी नियमक ज्ञानक स्रोत केहन अछि। प्रश्नक एहि श्रृंखलासँ आलोचकक अनुसंधान-भावना स्पष्ट होइत अछि। जे समाज अभिलेखकेँ अधिकारक आधार बनबैत अछि, ओहि समाजमे अभिलेखक चयन आ निषेधक प्रश्न नैतिक-सांस्कृतिक महत्त्व प्राप्त करैत अछि।

लेखकक ऐतिहासिक विवेचनमे विभिन्न ऐतिहासिक व्यक्तिकाल, पञ्जी-व्यवस्था आ सामाजिक वर्गीकरणसम्बन्धी विवरण उपस्थित अछि। एहि विवरणकेँ पुस्तकक अन्तर्गत प्रस्तुत इतिहासबोध मानि

48 मिश्र, बुकमेनिया, 'दूषण पञ्जी: गजेन्द्र ठाकुर केर मैथिली संस्कृतिपर सार्वभौमिक योगदान'।

पढ़ब उचित अछि; स्वतन्त्र अभिलेखीय परीक्षण बिना प्रत्येक तिथि, वंशक्रम अथवा निर्णयक बाहरी सत्यता सिद्ध मानब उचित नहि। लेखमे प्रारम्भिक ऐतिहासिक प्रसंग आ वर्तमान सामाजिक व्याख्याक बीच कतेको छलाँग अछि। एहन छलाँगपर स्रोतक प्रकार—मूल दस्तावेज, लोकस्मृति, परवर्ती टीका, आधुनिक संकलन—अलग-अलग बताओल जाए तँ तर्कक प्रमाण-मूल्य बढ़त।

एहि लेखमे अनेक जाति आ समुदायसम्बन्धी नामक व्यवस्थित सूची देल गेल अछि। ई सूची लेखकेँ समावेशनक प्रश्न धरि लऽ जाइत अछि: सामाजिक वृत्तान्त केवल चुनल गेल अभिजात समूहक इतिहास होयत कि बहुवर्गीय समाजक? एतय 'दूषण पञ्जी'क चर्चा सांस्कृतिक लोकतन्त्रीकरणक एकटा सम्भावना खोलैत अछि। मुदा सूचीमे नाम आबि गेलासँ मात्र किछु समुदायकेँ वास्तवमे बोलबाक अवसर भेटल अछि, ई मानि लेब जल्दबाजी होएत। स्रोत-संग्रहक अधिकार, वर्गीकरण करबाक शक्ति आ चित्रित समूहक आत्मवर्णन—तीनू अलग प्रश्न अछि। समाजक समावेशी इतिहास लेल समुदायविशेषक अपना कथा-साक्ष्य, मौखिक स्मृति आ परस्पर विरोधी अभिलेख पढ़ब जरूरी अछि।

उपसंहारक विस्तृत चर्चामे पञ्जी-लेखनक पद्धति, वंशसूची, अधिकार, सन्दर्भ-सूची तथा नब अभिलेखीकरणक सम्भावनाक चर्चा बढ़ैत अछि। अन्तिम पृष्ठ पर लेखक सामाजिक व्यवस्था, लिखित दस्तावेज, भाषा-लिपि आ परम्पराक आलोचनात्मक पुनरीक्षणपर जोर दैत छथि। एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे समीक्षा-लेखकक दृष्टिमे पञ्जी निष्क्रिय अतीत नहि, वर्तमान सामाजिक व्यवहारकेँ प्रभावित करनिहार संस्था अछि। ई विचार व्यापक चिन्ताक आधार बनि सकैत अछि।

तथापि एहि लेख केर विधागत स्वभाव सर्वाधिक जटिल अछि। आलोचक जे इतिहासात्मक तर्क दैत छथि, ओहि तर्कक जाँच लेल प्राथमिक अभिलेखक सुस्पष्ट सूची, पाठभेद, तिथिक प्रमाण आ विरोधी मतक विवेचन आवश्यक अछि। जे सामाजिक प्रस्ताव दैत छथि, तकर मानवीय लाभ आ व्यावहारिक कठिनाइक पृथक जाँच आवश्यक अछि। आ जे साहित्यिक उपलब्धि स्थापित करैत छथि, तकर लेल 'दूषण पञ्जी'क रचनाशैली, संरचना आ दस्तावेज-रूपक स्वायत्त विवेचन चाही। एहि तीनू प्रकारक प्रमाण एके स्तर पर रखला सँ प्रशंसात्मक निष्कर्ष सबल देखाएत, मुदा अनुसंधानक कसौटी पर असमान रहि जायत।

एहि सभ सीमाक बावजूद ई अन्तिम लेख 'बुकमेनिया'क बौद्धिक परिधिकेँ व्यापक बनबैत अछि। एहिमे साहित्यक सीमा पर ठाढ़ भऽ कऽ सामाजिक अभिलेख, सांस्कृतिक अधिकार आ ऐतिहासिक न्यायक प्रश्न पूछल गेल अछि। संग्रहक विशिष्टता अनेक ठाम एही ठाढ़ स्थानसँ पैदा होइत अछि: साहित्य-समीक्षाकेँ व्यापक समाज-विवेचन बनयबाक इच्छा, भले एकर पद्धति सर्वत्र समान परिपक्व नहि हो।

१६. बारह रचनामे चलैत साझा सूत्र

पहिल साझा सूत्र साहित्यक सामाजिक उत्तरदायित्व अछि। 'घसल अठन्नी'सँ 'दूषण पञ्जी'धरि लेखकक मन लिखित कृतिक भीतर एहन मनुष्य खोजैत अछि जे सामाजिक नियमक मारि सहैत हो अथवा ओकर प्रतिरोध करैत हो। दोसर सूत्र स्त्री-अनुभव अछि: मुन्नी मधुक कविता, 'कला', 'ककरा ले अरजब हे' आ 'भामती'मे स्त्रीक देह, प्रतिष्ठा, श्रम, सम्बन्ध आ निर्णयक प्रश्न अलग-अलग रूपमे लौटैत अछि। तेसर सूत्र परम्परा आ आधुनिकताक टकराव अछि: शिक्षा, रोजगार, प्रवास, जाति आ पारिवारिक अपेक्षाक बीच व्यक्ति कोना बदलैत अछि। चौठ सूत्र सांस्कृतिक स्मृति अछि: मिथिलाक भाषा, गाम, वंश, लोकजीवन आ इतिहासक याद लेखसभकेँ जोड़ैत अछि।

मुदा ई साझा सूत्र अपने आपमे एकटा विकसित आलोचनात्मक सिद्धान्त नहि बनि जाइत। सिद्धान्त लेल ई स्पष्ट करब पड़त जे सामाजिक अर्थ पाठक भीतर कोना बनैत अछि, रचना-विन्यास ओहि अर्थकेँ केना आकार दैत अछि, तथा विरोधी पाठक स्थिति सम्भव होइत अछि कि नहि। किताबक लेखसभ एहन प्रश्नक बीज अवश्य दैत अछि, मुदा एकीकृत सैद्धान्तिक प्रस्ताव कम देइत अछि। एतय 'बुकमेनिया'केँ समकालीन मैथिली आलोचनाक पूर्ण पद्धतिगत प्रतिमानक बजाय एकटा सक्रिय आलोचनात्मक प्रयास कहब अधिक न्यायसंगत होएत।

चौदहम शताब्दी सँ आधुनिक काल धरि फैसल सम्पूर्ण मैथिली इतिहासक दावा एहि कृतिमे नहि अछि; संग्रह चयनित आधुनिक पुस्तकक समीक्षासभक समूह अछि। अतएव चयनक सीमाकेँ इतिहासक प्रतिनिधित्व मानि लेब उचित नहि। एहि संग्रहक काव्य-समीक्षा मुख्यतः सीमित कवि-समूह पर आधारित अछि; उपन्यासक चयन सेहो विशेष सामाजिक विषयक दिस झुकल अछि। एहि झुकावकेँ त्रुटि कहबाक अपेक्षा आलोचकक घोषित रुचिक रूपमे बुझब चाही, किन्तु एहि चयनमे अनदेखल विधा आ विचारक चिन्हांकन आवश्यक अछि।

१७. स्त्रीक प्रतिरोध आ त्यागक महिमा : एक भीतरू तनाव

पुस्तकक स्त्रीसम्बन्धी विचारमे एकटा सार्थक, किन्तु अधूरा तनाव अछि। मुन्नी मधुक कविता पर लिखैत काल आलोचक स्त्रीक प्रतिरोध, स्वायत्त इच्छा आ सामाजिक नियमकेँ चुनौती देबाक साहसक प्रशंसा करैत छथि। 'भामती' पर लिखैत काल त्याग, धैर्य आ समर्पणक उच्च नैतिक मूल्य सामने अबैत अछि। 'कला' आ 'ककरा ले अरजब हे'मे परिवार, विवाह आ सामाजिक अपेक्षा जटिल रूपमे उपस्थित अछि। एहि सभ पाठकेँ एक-दोसराक संग रखला पर पूछब आवश्यक अछि: स्त्रीक असाधारण समर्पण आ ओकर स्वतन्त्र व्यक्तित्वकेँ एके कसौटी पर कोना परखल जाए?

एहि प्रश्नक उत्तर व्यक्तिक निजी त्यागकेँ नकारब नहि थिक। समस्या तखन पैदा होइत अछि जखन त्यागकेँ स्त्रीक स्वाभाविक धर्म मानि सर्वमान्य आदर्श बना देल जाए। प्रतिरोधक कविता जाहि असमानताकेँ चुनौती दैत अछि, प्रेमक आख्यान ओहि असमानताकेँ पवित्रता देबाक जोखिम उठा सकैत अछि। समालोचकक कार्य एहि जोखिमकेँ शब्द देब अछि। 'बुकमेनिया'क अलग-अलग लेख एहि बहस लेल पर्याप्त सामग्री दैत अछि; मुदा संग्रहक भीतर एहि पर स्पष्ट तुलनात्मक विमर्श नहि अछि। एहि अनुपस्थितिक चिह्नांकन स्त्री-विमर्शक मूल्य घटेनाइ नहि, ओकरा अधिक सुसंगत बनयबाक आग्रह अछि।

स्त्रीपात्र अथवा कवयित्रीक मूल्याङ्कन करैत समय सामाजिक सन्देश, व्यक्तिगत इच्छा, कथावाचकक दृष्टि आ पाठकक नैतिक निर्णयकेँ अलग-अलग देखब चाही। जखन ई चारू स्तर मिश्रित भऽ जाइत अछि, तखन समालोचक कथाक पात्रक अनुभव पर अपन पसंदक आदर्श आरोपित कऽ सकैत छथि। 'बुकमेनिया' एहि जोखिमक उदाहरण सेहो अछि आ ओकरा पार करबाक सम्भावनाक संकेत सेहो।

१८. जाति, पञ्जी आ सांस्कृतिक प्रतिनिधित्वक आलोचनात्मक अर्थ

संग्रहक अन्तिम रचना जाति-विमर्शकेँ केन्द्रमे आनैत अछि, मुदा जातीय असमानताक प्रश्न अन्य लेखमे सेहो अलग-अलग प्रकारेँ मौजूद अछि। गरीब परिवार, दाम्पत्य आ विवाहक सामाजिक नियम, साहित्यिक प्रतिनिधित्व, लोकक उपेक्षा—एहि सभक अर्थ बिनु सामाजिक संरचनाक विवेचन अधूरा रहैत। 'दूषण पञ्जी'क महत्त्व एहि अर्थमे अछि जे ओ सांस्कृतिक परम्पराकेँ निष्कलुष गौरव मानि लेबाक बजाय ओकर अभिलेखीय पक्ष पर प्रश्न उठबैत अछि।[49]

पञ्जी-जकाँ दस्तावेजक विवेचनमे तीन सीमा आवश्यक अछि। पहिल, अभिलेखमे जे लिखल अछि ओ सामाजिक अनुभवक सम्पूर्णता नहि। दोसर, अभिलेखमे जे नहि लिखल गेल अछि, ओकर अभाव इतिहासक अभाव नहि। तेसर, कोनो संकलनक समावेशी उद्देश्य ओकर ऐतिहासिक प्रत्येक विवरणकेँ स्वतः प्रमाणित नहि करैत। एहि तीनू कसौटी पर लेख पढ़ला सँ सामाजिक न्याय आ इतिहासलेखनक बीच स्वस्थ संवाद बनैत अछि।[50]

मैथिली भाषा आ मुद्रणक आधुनिक इतिहासपर ललित कुमारक शोधलेख ई संकेत करैत अछि जे लिपि, मुद्रण आ जातीय-सामाजिक प्रतिनिधित्वक सम्बन्ध सरल नहि अछि; एकर इतिहासमे विवाद आ

49 गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक, "Can the Subaltern Speak?," in Marxism and the Interpretation of Culture, सम्पा. Cary Nelson आ Lawrence Grossberg (Urbana: University of Illinois Press, १९८८)। एहि आलेखक प्रतिनिधित्वसम्बन्धी प्रश्नसँ तुलना कएल जा सकैत अछि; 'बुकमेनिया'क विशिष्ट इतिहास-दावाक प्रमाण एहि स्रोतसँ नहि मिलैत।

50 ललित कुमार, "Caste, Script and Language: The Curious Case of Maithili Print," Society and Culture in South Asia १२, अंक १ (२०२६), https://doi.org/10.1177/23938617251337694।

बहिष्करणक प्रश्न उपस्थित अछि। एहि बाहरी शोधसँ ‘बुकमेनिया’क अन्तिम लेख केर प्रश्नपर व्यापक सन्दर्भ भेटैत अछि, मुदा एतयसँ ‘दूषण पञ्जी’मे लिखल विशिष्ट वंशावली अथवा तिथिक सत्यापन नहि होइत। एहि सीमाकेँ स्वीकार करब स्वयं प्रमाणपरक समालोचनाक अनिवार्य शर्त अछि।

१९. कथानक-सार आ आख्यानशास्त्रीय अध्ययनक बीच दूरी

उपन्याससम्बन्धी छओ लेखमे कैलाश कुमार मिश्र पाठककेँ कथा-संसार धरि आनबाक लेल पात्रक क्रिया, संवाद आ परिस्थितिक विस्तृत परिचय दैत छथि। एहि पद्धतिक सहज लाभ अछि: अनपढ़ल पुस्तकक पाठक विषयवस्तुक दिशा बुझि सकैत छथि। मुदा आलोचना जखन विस्तृत परिचय बनि जाइत अछि, तखन लेखकक कारीगरीक प्रश्न ओझराएबाक आशंका रहैत अछि। कथा ‘की कहैत अछि’क संग ‘के कहैत अछि’, ‘केकरा जानकारी अछि’, ‘कतेक बात रोकल गेल अछि’, ‘समय केना बदलैत अछि’ आ ‘भाषा पाठकक विश्वास कोना बनबैत अछि’—ई प्रश्न समान रूपसँ आवश्यक अछि।[51]

‘कला’ आ ‘ककरा ले अरजब हे’मे पात्रक निर्णय आ सामाजिक दबावक प्रस्तुति; ‘भामती’मे स्मृति, इतिहास आ कल्पनाक तह; ‘करार’मे बहुस्थानिक कथानक; ‘हसीना मंजिल’मे राजनीतिक घटनाक निजी स्मृति; ‘ठेठ परक मौलाएल गाछ’मे प्रवास आ समयक फासला—एहि सभमे कथन-विधान अलग छैक। एके नैतिक कसौटी सब पर लागू कएलासँ एहि भिन्नताक सौन्दर्य गुम होइत अछि।[52]

कृतिक कथन आ समीक्षकक निष्कर्षकेँ अलग राखबाक तकनीक बहुत सरल, मुदा आवश्यक अछि: पहिने मूल कृतिक कथन-स्थिति चिन्हित हो; फेर पात्रक कथन; तकर बाद आलोचकक व्याख्या; अन्तमे प्रमाणसंगत निर्णय। एहि क्रमक अनुशासनसँ साहित्य-समीक्षा निबन्धात्मक उत्साहसँ ऊपर उठि शोधोपयोगी पाठ बनैत अछि। ‘बुकमेनिया’क अनेक लेखमे एहि क्रमक अंश भेटैत अछि, मुदा ओ निरन्तर पद्धति बनि नहि सकल अछि।

२०. कविता-पाठमे अर्थ, ध्वनि आ रचनात्मक विराम

कविता-खण्डक मूल उपलब्धि समकालीन सामाजिक विषयक प्रति सजगता अछि। पर कविताक सामाजिक कथ्य ओकर पूर्ण साहित्यिक अर्थ नहि होइत। कविताक शब्द-चयन, विराम, लय, दोहराव, सम्बोधन, विडम्बना, स्थानीय मुहावरा आ व्यञ्जना मिलि अर्थक बहुरूपता रचैत अछि। ‘घसल अठन्नी’क

51 वेन सी. बूथ, The Rhetoric of Fiction, दोसर संस्करण (Chicago: University of Chicago Press, १९८३)।

52 मिखाइल बाख्तिन, The Dialogic Imagination: Four Essays, सम्पा. Michael Holquist, अनुवाद Caryl Emerson आ Michael Holquist (Austin: University of Texas Press, १९८१)।

सामाजिक बिम्ब, मुन्नी मधुक प्रतिरोधक सम्बोधन आ ‘सबाक कुसुम कामिनी’क सार्वजनिक भाषा पर लेखन एही प्रश्नकेँ अधिक स्पष्ट रूपसँ पकड़ि सकैत छल।

कविताक एक-दू पंक्तिक उद्धरण उपयोगी अछि, मुदा उद्धरण मात्रसँ कृतिक सौन्दर्यशास्त्र सिद्ध नहि होइत। पंक्ति ककरा बाद अबैत अछि, ओकर पूर्ववर्ती छवि की अछि, ओकर अन्तिम शब्द अगिला पंक्तिकेँ कोना प्रभावित करैत अछि, आ कविता अपने भीतर जे विरोधाभास बनबैत अछि ओकर समाधान करैत अछि कि खुला छोड़ैत अछि—एहि प्रश्नसँ आलोचना अधिक गहिर होइत अछि। ‘बुकमेनिया’मे उद्धरणक उपयोग गम्भीर पठनीय रुचिक साक्ष्य अछि; समीक्षाक पद्धतिगत उन्नयन लेल ओहि उद्धरणसभक भाषिक विश्लेषण बढ़ेनाइ आवश्यक अछि।

एहि सीमा चिन्हित करबाक अर्थ रस, ध्वनि अथवा अलंकारक किछु परम्परागत शब्द सजाकऽ देब नहि थिक। मूल शब्दक सूक्ष्म परीक्षण बिना सैद्धान्तिक पदावली सेहो खोखल भऽ सकैत अछि। रचनाक अन्तर्गठन प्रत्यक्ष देखाकऽ निष्कर्ष देब—ईएह निकटपाठक सार अछि।

२१. ‘पाठकक प्रतिक्रिया’ : साहित्यिक सार्वजनिकता, न कि न्यायालयक अन्तिम निर्णय

‘बुकमेनिया’मे अनेक लेखसभक बाद पाठकक प्रतिक्रियासभक संग्रह प्रकाशित अछि। ‘घसल अठन्नी’, ‘फुललोका’, ‘ककरा के दूस्त’, ‘कला’, ‘भामती’, ‘हसीना मंजिल’, ‘ठेठ परक मौलाएल गाछ’ आ ‘सुन्दरी’ सम्बन्धी लेखसभक बाद पाठकीय प्रतिक्रियाक उदाहरण भेटैत अछि। एहि सूचीसँ आलोचनाक पाठकीय प्रसारक एकटा जीवन्त परिवेश बुझाइत अछि।[53]

प्रतिक्रियाक संग्रह साहित्यिक इतिहास लेल उपयोगी सामग्री भऽ सकैत अछि: के सभ समीक्षाकेँ पढ़लनि, हुनकर भाषा कोन प्रकारक छल, कोन विषय पर सहमति बनल, आ सामुदायिक प्रतिष्ठाक संरचना कोना काम करैत रहल। मुदा अधिकांश प्रतिक्रिया अभिनन्दन आ सद्भावक भाषा अपनबैत अछि। अनौपचारिक टिप्पणीकेँ ‘स्वतन्त्र निर्णायक प्रमाण’ मानि लेब तर्कगत त्रुटि होएत। समीक्षकक लेखपर पाठक प्रसन्न भेलाह—एहि बातसँ मूल कृतिक कलात्मक उपलब्धि वा समीक्षाक निष्कर्ष अनिवार्य रूपसँ सत्य नहि सिद्ध होइत।

एहि प्रतिक्रियासभक अधिक उपयोगी प्रस्तुति लेल स्रोत-माध्यम, प्रतिक्रिया-तिथि, अनुमोदनक परिप्रेक्ष्य आ समालोचनात्मक असहमतिक उदाहरण दैत अलग परिशिष्ट बनाओल जा सकैत छल। वर्तमान रूपमे

53 मिश्र, बुकमेनिया, विभिन्न समीक्षाक बाद राखल ‘पाठकक प्रतिक्रिया’ शीर्षक खण्ड।

प्रतिक्रिया मूल समीक्षाक प्रवाहकेँ बीच-बीचमे रोकैत अछि। तथापि एकरा बिना मूल्यक नहि कहब चाही; ई मैथिली साहित्यक सामुदायिक ग्रहण-प्रक्रियाक दुर्लभ दृश्य दैत अछि। विधागत भेद स्पष्ट रहत तँ एहि सामग्रीक महत्त्व आर बढ़त।

२२. प्रमाण, उद्धरण आ इतिहाससम्बन्धी दावाक समीक्षा

समीक्षाक विश्वसनीयता निर्णयक ऊँच स्वर पर नहि, पाठप्रमाणक जाँचयोग्यता पर आश्रित रहैत अछि। ‘बुकमेनिया’क किछु लेख, विशेषतः ‘सबाक कुसुम कामिनी’, ‘करार’ आ ‘दूषण पञ्जी’, पाठककेँ स्रोतसँ जुड़बाक प्रयास देखबैत अछि। तथापि संग्रहभरि एकरूप ग्रन्थसूची, मूल कृतिक प्रकाशन-विवरण, उद्धरणक समान पद्धति आ ऐतिहासिक दावाक स्पष्ट स्रोत-वर्गीकरण नहि भेटैत। एहि कारण अनेक रोचक निष्कर्षकेँ पाठक स्वतन्त्र रूपसँ जाँचबामे कठिनाइ अनुभव कऽ सकैत छथि।[54]

उदाहरणार्थ, ‘कला’क संस्करण-इतिहास आ ‘दूषण पञ्जी’मे परम्परागत अभिलेखक कालक्रम दूनू महत्त्वपूर्ण अछि; मुदा ई दुई भिन्न प्रकारक प्रमाण माँगैत अछि। संस्करणक लेल शीर्षक-पृष्ठ, संस्करणसूचना आ मुद्रित प्रतिक मिलान अपेक्षित अछि। वंशावली अथवा पञ्जी-परम्पराक इतिहास लेल मूल पञ्जी, तिथि-निर्धारण, प्रतिलिपिक सम्बन्ध, व्यक्तिनामक पुष्टिकरण आ वैकल्पिक इतिहास-विवेचन आवश्यक अछि। प्रस्तुत समीक्षा-पुस्तकक भीतर ओहि समस्त प्रमाणक स्वतन्त्र परीक्षण उपलब्ध नहि; तेँ ओकर दावाकेँ ‘लेखकक कथन’ रूपमे चिह्नित करब ईमानदार पद्धति अछि।

साहित्यिक उद्धरण लेल सेहो एही नियम लागू होइत अछि। कविता उद्धृत कएल जाए तँ ओकर शीर्षक आ मूल कृति, उपन्यासक घटना बताओल जाए तँ विश्वसनीय पाठसन्दर्भ, तथा समीक्षकक अनुमान प्रस्तुत कएल जाए तँ अनुमान रूपमे स्पष्ट भाषा—एहि स्तरसभक भेदसँ साहित्यिक पाठ अधिक टिकाउ होइत अछि। ‘बुकमेनिया’ एहि दिशामे आंशिक प्रयत्न करैत अछि, मुदा विस्तृत सम्पादकीय परिशोधनसँ अध्ययनक प्रामाणिकता बढ़ि सकैत छल।

२३. मैथिली गद्य, पदावली आ सम्पादकीय प्रश्न

‘बुकमेनिया’क भाषिक विशेषता ओकर जीवित मैथिली-व्यवहारक निकटता अछि। लेखकक गद्य अकादमिक दूरी बनाएबाक बजाय पाठकसँ संवाद करैत अछि। ‘हम’, ‘हमरा’, ‘ई’, ‘ओ’, ‘एहि’ जकाँ रूपक उपस्थितिसँ समीक्षामे अपनत्व आ प्रत्यक्षता अबैत अछि। ई शैली विशेषतः सामाजिक प्रश्नपर लिखल

54 मिश्र, बुकमेनिया, ‘दूषण पञ्जी’ सम्बन्धी समीक्षाक उपसंहार आ ताहि लेखमे प्रस्तुत सन्दर्भ।

लेखमे जीवटता दैत अछि। मैथिलीक बोलचालसँ जुड़ल आलोचनात्मक गद्य बनयबाक दृष्टिसँ ई गुण महत्त्वपूर्ण अछि।

मुदा अपनत्वक संग वाक्य-संयम चाही। किछु लेखमे लम्बा, लगातार विवरण, पुनरुक्त निष्कर्ष, प्रशंसाक एके प्रकारक पदावली आ हिन्दी-अंग्रेजीसँ लेल टिप्पणी-मुहावरा समीक्षाक वैचारिक धार कम करैत अछि। भाषाक निखारक अर्थ मैथिलीक सहज बहुभाषिकताकेँ निषिद्ध करब नहि; अर्थ ई जे प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दक आशय स्पष्ट हो, वाक्यक कारण-परिणाम सुसंगत हो, आ निष्कर्ष प्रमाणसँ पैघ नहि भऽ जाए।

अनुकूल सम्पादनमे ‘सार्वभौमिकता’, ‘सामाजिकता’, ‘सांस्कृतिकता’, ‘मानवशास्त्रीय’ आदि व्यापक पदक प्रत्येक प्रयोगपर प्रश्न कएल जा सकैत छल: एहि ठाम कोन ठोस पाठगत लक्षणक नाम ई पद अछि? शब्दक महत्ता तखन बढ़ैत अछि जखन ओ किछु चिह्नित करैत अछि, न कि किछु छिपबैत अछि। पुस्तकक आलोचनात्मक भाषा सामर्थ्यवान अछि; ओकर व्याख्यात्मक अनुशासन अधिक स्थिर भेला पर बहसक सम्भावना पैघ होएत।

‘पाठकक प्रतिक्रिया’क भाषामे अलग-अलग व्यक्तिक बोलि, वर्तनी आ मिश्रित रूप अछि। ओकरा मूल रूपेँ रखब दस्तावेजीय दृष्टिसँ उचित भऽ सकैत अछि; किन्तु मुख्य आलोचनात्मक गद्यक सम्पादन आ दस्तावेजक मूल वर्तनीक नीति अलग बतायल जएबाक चाही। एहन सम्पादकीय स्वच्छता पाठककेँ ग्रन्थक अलग-अलग स्वर पहिचानबाक सहायता करैत अछि।

२४. मैथिली साहित्येतिहासक व्यापक परिप्रेक्ष्यमे ग्रन्थक स्थान

‘बुकमेनिया’क मूल्यांकन करैत काल एकरा पूरा मैथिली साहित्यक समग्र प्रतिनिधि पुस्तक बना देब सम्भव नहि। ई चयनित पुस्तकक समीक्षा-संग्रह अछि, जकर लक्ष्य अनेक लेखकक रचनामे सामाजिक-सांस्कृतिक प्रश्न पहिचानब अछि। ताहि दृष्टिसँ मैथिली साहित्येतिहासक उपलब्ध ग्रन्थसूची आ संस्थागत सूचीक संग एकर सम्बन्ध सन्दर्भात्मक अछि। साहित्य अकादेमीक मैथिली प्रकाशन-सूचिमे जयकान्त मिश्रक ‘मैथिली साहित्यक इतिहास’ आ देवकान्त झाक ‘आधुनिक मैथिली साहित्यक इतिहास’क प्रविष्टि उपलब्ध अछि। एहिसँ मैथिली आलोचनाक स्थापित इतिहासलेखन-परम्पराक पुष्टि होइत अछि; मुदा एहि पुस्तकसभसँ कोनो निष्कर्ष सीधे ‘बुकमेनिया’ पर आरोपित नहि कएल गेल अछि।[55]

साहित्य अकादेमीक मैथिली प्रकाशन-सूचिमे ‘मैथिली दलित लोकगाथा ओ संस्कृति’ जकाँ विषयक संकलनक उपस्थितिसँ सेहो साहित्य, लोकधारा आ सामाजिक प्रतिनिधित्वक अध्ययनक एकटा व्यापक

55 साहित्य अकादेमी, “Maithili Catalogue,” प्रकाशन-सूची, https://sahitya-akademi.gov.in/publications/maithili-catalogue.jsp (अवलोकन: १६ नवम्बर २०२६)।

संस्थागत परिप्रेक्ष्य देखल जा सकैत अछि। एहि सन्दर्भमे ‘बुकमेनिया’क जाति, पञ्जी आ उपेक्षित आवाजक प्रति रुचि एकटा सम्भावित संवाद-स्थान बनबैत अछि, मुदा संग्रहक अन्तिम अध्यायक इतिहासदावाकेँ एहन सामान्य सन्दर्भसँ सत्यापित नहि कएल जा सकैत।

एकटा उपयोगी निष्कर्ष ई अछि जे कैलाश कुमार मिश्रक समीक्षा साहित्यक समाजशास्त्रीय पाठक पक्षमे स्पष्ट रूपसँ ठाढ़ अछि। मैथिली आलोचनाक अन्य सम्भावना—रूपवाद, पाठक-प्रतिक्रिया-विश्लेषण, भाषिक शिल्प-परीक्षण, लिङ्ग-समीक्षा, दलित आ बहुजन आत्मवर्णन, दस्तावेजीय इतिहास—एहि सभसँ पुस्तकक संवाद आर व्यापक होइत तँ एकर आलोचनात्मक स्थिति अधिक प्रखर बनैत। पर एहि अभावक आधार पर सामाजिक दृष्टिक गुणकेँ अस्वीकार कएल नहि जा सकैत।

२५. समेकित मूल्याङ्कन : उपलब्धि आ सीमा दूनूक हिसाब

संग्रहक पहिल उल्लेखनीय उपलब्धि लेखकक नियमित आ गम्भीर पठन-रुचि अछि। कविता आ उपन्यासक विस्तृत संसार पर लिखबाक लेल जे धैर्य चाही, ओकर साक्ष्य पुस्तकमे भेटैत अछि। दोसर उपलब्धि सामाजिक संवेदनशीलता अछि: लेखक साहित्यकेँ वंचित मनुष्यक अनुभवसँ जोड़बाक प्रयत्न करैत छथि। तेसर उपलब्धि मैथिलीमे जीवित समीक्षा-संवादक निर्माण अछि। लेखकक प्रतिक्रिया-संकलनक ढंग भले आलोचनात्मक प्रमाण नहि बनि सकैत हो, मुदा एहि सँ साहित्यिक सार्वजनिकताक गतिविधि देखल जा सकैत अछि। चौठ उपलब्धि सामाजिक विषयक व्यापकता अछि: लिङ्ग, प्रेम, प्रवास, इतिहास, भाषा, पञ्जी, आ सांस्कृतिक प्रतिनिधित्व।

मुख्य सीमा कृतिपरिचयक विस्तार आ आलोचनात्मक व्याख्याक असमान अनुपात अछि। किछु उपन्यास-विवेचन कथानकक पुनर्कथनक ओर झुकैत अछि, कविता-विवेचनमे घोषणात्मक सामाजिक निष्कर्ष कखनो-कखनो बिम्ब-भाषाक सूक्ष्म जाँचकेँ पाछाँ छोड़ैत अछि, आ इतिहाससम्बन्धी प्रसंगमे तथ्यक स्वतन्त्र प्रमाण प्रायः पर्याप्त रूपेँ पृथक नहि राखल गेल अछि। प्रशंसात्मक पाठकीय प्रतिक्रियाकेँ मूल समीक्षाक ठीक बाद राखल जाए तँ निष्पक्ष आलोचनात्मक दूरी पर प्रभाव पड़बाक जोखिम होइत अछि। एहि सीमासभकेँ स्पष्ट करब आलोचकक श्रमक अवमूल्यन नहि, ओकर अधिक न्यायपूर्ण परख अछि।

एकर बाद सेहो पुस्तकक महत्त्व बनल रहैत अछि। ‘भामती’क अदृश्य श्रम, ‘कला’क सामाजिक परिवेश, ‘ककरा ले अरजब हे’क परिवार-आधुनिकता द्वन्द्व, ‘हसीना मंजिल’क विभाजनकारी इतिहास, ‘ठेठ परक मौलाएल गाछ’क प्रवासी जीवन आ ‘दूषण पञ्जी’क अभिलेख-राजनीति—ई सब प्रसंग पाठककेँ एकटा सक्रिय प्रश्न दैत अछि: साहित्य समाजक रूपक व्याख्या करैत अछि कि ओकर भीतरू असमानताकेँ देखय लायक बनबैत अछि? ‘बुकमेनिया’ एहि प्रश्नपर लगातार लौटैत अछि।

२६. निष्कर्ष : पुस्तकप्रेमसँ प्रमाणपरक आलोचनाधरि

‘बुकमेनिया’क मूल स्वर आत्मीय, सामाजिक आ संवादपरक अछि। एहि स्वरक कारण संग्रह साहित्यक मूल्यकेँ लोकजीवनक कठिन अनुभवसँ जोड़ि सकैत अछि। मुदा समालोचनाक असल गरिमा केवल सहमति आ प्रशंसामे नहि; आवश्यकता पड़ला पर प्रिय कृतिक कठिन प्रश्न पूछब, लेखकक निष्कर्षक परीक्षा करब, आ अपन व्याख्याक सीमा स्वीकार करबामे अछि। कैलाश कुमार मिश्रक पुस्तक एहि दिशामे अनेक सार्थक आरम्भ करैत अछि, यद्यपि सदिखन ओहि आरम्भकेँ पूरा पद्धतिगत अनुशासनधरि नहि पहुँचा सकैत अछि।

एहि ग्रन्थकेँ ‘अन्तिम निर्णय’क बजाय ‘आलोचनात्मक संवादक विस्तृत निमन्त्रण’ रूपमे पढ़ल जाए तँ ओकर महत्त्व स्पष्ट होइत अछि। कृतिक सामाजिक इतिहास बुझबाक आग्रह, स्त्री आ वंचितक स्वरप्रति संवेदनशीलता, आधुनिक प्रवासक पीड़ा, तथा मिथिलाक अभिलेखीय स्मृतिक प्रश्न एकटा समृद्ध बौद्धिक धरातल बनबैत अछि। एहि धरातल पर आर गहिर साहित्यिक काम लेल कविता-पंक्तिक निकटपाठ, उपन्यासक कथन-रचनाक विश्लेषण, मूल ग्रन्थक व्यवस्थित सन्दर्भ, ऐतिहासिक तथ्यक बहुस्रोत-जाँच आ विरोधी व्याख्याक न्यायपूर्ण परीक्षण आवश्यक अछि।

अन्ततः ‘बुकमेनिया’ अपन अपूर्णतासहित मूल्यवान पुस्तक अछि। एकर महत्त्व ई नहि जे ई प्रत्येक साहित्यिक प्रश्नक समाधान दैत अछि; एकर महत्त्व ई अछि जे ई पाठककेँ मैथिली साहित्य आ मिथिलाक सामाजिक जीवनक बीच अनेक प्रश्न सुनबाक स्थितिमे आनैत अछि। समालोचना जखन अपन प्रिय पाठकेँ प्रमाण, संशय आ सौन्दर्यक संयुक्त कसौटी पर रखैत अछि, तखन पुस्तकप्रेम वास्तविक साहित्यिक विवेकमे परिणत होइत अछि। ‘बुकमेनिया’क पाठसँ निकलनिहार सबसँ उपयोगी निष्कर्ष इएह अछि।

सन्दर्भ-सूची

मिश्र, कैलाश कुमार। बुकमेनिया: मैथिली समीक्षा-संग्रह। मधुबनी: नवारम्भ, २०२५। ISBN 978-93-48495-59-4।

कुमार, ललित। “Caste, Script and Language: The Curious Case of Maithili Print.” Society and Culture in South Asia १२, अंक १ (२०२६)। https://doi.org/10.1177/23938617251337694।

स्पिवाक, गायत्री चक्रवर्ती। “Can the Subaltern Speak?” Marxism and the Interpretation of Culture मे, सम्पादन Cary Nelson आ Lawrence Grossberg। Urbana: University of Illinois Press, १९८८।

बूथ, वेन सी. The Rhetoric of Fiction। दोसर संस्करण। Chicago: University of Chicago Press, १९८३।

बाख्तिन, मिखाइल। The Dialogic Imagination: Four Essays। सम्पादन Michael Holquist; अनुवाद Caryl Emerson आ Michael Holquist। Austin: University of Texas Press, १९८१।

साहित्य अकादेमी। “Maithili Catalogue.” प्रकाशन-सूची। https://sahitya-akademi.gov.in/publications/maithili-catalogue.jsp। अवलोकन: १६ नवम्बर २०२६।

मनसरबी

जाति, स्त्री-अनुभव आ न्यायक अनुत्तरित प्रश्न

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक उपन्यासक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

सार

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक 'मनसरबी' गामक सामन्ती दबाव, जातीय श्रेणीकरण, कर्ज-निर्भरता, स्त्रीक श्रम आ प्रेमक असमान सामाजिक परिणामकेँ एकहि आख्यानमे जोड़ैत अछि। बुलकी–राघबक सम्बन्ध, नैना–नन्दक प्रेम, महानन्दक क्रूरता, सौदामिनीक निर्णयशीलता आ लखरूक अपराधबोध कथाक अलग धुरी बनैत अछि। एहि अध्ययनक मूल तर्क अछि जे उपन्यासक कर्मफलपर आधारित नैतिक व्यवस्था अपन अन्तिम प्रसंगमे बुलकीक अधूरा जीवन देखिकऽ स्वयं प्रश्नांकित भऽ जाइत अछि। ग्रामीण वस्तु-संसार, लोकगीत, जीवित संवाद आ स्त्रीक सामाजिक विकल्पक प्रस्तुति कृतिक उल्लेखनीय उपलब्धि अछि; मुदा स्त्री-देहक अतिविस्तृत वर्णन, उपदेशात्मक कथन, प्रतिशोधक सहज नैतिकीकरण आ कथात्मक अनुपातक असन्तुलन आलोचनात्मक जाँच माँगैत अछि। समकालीन प्रतिक्रियाक संग पाठक तुलनाक आधार लैत ई समीक्षा देखबैत अछि जे 'मनसरबी'क मूल्य ओकर अन्तिम न्याय-विधानक निश्चिततामे नहि, बल्कि न्यायविहीन जीवनक कठिन प्रश्न खुला राखबामे निहित अछि।

बीजशब्द : मनसरबी, बुलकी, मैथिली उपन्यास, जाति-वर्ग सम्बन्ध, स्त्री-अनुभव, ग्रामीण श्रम, लोकसंस्कृति, न्याय, आख्यानशिल्प

प्रस्तावना : उपन्यासक मूल प्रश्न

'मनसरबी'क अन्तिम प्रसंगमे राघब अपनासँ प्रश्न करैत छथि—जेहन कर्म, तेहन फल; मुदा बुलकीक जीवनमे एतेक दुःख किएक? उपन्यासक सबसँ गम्भीर साहित्यिक प्रश्न यएह अछि। पन्द्रह भाग धरि कथा सूदखोर, बलात्कारी, हिंसक आ दम्भी लोकक पतन देखबैत अछि; अन्तिम क्षणमे मुदा एक परिश्रमी, प्रेमशील, अन्याय-सहिष्णु नहि रहए चाहनिहार स्त्रीक अपूर्ण जीवन ओहि सम्पूर्ण कर्मफल-विचारकेँ प्रश्नांकित कऽ दैत अछि। एहि विरोधक कारण 'मनसरबी'केँ केवल ग्रामीण प्रेमकथा अथवा दुष्टक दण्डक

कथा कहि पढ़ब अपर्याप्त होएत। ई सत्ता, देह, जमीन, जाति, गरीबी, प्रेम, सामाजिक मर्यादा आ न्यायविषयक बहुधुरी आख्यान अछि।[56]

एहि समीक्षामे कथानककेँ पुनः सुनएबाक अपेक्षा ओहि ठाम सभपर बल देल गेल अछि जतय लेखकक अभिप्राय आ पाठकक नैतिक विवेक एक-दोसरसँ सवाल-जवाब करैत अछि। बुलकीक नकार आ प्रतिकार, नन्दक प्रतिशोधसँ प्रेम दिस मुड़ब, महानन्दक घरक स्नेह आ बाहरक निर्दयता, राघबक उदारता आ हुनक झिझक, तथा लखरूक अपराधबोध—ई सभ प्रसंग एकहि सामाजिक व्यवस्थाक भीतर बनैत आ बिगड़ैत अछि। एहि सभ प्रसंगकेँ परस्पर जोड़ि पढ़लासँ कथाक अन्तर्निहित नैतिक तनाव स्पष्ट होइत अछि।

१. पोथीक परिचय आ रचनात्मक आत्मस्वीकार

‘मनसरबी’ डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक मैथिली उपन्यास अछि। एकर प्रथम संस्करण २०२५ मे मैत्रेयी प्रकाशन, दिल्लीसँ प्रकाशित भेल; पुस्तकपर आईएसबीएन ९७८-८१-९८६८४६-४-६ अंकित अछि। कथा ‘एक’ सँ ‘पंद्रह’ धरि पन्द्रह क्रमांकित भागमे चलैत अछि। लेखक पोथी अपन नानी श्रीमती बालमुखी देबीकेँ समर्पित करैत छथि, जिनकासँ कथा बुझबाक आ कथन बनेबाक लुइर भेटबाक बात लिखैत छथि। ई समर्पण महज पारिवारिक भावुकता नहि; कथा-शिल्पमे मौखिक आख्यान, उपमा, फकड़ा आ लोकबोलीक जे स्थान अछि, तकर आरम्भिक संकेत सेहो अछि।[57]

‘मोनक बात’मे लेखक रचनाकेँ ‘सत्य जकाँ’ मुदा सत्य नहि, कल्पनाक कलात्मक विकास कहैत छथि। हुनकर प्रतिपादन अछि जे कथाकारकेँ स्त्री, जाति, वर्ग आ भूगोलक सीमासँ ऊपर उठि आन पात्रक हृदय बुझबाक कोशिश करबाक चाही। एहि उद्देश्यकेँ मात्र रचनाकारक घोषणाक रूपमे स्वीकार नहि कऽ ओकर परीक्षा कथामे स्त्रीक अनुभूतिक प्रस्तुति आ सामाजिक प्रभुत्वक आलोचनासँ करब आवश्यक अछि। लेखकक अनुभवजन्य यथार्थक दाबी दस्तावेजी सत्यक प्रमाण नहि, कथा रचबाक नैतिक आकांक्षा अछि।[58]

रचनाक निर्माण-इतिहास सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। लेखक पहिने कथाक भाग सामाजिक संजालपर रखलनि; उत्साहजनक प्रतिक्रियाक बाद पन्द्रह भागक रूपरेखा बनेलनि। कोरोना-कालक व्यवधान आ कम्प्यूटरसँ किछु अंश हराएबापर स्मृतिक आधारपर फेरसँ लिखबाक प्रसंग स्वयं दर्ज कएलनि। उषाकिरण खानक प्रोत्साहन आ पुनर्लेखनक कठिनाइ हुनक कथनमे उपस्थित अछि। एहि जानकारीसँ ई अनुमान अवश्य बनैत

56 मिश्र, कैलाश कुमार। मनसरबी (दिल्ली: मैत्रेयी प्रकाशन, २०२५), ‘पन्द्रह’ भाग, राघबक अन्तिम आत्मप्रश्न।

57 मिश्र, मनसरबी, शीर्षक-पृष्ठ, समर्पण आ ‘मोनक बात’।

58 मिश्र, मनसरबी, ‘मोनक बात’।

अछि जे उपन्यास धारावाहिक कथनक ऊर्जा आ बादक पुनर्संयोजन दुनूक परिणाम अछि; मुदा कोन भाग पहिने लिखल गेल अथवा कोन अंश बदलल गेल, तकर स्वतन्त्र पाण्डुलिपि-साक्ष्य उपलब्ध नहि अछि।[59]

२. पन्द्रह भागक कथाविन्यास : प्रेमसँ प्रतिरोध आ अन्तिम प्रश्न धरि

पहिल दू भागमे गामक जाति-विभाजन, अमात परिवारक श्रम, बुलकीक बालविवाह, सासुरसँ वापसी, राघबसँ परस्पर प्रेम आ राजकांतक यौन-उत्पीड़न कथाक मूल धरातल बनैत अछि। एही बीच महानन्दक सूदखोरीक भयानक रूप नीरसक प्राणान्त प्रसंगमे देखाइत अछि। तेसर भाग राघबक माय द्वारा पूर्व अत्याचारीक सेवा तथा नन्दक सामूहिक प्रतिरोधक दिशामे प्रवेशकेँ रखैत अछि। चारिमसँ छठम भाग धरि नैना–नन्दक सम्बन्ध, खरहोरि, नाग-नागिन, पोखरि, लोकगीत आ प्रतिशोधक द्वन्द्व विकसित होइत अछि।[60]

सातमसँ दसमा भागमे महानन्दक धान काटबाक सामूहिक योजना, सौदामिनीक पारिवारिक विवशता, लखरूक पहलमानी आ अपराध, रामबाबूक हत्या, हत्याक बादक भय-प्रेत प्रसंग, लखरूक शारीरिक पतन आ बुलकी–राघबक भेट सभ एक-दोसरकेँ काटैत-छेदैत चलैत अछि। एगारहमसँ तेरहम भाग नैना–नन्दक असम्भव प्रेम, नैनाक बेमेल विवाह, वैवाहिक यौन-हिंसा, ओकर मृत्यु, महानन्दक शोक आ सौदामिनीक पुनर्निर्माणपर केन्द्रित अछि। अन्तिम दू भाग बुलकीक पुनरागमन, राजकांतसँ प्रत्यक्ष प्रतिकार, जमीन-हड़पक नब प्रसंग, वृद्धावस्थाक वियोग आ पाजेबक भेंटपर पूरा होइत अछि।[61]

एहि विन्यासक खासियत ई अछि जे मुख्य पात्र बुलकी कतेको प्रसंग धरि दृश्यसँ ओझरायल रहितो कथाक मूल्य-बोधसँ बिलायल नहि होइत अछि। ओकर अनुपस्थिति कालमे कथाकार गामक दोसर शोषण-व्यवस्था देखबैत छथि। जखन कथा फेर बुलकी लग अबैत अछि, पाठक बूझि जाइत अछि जे ओकर संघर्ष कोनो व्यक्तिगत दुर्घटनाक परिणाम मात्र नहि, विस्तृत सामाजिक संरचनाक फल अछि। तथापि लखरू–रामबाबूक दीर्घ प्रसंगक कारण मुख्य धुरीक गति कखनो शिथिल होइत अछि; ई विन्यासक सामर्थ्य आ सीमा दुनू अछि।

३. ‘मनसरबी’ नाम : गामक सम्बोधनसँ आत्मपरिभाषा धरि

पोथीमे ‘मनसरबी’ शब्दक अलग शब्दकोशीय व्युत्पत्ति नहि देल गेल अछि। तेँ ओकर अर्थ मनमाना गढ़ि देब उचित नहि। कथा भीतर राजकांत बुलकीक प्रतिरोधक सामना करैत बुझैत अछि जे लोक ओकरा एही नामसँ किएक बजबैत अछि; बादमे एक भौजी सेहो स्नेह-मिश्रित ठिठोलीमे ओकरा एहि नामसँ पुकारैत

59 मिश्र, मनसरबी, ‘मोनक बात’; लेखक द्वारा वर्णित धारावाहिक आरम्भ आ पुनर्लेखनक अनुभव।

60 मिश्र, मनसरबी, ‘एक’ सँ ‘छह’ धरि।

61 मिश्र, मनसरबी, ‘सात’ सँ ‘पन्द्रह’ धरि।

छथि। एतय नाम स्त्रीक निर्भीकता, अपन मनक बात कहबाक क्षमता, सामाजिक नियन्त्रणसँ असहमति आ आत्मगौरवक सन्दर्भमे उभरैत अछि।[62]

अन्तिम टकरावमे बुलकी स्वयं राजकांतकेँ स्मरण करबैत अछि जे ओ सभ ओकरा 'मनसरबी' कहैत अछि, आ ओकर अपन प्रतिकार देखए। ई क्षण विशेष अर्थपूर्ण अछि : जकरा समाज हँसी, भय अथवा असुविधाजनक स्वभावक चिह्न बना सकैत छल, ओकरा बुलकी सार्वजनिक आत्मपरिचयक साहस बना लैत अछि। शीर्षकक अर्थ एही प्रसंग-परिवर्तनमे खुलैत अछि; शब्दक स्थिर अर्थसँ बेसी ओकर सामाजिक प्रयोग महत्त्वपूर्ण अछि।[63]

नामक ई यात्रा उपन्यासक मूल विडम्बना सेहो खोलैत अछि। बुलकी मनसरबी अछि, मुदा सर्वशक्तिमान नहि। श्रमक बल, बोलबाक निर्भीकता आ आत्मसम्मान रहितो वर्गीय-जातीय-लैंगिक असमानता ओकरा बेर-बेर विवश करैत अछि। ओकर चरित्रमे स्वाधीन इच्छा आ बाध्य सामाजिक स्थिति एक-साथ रहैत अछि; लेखकक उपलब्धि एहि दू सत्यकेँ पूरापूरि मिलाकऽ एकटा सरल विजयोत्सव नहि बनेबामे अछि।

४. बुलकी : श्रम, देह आ अपन निर्णयक अधिकार

बुलकी अमात परिवारक बेटी अछि। खेत-पथार, घास, माल-जालक सेवा, धानरोपनी, कटनी, गोबर, घरेलू श्रम—ई सभ ओकर व्यक्तित्वक केन्द्रीय क्रिया अछि। परिवारक स्त्रीसभक श्रम एकरा चारू कात घेरने अछि, आ कथाकार ग्रामीण अर्थव्यवस्थाक छोट-छोट व्यवहार—दू टा बाँसक मचान, कुम्हर-कदीमाक लत्ती, मवेशीक दूध, बटाइ, मजदूरी—विस्तारसँ बतबैत छथि। श्रम एतय केवल पृष्ठभूमि नहि; बुलकीक बुद्धि, प्रकृतिसँ निकटता आ आत्मनिर्भर स्वभावक निर्माण करैत अछि।[64]

दस बरखक उमेरमे ओकर विवाह होइत अछि। बादमे सासुर बसबाक अनुभवक बाद ओ स्पष्ट कहैत अछि जे फेर ओतय नहि जाएत। माय-बाप, समाज आ पंचक समझेबाक प्रयास सेहो ओकर निर्णय नहि बदलैत अछि। प्रारम्भमे कथाकार कारणकेँ पूरा नहि खोलैत छथि; बादक पाठ पतिसँ बलजोरीक सम्बन्धकेँ ओकर पीड़ाक एक रूपमे स्पष्ट करैत अछि। ई क्रम महत्त्वपूर्ण अछि : समाजक दृष्टिमे हठ बुझाएवाली बात स्त्रीक निजी अनुभवक भीतर जाइत एक भिन्न नैतिक अर्थ पबैत अछि।[65]

62 मिश्र, मनसरबी, 'एक' आ बुलकीक सम्बोधनसँ जुड़ल प्रसंग।

63 मिश्र, मनसरबी, 'चौदह' भाग, बुलकी–राजकांतक टकराव।

64 मिश्र, मनसरबी, 'एक' भाग, अमात परिवारक श्रम आ बुलकीक परिचय।

65 मिश्र, मनसरबी, 'एक' आ अन्तिम भागमे बुलकीक वैवाहिक अनुभवक स्मरण।

तथापि बुलकीक स्वतन्त्रता आर्थिक सुरक्षाक पर्याय नहि। ओ अपन श्रमसँ परिवारक जीवनक संग चलैत अछि, मुदा माय-बापक बादक भविष्य, भायक उपेक्षा आ वृद्धावस्थाक बीमारी ओकरा असुरक्षित बना दैत अछि। आरम्भमे दोसर सगाईक प्रस्ताव अस्वीकार कएनिहार बुलकी अन्तिम भागमे कहैत अछि जे माय-बापक लाज राखबाक निमित्त फेर सगाई कएने छलि; दोसर पति सेहो हिंसक निकलल। ई मोड़ ओकर पहिल निश्चयक असत्यता नहि, सामाजिक दबावक दीर्घकालिक प्रभाव आ जीवनक टूटैत विकल्पकेँ दर्शबैत अछि। दोसर विवाहक विस्तृत दृश्य नहि देबाक कारण ई परिवर्तन किछु आकस्मिक सेहो लगैत अछि।[66]

५. बाँसक मचान आ शोषणक देह-राजनीति

राजकांत द्वारा देल गेल दू बाँस आरम्भमे एक आर्थिक सहायता जकाँ देखाइत अछि। बुलकीक घरमे मचान बनलासँ लत्ती पसारत, तरकारी फलत आ भोजनक दिक्कत घटत—एहि छोट आवश्यकतामे ग्रामीण दरिद्रताक वास्तविक माप उपस्थित अछि। मुदा राजकांत एहि उपकारकेँ स्त्रीक देहपर अधिकारक प्रमाण-पत्र मानैत अछि। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे ओकर 'प्रेम'सँ बेसी वासना अछि आ सूदक मानसिकता ओकर सम्पूर्ण व्यवहारमे बसल अछि। धन, देनदारी, श्रम आ यौन-हिंसा एतय एकहि प्रभुत्वक विभिन्न रूप बनि जाइत अछि।[67]

कथाक आरम्भमे राजकांत द्वारा बलजोरीक सम्बन्ध स्थापित करबाक प्रसंग अछि। बुलकी प्रतिरोध करबाक सामर्थ्य रखैत अछि, तथापि पिता आ परिवारपर संभावित प्रतिहिंसा, आर्थिक निर्भरता तथा दबंग घरानाक आतंक ओकरा रोकैत अछि। एकरा सहमति कहब कथाक साक्ष्यक विपरीत होएत। तकर पश्चात् ओकर मौन, ग्लानि आ भीतर-बैसल प्रतिशोधक इच्छा देखाओल गेल अछि। यौन-हिंसाक बाद स्त्रीक आत्मदोषबोध सेहो समाजक उत्पीड़क संस्कारसँ बनैत अछि—राघबसँ आँखि बचाएब एहि मनोस्थितिक प्रमाण अछि, अपराधक प्रमाण नहि।[68]

अन्तिम भागमे राजकांत फेर बुलकीपर आक्रमण करबाक कोशिश करैत अछि। आब बुलकी ओकरा पटकि दैत, हाँसू हाथमे लैत, प्राणभिक्षा माँगबैत आ समस्त स्त्रीक प्रति भविष्यक दुर्व्यवहार नहि करबाक शपथ लियबैत अछि। एहिमे व्यक्तिगत प्रतिकारक संग स्त्री-समुदायक रक्षाक आग्रह अछि। मुदा धमकी आ अपमानक माध्यमसँ न्याय साधबाक ई दृश्य दोसर प्रश्न सेहो उठबैत अछि : जखन संस्था आ समुदाय

66 मिश्र, मनसरबी, 'चौदह' आ 'पन्द्रह' भाग।

67 मिश्र, मनसरबी, 'एक' भाग, बाँसक लेन-देन आ राजकांतक मनोभाव।

68 मिश्र, मनसरबी, 'एक'–'दू' भाग, बलजोरी आ बुलकीक प्रतिकूल मनःस्थिति।

पीड़ितक पक्षमे नहि ठाढ़ होइ, तखन आत्मरक्षाक हिंस्र रूपक नैतिक सीमा केतबा हो? कथा एहि प्रश्नपर विधिक समाधान नहि दैत, सामाजिक असहायता अवश्य स्पष्ट करैत अछि।[69]

६. राघब–बुलकी : स्नेहक सत्य आ मर्यादाक असमर्थता

राघबक परिवार आर्थिक रूपसँ विपन्न ब्राह्मण परिवार अछि; बुलकी अमात श्रमिक परिवारसँ। दुनूक प्रेम एकहि गामक श्रम-बाँट, जलस्रोत, गाछी आ खेतक बीच विकसित होइत अछि। काँट निकालबाक दृश्य खास अर्थपूर्ण अछि : राघब निर्भर, बुलकी उपचारक; शारीरिक दक्षता, साहस आ देखभालक ज्ञान बुलकीक हाथमे अछि। कथाकार ओकरा एकसंग प्रेमिका, माय आ चिकित्सकक रूपमे देखबैत छथि। एहि दृश्यसँ शिक्षा बनाम अनुभव, जातीय प्रतिष्ठा बनाम व्यावहारिक ज्ञानक उलटाव होइत अछि।[70]

आन्ही-बरखाक रातिक मिलन दुनूक शारीरिक निकटताकेँ प्रकट करैत अछि। कथा ओकरा परस्पर स्नेहक प्रसंग मानैत अछि, जकर स्पष्ट अन्तर राजकांतक हिंसासँ स्थापित होइत अछि। तथापि बादक भेटमे राघब सामाजिक लोकलाजक कारण एकाएक पाछू हटि जाइत छथि। बुलकीक भावनापर एहि झिझकक प्रभावकेँ कथाकार स्वयं प्रश्न करैत छथि। ई आत्मालोचना महत्त्वपूर्ण अछि : शिक्षित, संवेदनशील पुरुषो सामाजिक प्रतिष्ठाक असमान जोखिमसँ ऊपर नहि उठि पबैत अछि।[71]

राघबक चन्द्रकलासँ विवाह आ बुलकीसँ स्थायी सामाजिक वियोगक बीच लेखक प्रेमक 'आत्मिकता' पर बल दैत छथि। मुदा एतय रोमानी भाषा पर्याप्त नहि : विवाहक सुरक्षित वैधानिक घर राघबकेँ भेटैत अछि; बुलकी दीर्घकालिक असुरक्षा, श्रम, हिंसा आ उपेक्षाक संग रहि जाइत अछि। एहि असमान परिणामकेँ केन्द्रमे रखिते सम्बन्धक नैतिक जटिलता खुलैत अछि। राघबक स्नेह सत्य भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर सामाजिक सामर्थ्य अथवा ओकर उपयोगक सीमा सेहो सत्य अछि।

७. पाजेब, सहायता अस्वीकार आ अन्तक असाधारण गरिमा

अन्तिम भेटमे राघब वृद्ध, बीमार आ असहाय बुलकीकेँ देखबाक भयक कारण पहिने भेट नहि करबाक निर्णय लैत छथि। अपन मानसपटलपर युवतीक छवि सुरक्षित रखबाक इच्छा सहानुभूतिक संग सौन्दर्य-केन्द्रित दृष्टिक सीमा सेहो खोलैत अछि। ओ धन पठेबाक प्रस्ताव करैत छथि। बुलकी सामने आबि अपन जीवनक कथा कहैत छथि; तकर बाद ओ देल दस हजार टाका लौटा दैत छथि। एहि अस्वीकृतिकेँ दरिद्रताक

69 मिश्र, मनसरबी, 'चौदह' भाग, बुलकीक प्रतिकार।

70 मिश्र, मनसरबी, 'एक' भाग, राघबक पैरक काँट निकालबाक प्रसंग।

71 मिश्र, मनसरबी, 'एक' भाग आ बुलकी–राघबक बादक भेट।

महिमामण्डन नहि, अवशिष्ट आत्मनिर्णयक घोषणा बुझबाक चाही : अपन जीवनक अन्तिम अर्थ ओ स्वयं निर्धारित करब चाहैत छथि।[72]

बुलकी अपन मायक देल विवाहक पाजेब राघबकेँ दैत छथि आ हुनकर पत्नीकेँ पहिरएबाक आग्रह करैत छथि। पाजेब स्त्रीक विवाह, मातृ-स्मृति, अपूर्ण प्रेम आ सम्पत्तिहीन वृद्धावस्थाक एकत्रित वस्तु बनि जाइत अछि। एहि भेंटकेँ केवल त्यागक महानता कहि मुक्त भऽ गेलासँ ओकर दर्द नुकि जाएत। पाजेब ओकरासँ छीना गेल वैवाहिक सुरक्षा, राघबक स्थापित गृहस्थी आ दुनूक असमान भाग्यक बीच मौन साक्षी अछि। राघबक मौन एतय हुनकर सभ भाषणसँ बेसी अर्थवान होइत अछि।[73]

एहि दृश्यपर लेखक स्पष्ट तुलना करैत छथि—पढ़ल-लिखल राघबक ज्ञानक घमण्ड ध्वस्त होइत अछि आ निरक्षर बुलकी हुनका मानवीय मूल्य बुझबैत छथि। उपन्यासक नैतिक केन्द्र एतय जाति, औपचारिक शिक्षा अथवा सम्पत्तिसँ हटि श्रमशील स्त्रीक जीवनानुभवपर आबि जाइत अछि। मुदा ई साहित्यिक उन्नयन ओकर भौतिक दुःख मेटबैत नहि; यएह विरोध अन्तिम प्रश्नकेँ चुभन दैत अछि।

८. नन्द–नैना : प्रतिशोधक षड्यन्त्रसँ प्रेमक मानवीकरण

महानन्द द्वारा नन्दक अपमान आ पिटाइ ओकर भीतर प्रतिशोधक आगि लगा दैत अछि। पिता द्वारा अन्याय भेलाक दण्ड बेटी नैना मार्फत वसूल करबाक ओकर प्रारम्भिक योजना स्त्रीकेँ पुरुषक आपसी वैमनस्यक माध्यम बना दैत अछि। नन्द राघब लग ई बात स्पष्ट कहैत अछि। राघब प्रतिवाद करैत छथि—पिताक अपराधक प्रतिशोध निर्दोष बेटीपर कथी? ई संवाद उपन्यासक निर्णायक नैतिक मोड़ अछि, कारण कथाकार हिंसाक अन्तर्गत प्रतिहिंसाक लैंगिक तर्कक आलोचना स्वयं पात्रक मुखसँ करबैत छथि।[74]

नैना पहिने नन्दक गुप्त उद्देश्यमे अनभिज्ञ अछि। ओकर नजरिमे डोकहरक बाट, खरहोरिक काँट, नन्दक हाथक सात चम्पा फूल, पोखरिक जल आ नाग-नागिनक जोड़ी प्रेमक संकेत अछि। नन्दक दृष्टि क्रमशः बदलैत अछि; पोखरिक अनुभवक बाद लेखक ओकर भीतर प्रतिशोधक अपेक्षा प्रेमक विकास लिखैत छथि। ई परिवर्तन कथानकक नैतिक सम्भावना अछि, मुदा केवल दैहिक आकर्षणसँ प्रतिशोध अचानक नष्ट भेलाक प्रस्तुति मनोवैज्ञानिक दृष्टिसँ किछु शीघ्र लगैत अछि। राघबक सलाह, नैनाक भरोसा आ नन्दक आत्मानुभव—तीनू मिलि परिवर्तनकेँ तुलनात्मक आधार दैत अछि।[75]

72 मिश्र, मनसरबी, ‘पन्द्रह’ भाग, वृद्धावस्थाक भेट।

73 मिश्र, मनसरबी, ‘पन्द्रह’ भाग, पाजेबक भेंट।

74 मिश्र, मनसरबी, ‘दू’–‘चारि’ भाग, नन्दक प्रतिशोधक विचार।

75 मिश्र, मनसरबी, नैना–नन्दक खरहोरि, फूल आ पोखरिक प्रसंग।

नैना बादमे नन्दक प्रारम्भिक योजना बुझि जाइत अछि आ प्रत्यक्ष बातचीतमे ओ हुनकासँ स्वीकारोक्ति माँगैत अछि। नन्द भ्रम अथवा झूठक सहारा नहि लैत, स्वीकार करैत अछि जे पहिने स्वाँग छल आ बादमे प्रेम भऽ गेल। ई संवाद प्रेमक नैतिक परीक्षा अछि : विश्वास छलसँ आरम्भ भेल रहय, तखन ओकर पुनर्स्थापन लेल सत्य कहब अनिवार्य। नैना ओकरा क्षमा करैत अछि, मुदा कथाक समाज समगोत्री विवाहक अनुमति नहि दैत।[76]

९. समगोत्र, धन-सत्ता आ नैनाक वैवाहिक विपत्ति

नैना आ नन्द एकहि गोत्रक कहल गेल छथि; उपन्यासक सामाजिक संसारमे ई विवाहक निषेध बनैत अछि। आर्थिक अन्तर सेहो गम्भीर अछि : नैना प्रभुत्वशाली धनी घरसँ, नन्द अपेक्षाकृत दरिद्र परिवारसँ। नैना अपन बहिन मीनाकेँ एहि दू बाधाक अन्तर बतबैत अछि। एकर अर्थ ई नहि जे समगोत्र सम्बन्धपर सभ समाज एक मत अछि; ई उपन्यासमे चित्रित परिवार आ समुदायकेँ संचालित करएवाली मान्यता अछि। लेखक एहि निषेधकेँ घटनाक अपरिवर्तनीय सामाजिक शक्ति जकाँ बरतैत छथि।[77]

नैना अन्तिम भेटमे अपन इच्छासँ नन्दक संग निकटता स्वीकार करैत अछि, मुदा ओकर बाद सम्बन्ध समाप्त करबाक निर्णय सेहो स्पष्ट कहैत अछि। नन्द ओकर निर्णयक आदर करैत अछि; विवाहक बाद नैना हुनका पुनः कामनाभरि दृष्टिसँ नहि देखैत आ नन्द सेहो सीमा राखैत अछि। एतय स्त्रीक इच्छाक स्वीकृति आ ओकर बदलैत निर्णयक आदर उपन्यासक उल्लेखनीय पक्ष अछि।

मुदा जे विवाह सामाजिक दृष्टिसँ वैध ठहरैत अछि, वैह नैनाक लेल प्रतिदिनक घरेलू आ यौन-हिंसा बनि जाइत अछि। कथा ओकर पति सुधीर चौधरीक असम्मानजनक व्यवहारकेँ स्पष्ट रूपसँ चिन्हबैत अछि; ओकर स्वास्थ्य बिगड़ैत अछि आ अन्ततः मृत्यु होइत अछि। नैनाक अन्तिम चिन्ता ई अछि जे छोट बहिन मीनाक विवाह ओकर हिंसक पतिसँ नहि करा देल जाए। माय सौदामिनी एहि पुनरावृत्तिकेँ रोकैत छथि। एहि सम्बन्धमे कथा समाज-स्वीकृत विवाह आ स्त्रीक वास्तविक सुरक्षित जीवनक बीचक अन्तर अत्यन्त तीक्ष्ण ढंगसँ प्रकट करैत अछि। नैनाक मृत्युक चिकित्सकीय कारण पाठमे निश्चित नहि बताओल गेल अछि; ओकरा केवल वियोगसँ मरल मानि लेब पाठक निष्कर्षक सरलीकरण होएत।[78]

76 मिश्र, मनसरबी, नैना–नन्दक स्पष्टोक्ति आ क्षमाक संवाद।

77 मिश्र, मनसरबी, नैना–नन्दक विवाहसम्बन्धी बाधाक संवाद।

78 मिश्र, मनसरबी, ‘एगारह’ सँ ‘तेरह’ धरि, नैना–सुधीरक वैवाहिक प्रसंग।

१०. सौदामिनी : गृहस्थी भीतरक विवेक, शोक आ पुनर्निर्माण

महानन्दक बाहरी निर्दयता आ घर भीतरक पुत्रीस्नेहक अन्तर सौदामिनी प्रत्यक्ष अनुभव करैत छथि। ओ पति द्वारा गरीबक शोषणक अनुमोदन नहि करैत, मुदा दबंग परिवारमे हुनक विरोध सीमित रहैत अछि। लेखक हुनका 'विभीषण' सदृश स्थितिमे राखैत छथि। ई उपमा उचित तखन धरि अछि जखन हम बुझी जे सही-बेसीक ज्ञान रखब आ ओकर विरुद्ध सक्षम कार्रवाई करब अलग-अलग सामाजिक स्थिति अछि। पारिवारिक प्रेम अत्याचारक क्षमादान नहि भऽ सकैत अछि।

नैनाक रोग, मृत्यु आ तकर बाद महानन्दक पतनक बीच सौदामिनी शोकक पात्रसँ निर्णय लेनिहार व्यक्तिक रूपमे विकसित होइत छथि। सुधीरक मीनासँ विवाहक प्रयास रोकेब, बाँकी तीन बेटीक विवाहमे उमेरि आ स्वभावक साम्यकेँ प्राथमिकता देब आ गामक शोषक सम्पत्ति-विवादसँ दूरी बनएब—ई सभ हुनक बढ़ैत स्वायत्तताक चरण अछि। अन्ततः ओ सम्पत्तिक भाग बेचि मुजफ्फरपुरमे जमीन आ भाड़ा देबाक कमरा बनबैत छथि, जाहिसँ जीवननिर्वाहक नियमित साधन बनैत अछि।[79]

सौदामिनीक कथा बतबैत अछि जे उपन्यासमे स्त्रीक मुक्ति एकमात्र प्रेम-चयनमे नहि अछि। विधवा-जीवनमे आर्थिक नियोजन, हिंसक सम्बन्धकेँ अस्वीकार, बेटीसभक भविष्यमे विवेकपूर्ण हस्तक्षेप आ असुरक्षित गाम छोड़ब सेहो प्रतिरोधक रूप अछि। बुलकीक विपरीत सौदामिनीकेँ सम्पत्तिक आधार भेटैत अछि—ई अन्तर दुनू पात्रक परिणाम समझबाक लेल अनिवार्य अछि।

११. राघबक माय : प्रतिशोधक विपरीत करुणाक व्यवहार

राघबक मायक चरित्र कथाक तेसर नैतिक धुरी अछि। जे बूढ़ पहिने हुनकर ससुरसँ जमीन बलजोरी लिखबा लेने छल, वृद्धावस्थामे ओ उपेक्षित, भुखल आ निर्भर भऽ गेल अछि। राघबक माय ओकरा लेल कटहरक तरकारी, भात, दालि, चटनी आ दही बना स्वयं लऽ जाइत छथि। वृद्ध अपन अपराध मानि जमीन वापस करबाक इच्छा व्यक्त करैत अछि, मुदा राघबक माय पहिने सेवा आ आशीषकेँ प्राथमिकता दैत छथि। एहिमे दण्डक अपेक्षा मनुष्यता-आधारित प्रतिक्रम अछि।[80]

नीरसक पीड़ित परिवारकेँ दूध देब आ बीढ़नीक आक्रमणमे फँसल असहाय महिलाक रक्षा करब सेहो हुनक चरित्रक सामाजिक विस्तार अछि। ई स्त्री प्रतिकार करैत छथि, मुदा ओकर उपाय हिंसा होइए तँ तकर उद्देश्य प्राणरक्षा अछि, बदला नहि। राघबक नैतिक शिक्षाक अनेक स्रोत एहि व्यवहारमे खोजल जा सकैत अछि।

79 मिश्र, मनसरबी, सौदामिनीक पारिवारिक निर्णय आ आर्थिक पुनर्निर्माणक प्रसंग।

80 मिश्र, मनसरबी, राघबक माय द्वारा पश्चात्तापरत वृद्धक सेवाक प्रसंग।

फेरो, ई करुणा संस्थागत न्यायक विकल्प नहि होएत। जखन अत्याचारी जमीन हड़पि लेत अछि आ पीड़ित कर्जे डूबल रहैत अछि, एक सज्जन स्त्रीक उदारता मात्रसँ प्रणाली बदलैत नहि। कथा दयाक उजास देखबैत अछि, संगहि अनुत्तरित रखैत अछि जे अगिला पीढ़ीकेँ वैह अत्याचारसँ कोना बचाओल जाए।

१२. महानन्दक सत्ता : सूदक बही, बेगार आ भयक जाल

‘रावणक गच्छ’ उपन्यासक स्थानीय सत्ता-व्यवस्थाक नाम बनैत अछि। कर्ज देब, बहीमे नाम नहि काटब, जमीन लिखवा लेब, बेगार करएबाक दबाव, सार्वजनिक मारि-पीट, स्त्रीपर कुदृष्टि—ई सभ एकहि आर्थिक-सामाजिक तन्त्रक कड़ी अछि। ओकर भय केवल ओकर शारीरिक बलसँ नहि, ऋण, भूमि, गोत्रीय-सामाजिक प्रतिष्ठा आ सहयोगी परिवारक संजालसँ पैदा होइत अछि। आरम्भक गामक श्रेणी-विवरण एहि व्यापक रूपक पूर्वपीठिका बनैत अछि।[81]

नीरसक प्रसंग एहि हिंसाक चरम रूप अछि। अल्प ऋणक वापसीमे देरीक कारण महानन्द ओहि वृद्ध श्रमिककेँ निर्ममतासँ घायल करैत अछि; दीर्घ पीड़ाक बाद नीरसक मृत्यु होइत अछि। ओकर पत्नीक प्रार्थना, राघबक माय द्वारा देल दूध आ भयातुर गामक चुप्पी मिलि एकर सामाजिक परिणाम देखबैत अछि। अपराध एकटा क्रूर आदमीक निजी स्वभावमे सीमित नहि; दर्शकक विवशता, कमजोरक निर्भरता आ कारगर दण्ड-व्यवस्थाक अनुपस्थिति ओकर सहायक परिस्थिति अछि।[82]

उपन्यासक अन्तिम भागमे राजकांतक जमीन नापबाक कौशलक दुरुपयोग एही संरचनाक नब रूप अछि। ओकरा पढ़ल राजनीतिक शब्दावली आ सीमांकनक ज्ञान अछि, मुदा ओ गरीब डोम परिवारक घरबारी धरि छोट करा दैत अछि। अर्थ ई जे शोषणक साधन बदलि सकैत अछि—सूदक बहीसँ नाप-जोखक कागज धरि—मुदा अधिकारहीन लोकक दैन्य पूर्ववत् रहि सकैत अछि।[83]

१३. जाति आ वर्ग : परस्पर जुड़ल मुदा एक नहि

उपन्यास ब्राह्मण, अमात, मल्लाह, धानुख, डोम, दुसाध आ आन श्रमिक समूहक सहअस्तित्व देखबैत अछि। अमात स्त्रीसभक घोर श्रम, डोम परिवारक आवासहीनता, ब्राह्मण परिवारक कर्ज-निर्भरता आ धनी ब्राह्मण घरानाक प्रभुत्व—एकहि जातिव्यवस्थामे आर्थिक अवस्थाक अनेक स्तर बनबैत अछि। एहिसँ स्पष्ट

81 मिश्र, मनसरबी, ‘एक’ भाग, ‘रावणक गच्छ’क परिचय।

82 मिश्र, मनसरबी, ‘दू’ भाग, नीरसपर महानन्दक अत्याचार।

83 मिश्र, मनसरबी, ‘पन्द्रह’ भाग, भूमि-सीमांकन आ डोम परिवारक प्रसंग।

अछि जे लेखक जातिक भीतर वर्गीय भेदकेँ देखैत छथि; मुदा जाति-आधारित अपमान आ अभावकेँ वर्गीय गरीबीमे गुम करब उचित नहि।[84]

राघब एक प्रसंगमे कहैत छथि जे हुनकर गरीब ब्राह्मण परिवारक अवस्था 'दलितोसँ' खराब अछि। ई पात्रक आत्मानुभव आ आक्रोशक वक्तव्य अछि; एकरा समाजशास्त्रीय तुलनाक सिद्ध निष्कर्ष नहि मानल जा सकैत। जातिगत बहिष्कारक ऐतिहासिक स्वरूप आ निर्धन उच्चजातीय परिवारक आर्थिक कष्ट परस्पर सम्बन्धित भऽ सकैत अछि, मुदा समानार्थी नहि। ई आलोचनात्मक अन्तर राखलासँ कथा भीतर स्वयं उपस्थित वंचनाक बहुस्तरता अधिक साफ देखाइत अछि।[85]

उत्तर बिहारक दू गामपर आधारित अवनीश कुमारक २०२२ केर क्षेत्र-अध्ययन जमीनक असमान स्वामित्व, बटाइ आ जाति-संरचनाक परस्पर सम्बन्ध देखबैत अछि। ई शोध उपन्यासक काल अथवा ओकर गामक घटनाकेँ प्रमाणित नहि करैत; केवल एहन ग्रामीण सम्बन्धकेँ विस्तृत सामाजिक प्रश्नक रूपमे पढ़बाक तुलनात्मक पृष्ठभूमि दैत अछि। मूल उपन्यासक साहित्यिक सत्य आ क्षेत्र-अध्ययनक आँकड़ाक प्रमाण-पद्धतिक अन्तर राखब जरूरी अछि।[86]

१४. सामूहिक प्रतिरोध आ ओकर नैतिक दोधार

नन्द अत्याचारक प्रतिरोध लेल कम्युनिस्ट कार्यकर्तासभसँ जुड़ैत अछि। गुप्त बैसारमे राघब प्रस्ताव दैत छथि जे महानन्दकेँ शारीरिक आक्रमणक अपेक्षा आर्थिक चोट देल जाए। ओकर चारि बीघा धानक शीश रातिमे काटि लेल जाइत अछि; लगभग एक सय दस लोक भाग लैत अछि। लेखक एहि सफलताकेँ सामूहिक शक्ति आ शोषितक भय टूटबाक क्षण मानैत छथि।[87]

एहि प्रसंगक सामाजिक अर्थ ठोस अछि : दरिद्र व्यक्तिक एकल विरोध असुरक्षित अछि, मुदा संगठन ओकरा साहस दैत अछि। तखनहुँ धान काटबाक विधि कानूनसम्मत अथवा सार्वकालिक न्याय-प्रणालीक रूपमे प्रस्तुत करब उचित नहि। कथामे आर्थिक प्रतिशोध सफल भेल, मुदा एहि कार्यमे स्त्रीसभ शामिल नहि छलथि, आ श्रमिकक दीर्घकालिक भूमि-अधिकारक व्यवस्था बनल नहि देखाओल गेल अछि। सामूहिक कार्रवाईक नैतिक ऊर्जा आ ओकर सीमा दुनूकेँ पढ़ब आवश्यक अछि।

84 मिश्र, मनसरबी, 'एक' भाग आ अन्तिम भागक श्रम–जाति प्रसंग।

85 मिश्र, मनसरबी, राघबक परिवारक दरिद्रता सम्बन्धी कथोपकथन; ई पात्रक दृष्टि अछि, लेखकक सामाजिक तथ्याङ्क नहि।

86 Kumar, Awanish. “Land and Caste Relations in North Bihar: Observations from Two Villages.” Review of Agrarian Studies 12, no. 1 (2022). https://doi.org/10.25003/RAS.12.01.0007।

87 मिश्र, मनसरबी, नन्दक संगठन आ महानन्दक धान काटबाक सामूहिक योजना।

अन्तिम भागमे राजकांत सेहो कम्युनिस्ट विचारधाराक पोथी पढ़ल आ आन्दोलनसँ सुविधानुसार जुड़ल कहल गेल अछि, मुदा जमीन-हड़प आ स्त्री-उत्पीड़न छोड़ैत नहि। लेखक एतय विचारधाराक नाम आ आचरणक अन्तर उद्घाटित करैत छथि। एकर बादो दलगत राजनीतिक इतिहासपर उपन्याससँ सर्वमान्य निष्कर्ष निकालब सम्भव नहि; उपलब्ध कथापात्रक व्यवहार पर आलोचना सीमित रहबाक चाही।[88]

१५. लखरू खलीफा आ रामबाबू : शक्ति, अपराध आ आत्मभय

लखरूक कथा आरम्भमे ग्रामीण पहलमानीक तालीम, अखाड़ाक अनुशासन, दूध, अभ्यास, गुरु आ प्रतिष्ठाक मार्ग देखबैत अछि। ओकर पिताक सामाजिक असुरक्षा बेटाक शारीरिक शक्तिक राजनीतिक दुरुपयोगमे बदलैत अछि। गुरु गामा खलीफाक मृत्यु, ताड़ी-दारूक लत, दबंग समूह आ परिवारक कलह ओकर पतन तेज करैत अछि। शारीरिक शक्ति जखन नैतिक अनुशासनसँ कटि जाइत अछि, तखन ओ रक्षकक स्थानपर भयक साधन बनैत अछि।[89]

अखिल सिंह अपन नशाग्रस्त आ हिंसक पुत्र रामबाबूक हत्या करएबाक गुप्त निर्णय लैत अछि। लखरू पाइसँ भाड़ाक हत्यारा बनैत अछि। एहि निर्णयमे अखिलक पितृत्व, अपमानक भय, कुल-प्रतिष्ठा आ अपराधक भयानक अन्तर्द्वन्द्व देखाइत अछि। रामबाबूक मृत्युक बाद पिता अपराधबोधसँ टूटि जाइत अछि; बादमे लखरूक जीवनमे मृतकक आवाज, प्रेत-छाया, रोग आ भयक क्रम प्रवेश करैत अछि।[90]

लेखक प्रेतक स्वतन्त्र अस्तित्वक दृश्य सेहो रचैत छथि, संगहि लखरूक सपना, बीमारी आ अपराधबोधक अनुभूति लिखैत छथि। तेँ एकरा केवल चिकित्सकीय भ्रम अथवा निर्विवाद अलौकिक घटना—दुनूमे सँ कोनो एक घोषित करब पाठक बहुवाचकता घटा देत। साहित्यिक स्तरपर ई ‘अपराधक देहमे लौटब’क भयावह रूपक अछि। मुदा कैंसर, मधुमेह, पक्षाघात अथवा ब्रेन-ट्यूमरकेँ वास्तविक जीवनमे अपराधक दैवी दण्ड मानब चिकित्सकीय रूपसँ असंगत होएत; ई पाठमे रचल नैतिक नियतिक काव्यात्मक संरचना अछि, वैज्ञानिक कारण-विवेचन नहि।[91]

---

88 मिश्र, मनसरबी, राजकांतक राजनैतिक रुचि आ जमीनसम्बन्धी व्यवहारक प्रसंग।

89 मिश्र, मनसरबी, लखरूक अखाड़ा, प्रशिक्षण आ शक्तिक दुरुपयोगक प्रसंग।

90 मिश्र, मनसरबी, अखिल सिंह, रामबाबू आ लखरूक कथा।

91 मिश्र, मनसरबी, लखरूक अपराधबोध, प्रेत-दर्शन आ रोगक प्रसंग।

१६. कर्मफल-विधान आ बुलकीक अपवाद

उपन्यासमे बेर-बेर समयक प्रहार, कर्मक फल, दुष्टक पतन आ निर्दोषक नैतिक श्रेष्ठताक घोषणा सुनबामे अबैत अछि। सूदखोरक धन जाएत, दबंगक देह निर्बल होएत, हत्याकारी भयसँ घेराएत, अत्याचारक परिवार विघटित होएत। लखरूक क्रमशः रोगग्रस्त जीवनक विस्तृत वर्णन एहि नैतिक प्रतिपादनकेँ प्रायः दृष्टान्तक रूप दैत अछि। उपन्यासक कतेको ठाम कथाकार 'कर्मयुग'क धारणा रखैत छथि—स्वर्ग-नरक एहि धरतीपर भोगल जाइत अछि।[92]

मुदा बुलकी अपराधिनी नहि। ओ खेतमे श्रम करैत अछि, परिवार सम्हारैत अछि, हिंसा सहैत अछि, प्रेम करैत अछि आ आवश्यक बेर प्रतिरोध करैत अछि। तइयो वृद्धावस्थामे ओकर जीवन बीमारी, असुरक्षा आ एकान्तसँ भरि जाइत अछि। अन्तिम प्रसंगमे राघबक मनमे उठल प्रश्न—बुलकी संग एना किएक भेल—उपन्यासक पूर्वोक्त नैतिक गणितकेँ खण्डित करैत अछि। एहि एक प्रश्नमे कथाकार अपन स्थिर उपदेशात्मक आवाजसँ बाहर आबि अनिश्चित अनुभवक सामने ठाढ़ होइत छथि।[93]

एहि दृष्टिसँ अन्तिम वाक्य, जे सम्पूर्ण प्रसंगक 'पूर्णता' नहि 'प्रारम्भ'क संकेत करैत अछि, मात्र अगिला भागक उत्सुकता पैदा करबाक युक्ति नहि। ई पाठकसँ नब प्रश्न पूछबाक खुलल अवकाश सेहो अछि : न्यायक कल्पना जँ केवल अत्याचारीक दुःखसँ संतुष्ट होइत अछि तँ पीड़ितक अपूर्ण जीवनक हिसाब के करत? एहि प्रश्नसँ उपन्यासक सबसँ दीर्घकालिक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि।

१७. लोकसंस्कृति : गीत, फकड़ा आ नैतिक स्मृति

लोकगीत 'मनसरबी'मे सजावटी अन्तःप्रवेश नहि अछि। बुलकीक नचारी-महेशवानी, नैनाक प्रेम-विरहक गीत, विद्यापतिक पंक्ति, पराती, खजन चिरैक करुण स्वर, फकड़ा आ कहबी—ई सभ पात्रक मानसिकता बयान करबाक लोक-सुलभ माध्यम अछि। नैनाक प्रेम बनैत काल गीतक लय बदलैत अछि; महानन्दक घरमे पुत्र-लालसाक कथा एक चिरैयाक बोलसँ जुड़ैत अछि; बूढ़क पश्चाताप परातीमे आवाज पबैत अछि। लोककण्ठ एतय व्यक्तिगत वेदनाकेँ सामूहिक श्रवणक आयाम दैत अछि।[94]

विशेष उल्लेखनीय बाहरी सन्दर्भ लेखकक 'Classification and Structure of Maithili Folksongs' नामक शोधलेख अछि, जे इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्रक वेबसाइटपर उपलब्ध अछि। ओहि लेखमे जीवन-चक्र, ऋतु, कृषि, भक्ति, नचारी-महेशवानी, प्रेम-विरह आ ज्ञानगीतक अलग रूपक चर्चा

92 मिश्र, मनसरबी, महानन्दक पतन आ लखरूक कष्ट-प्रसंग।

93 मिश्र, मनसरबी, 'पन्द्रह' भाग, राघबक अन्तिम प्रश्न।

94 मिश्र, मनसरबी, नैना–नन्दक गीत, बुलकीक नचारी आ लोकगीतक अन्य प्रसंग।

अछि। उपन्यासमे लोकगीतक बहुरूपता आ एही शोधाभिरुचिक बीच विषयगत साम्य देखाइत अछि। मुदा एहि साम्यसँ ई प्रमाणित नहि होइत जे उपन्यासक अमुक गीत लेखकक अमुक क्षेत्र-अनुसन्धानसँ सीधा उठाओल गेल; एहन दावीक लेल पृथक साक्ष्य चाही।[95]

गीतक पाठ-पद्धति सेहो आवश्यक अछि। किछु गीत आ सूक्तिमूलक वाक्य पात्र गबैत छथि, किछु कथाकारक स्मृति रूपेँ अबैत अछि। सभकेँ बिना भेद लेखकक मौलिक पद रचना बुझब उचित नहि। कविता-लोकक उद्धरण कथा भीतर पात्रक सांस्कृतिक स्मरण होइत अछि; ओकर प्राथमिक रचना-इतिहास एहि उपन्याससँ सिद्ध नहि होइत।

१८. प्रकृति : पृष्ठभूमि नहि, अर्थ रचनिहार क्रियाशील परिवेश

खरहोरि, साबे घास, कअर, पोखरि, जाठि, आमक गाछी, धानक शीश, चम्पा, नाग-नागिन आ बरखा ‘मनसरबी’मे घटनास्थल मात्र नहि। काँट निकालबाक क्षण शरीरक पीड़ा आ प्रेमक समीपता एकठाम आनैत अछि। बरखा राघब–बुलकीक शारीरिक सम्बन्धक परिस्थिति बनबैत अछि। खअरक झाड़ नैनाक भयकेँ नन्दक संग भरोसामे रूपान्तरित करैत अछि। पोखरिक भीतर पानिक तरलता प्रेमक गोपनीयताक बिम्ब बनैत अछि।[96]

नाग-नागिनक दृश्यक तीन चरण अछि—पहिने आतंक, फेर बुलकीक लोक-ज्ञानसँ भयक शमन, अन्ततः नैनाक दृष्टिमे प्रेमक प्रतीक। ई एकहि प्राकृतिक वस्तुक बदलैत अर्थक सुन्दर उदाहरण अछि। प्रकृति पर पात्रक मनोभाव आरोपित होइत अछि; प्रकृति स्वयं प्रेम-विरोध अथवा नैतिक आज्ञा नहि दैत। एहि बोधक कारण उपन्यासक प्राकृतिक बिम्ब मनोवैज्ञानिक रूपसँ अधिक जटिल होइत अछि।[97]

प्रकृतिक वर्णनमे विस्तृत स्थानीय वस्तु-संसार अछि : लत्ती-फत्ती, मड़ुआ, चास, खेत, मचान, दही, घासक औषधीय प्रयोग, आमक भेद, पानिक स्रोत। ई विस्तार पाठकेँ ग्राम्य जीवनक भौतिकता दैत अछि। कखनो मुदा दृश्यसँ अधिक अलंकारक भार आबि जाइत अछि; एकहि स्त्री-देहक अनेक प्राकृतिक उपमान कथा आगाँ बढ़बाक गति रोकैत अछि। एही कारण प्रकृति-चित्रण कखनो मौलिक, कखनो अतिविस्तारित प्रतीत होइत अछि।

95 Mishra, Kailash Kr. “Classification and Structure of Maithili Folksongs.” Vihangama, vol. 1 (2001), इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र। https://ignca.gov.in/PDF_data/Classification_Structure_Maithili_FolkSongs.pdf।

96 मिश्र, मनसरबी, काँट, बरखा, खरहोरि आ पोखरिक प्रसंग।

97 मिश्र, मनसरबी, नैना–नन्दक मिलनक समय नाग–नागिनक प्रसंग।

१९. आख्यानकर्ता : सर्वज्ञ दृष्टि, पात्रक भीतरक स्वर आ टिप्पणी

उपन्यासक मूल कथावाचक तृतीय पुरुषमे घटना कहैत अछि, मुदा पात्रक मोन भीतर प्रवेश करबाक दावा सेहो करैत अछि। राघबक दुविधा, बुलकीक भय, नन्दक प्रतिशोध, नैनाक स्वप्न, महानन्दक पितृस्नेह आ लखरूक अपराधबोध—सभक आन्तरिक स्थिति पाठककेँ भेटैत अछि। एक पात्रक दृष्टिसँ दोसर पात्रक दृष्टि दिस बिना औपचारिक सूचना सर्नाइ कथाक विशेष चालि अछि। एहि सर्वज्ञ कथनसँ विशाल सामाजिक चित्र बनैत अछि, मुदा कखनो पाठककेँ स्वयं निष्कर्ष निकालबाक अवकाश कम भेटैत अछि।

कथाकार प्रत्यक्ष नैतिक टिप्पणी करैत छथि—कियो स्त्रीक देहकेँ उपभोग मानैत अछि, कियो धनक घमण्डमे अछि, कर्मफल केहन होइत अछि। एहन टिप्पणी लोककथा-सदृश कंठसँ मेल खाइत अछि। ई पाठककेँ नैतिक दिशा दैत अछि, मुदा साहित्यक अप्रत्यक्ष ध्वनिक सम्भावना कखनो सीमित करैत अछि। उदाहरणार्थ नीरसक पीड़ा स्वयं एतेक तीव्र अछि जे तकर बादक नैतिक घोषणाक आवश्यकता अपेक्षाकृत कम रहि जाइत अछि।[98]

कथा समयक गति असमान अछि। नीरसक सत्रह दिनक पीड़ा, काँट निकालबाक मिनटसभ, नैनाक खरहोरिमे चलनाइ अथवा प्रेम-मिलनकेँ विशेष विस्तार भेटैत अछि; दोसर दिस वर्षसभक विवाह, बीमारी, प्रवास आ मृत्यु कतेको बेर छोट अनुच्छेदमे बीति जाइत अछि। ई समय-विस्तार आ समय-संकोचक युक्ति जखन पात्रक महत्त्वपूर्ण परिवर्तनकेँ प्रभावित करैत अछि तखन कलात्मक प्रश्न उठैत अछि—कोन जीवनक क्षणकेँ कथा सुनबाक अधिकार अधिक भेटल?

२०. संवाद, बोली आ भाषिक रूप-संरचना

पोथीक सबसँ जीवित गुण संवादक सामाजिक वैविध्य अछि। श्रमिकक बोलचाल, स्नेहक सम्बोधन, बुजुर्गक डर, कर्जदाता धनीक उग्रता, पढ़ल राघबक तर्क, नन्दक राजनीतिक नारा आ स्त्रीसभक परस्पर छेड़छाड़ अलग-अलग वाणी बनबैत अछि। पात्रसभ ‘अहाँ’, ‘तों’, ‘छौक’, ‘छैक’, ‘छथिन’ आदिक चयनसँ दूरी, निकटता आ दर्जाक अन्तर व्यक्त करैत छथि। ई भिन्नता उपन्यासक भाषिक सम्पदा अछि; एकर सम्पादकीय ‘एकरूपता’ करैत समस्त बोलचालकेँ मानक गद्य बनएब साहित्यिक हानि होएत।

लेखकक वर्णनमे लोक-उपमा, मुहावरा, प्रश्नवाचक सम्बोधन आ आवेगपूर्ण वाक्य प्रचुर अछि। अनपढ़ बुलकीक व्यावहारिक बुद्धि आ पढ़ल राघबक नैतिक संकोच वाक्य-विन्यासे प्रकट होइत अछि। कखनो

98 मिश्र, मनसरबी, नीरसक कष्ट आ कथाकारक नैतिक टिप्पणी।

अल्पविराम-विरामचिह्नक अनियमितता, अर्थ नबढ़बैत वाक्यक पुनरावृत्ति आ अत्यधिक विस्मयचिह्न पाठककेँ दृश्यसँ दूर करैत अछि। शब्दक जीवन्तता बनेने रहितो वर्णनकेँ अधिक चुस्त कएल जा सकैत अछि।

नामक प्रयोगमे किछु असंगति सेहो भेटैत अछि। नैनाक पिताक सन्दर्भमे एक ठाम 'महानन्द'क स्थानपर 'महाकान्त' आ राजकांतक अन्तिम प्रसंगमे 'सोहन' नाम आएल अछि। एहन प्रसंगस्थ विसंगति पाठकक एकाग्रताकेँ प्रभावित करैत अछि। मुदा लेखकक भाषागत प्रवृत्ति आ मुद्रणजन्य त्रुटिमे अन्तर राखब आवश्यक अछि; पात्रक लोकबोलीकेँ मात्र मानक रूपसँ भिन्न होएबाक कारण दोष नहि मानल जा सकैत अछि।[99]

२१. स्त्री-पात्रक दृष्टि बनाम स्त्री-देहपर कथनक दृष्टि

उपन्यास स्त्रीक सहमति आ असहमतिमे नैतिक अन्तर स्थापित करैत अछि। बुलकीक विवाहजन्य यौन-अनुभव आ राजकांतक हिंसा बलजोरीक रूपमे देखाओल गेल अछि; नन्दसँ नैनाक अन्तिम भेट ओकर अपन उच्चारित इच्छाक प्रसंग अछि; सुधीरक घरेलू यौन-उत्पीड़नक कड़ी निन्दा कएल गेल अछि। एहि कारण पाठक स्त्रीक देहपर परिवार अथवा विवाहक स्वतः अधिकारक विचारपर प्रश्न उठा सकैत अछि।[100]

तथापि कथावाचक अनेक दृश्यमे स्त्री-पात्रक वक्ष, जाँघ, चाम आ देहक उभारक दीर्घ विवरण दैत छथि; नैनाक किशोरावस्थाक प्रसंग सेहो एहि दृष्टिक परिधिमे अछि। एतय द्वन्द्व उत्पन्न होइत अछि : लेखक स्त्रीक स्वायत्तताक पक्ष धरैत छथि, मुदा कथनक कैमरा कखनो ओकर चेतनासँ हटि दर्शकक दैहिक रसास्वादपर ठहरि जाइत अछि। आलोचककेँ एहि विरोधकेँ नहि नुकाएबाक चाही। स्त्रीक अनुभवक साहित्यिक प्रतिष्ठा केवल ओकर देहक आकर्षण वर्णनसँ नहि, ओकर निर्णय, श्रम, भय, विकल्प आ वाणीकेँ पर्याप्त जगह देबासँ बनैत अछि।

एहि आलोचनासँ कथाक शृंगार-रसक सम्पूर्ण निषेध नहि होइत अछि। प्रश्न शृंगार अछि कि नहि, से नहि; प्रश्न ई अछि जे कोन पात्रकेँ केहन दृष्टिसँ देखाओल जाइत अछि, के अपन इच्छा बजि सकैत अछि आ के केवल देखल जाइत अछि। बुलकीक पाजेब-भेंटक दृश्य एहि दृष्टिसँ सबसँ प्रभावशाली अछि, कारण ओतय देहक अपेक्षा स्मृति, दैन्य, वचन आ आत्मगौरव अर्थक केन्द्र बनैत अछि।

99 मिश्र, मनसरबी, नैनाक पिता आ राजकांतसँ जुड़ल उत्तरार्द्धक प्रसंग; नामरूपक अन्तर मूल मुद्रित पाठमे देखल जा सकैत अछि।

100 मिश्र, मनसरबी, बुलकी–राजकांत आ नैना–सुधीरक हिंसक सम्बन्धक प्रसंग।

२२. धार्मिक बिम्ब, करुणा आ सामाजिक न्याय

कथामे शिव, भगवती, कर्मफल, रामायणक रावण–विभीषण उपमा, कृष्ण–राधाक जलक्रीड़ा-संकेत आ विद्यापतिक प्रेमगीत एकसंग रहैत अछि। बुलकीक सोमवारी पूजा व्यक्तिगत मनोबलक साधन अछि; नीरसक पत्नी महानन्दक अत्याचारक बाद भोला बाबासँ इन्साफ माँगैत अछि; सौदामिनी संकटमे धार्मिक स्मृतिक सहारा लैत छथि। ई आस्था पात्रक वास्तविक भावभूमि अछि, ओकरा अन्धविश्वास कहि नकारि देब पाठकीय अन्याय होएत।[101]

मुदा उपन्यास ई प्रश्न सेहो छोड़ैत अछि जे प्रार्थना आ शापसँ अतिरिक्त समाज न्याय लेल कोन व्यवस्था रचैत अछि। नीरस मरि जाइत अछि; बुलकीक परिवार डरैत अछि; डोम परिवारक घर छोट कऽ देल जाइत अछि। ई सभ प्रसंग आध्यात्मिक अर्थक संग ठोस भौतिक असमानता समक्ष रखैत अछि। अतः ‘मनसरबी’कैँ आध्यात्मिक न्यायविधानक अखण्ड समर्थन मानब गलत पढ़ाइ होएत; ओकर अन्तिम सवाल ओहि विश्वासक मानवीय सीमा स्वयं देखबैत अछि।

राघबक माय आ सौदामिनी धर्मकैँ करुणा आ विवेकक दिशामे बरतैत छथि, जखन कि शोषक पात्र सेहो धार्मिक रूप धारण करैत छथि। राजकांतक बादक नकली शिवभक्तिक उल्लेख ई अन्तर साफ करैत अछि—अनुष्ठान आ आचरणक बीच दूरी रहि सकैत अछि। एतय धार्मिकता व्यक्ति-सुधारक गारण्टी नहि, चरित्र-परीक्षाक एक परिवेश अछि।[102]

२३. समकालीन पाठकीय प्रतिक्रिया आ आलोचनात्मक मत

३० अगस्त २०२५ कैँ जगदानन्द झा ‘मनु’ द्वारा प्रकाशित समीक्षामे ‘मनसरबी’क अन्तरजातीय प्रेम, ग्रामीण संवेदना, चित्रात्मक भाषा आ रोचकताक प्रशंसा कएल गेल अछि। ओ वर्तनीक किछु त्रुटिक दिस सेहो संकेत करैत छथि। ई तत्कालीन स्वीकृतिक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अछि, मुदा प्रशंसात्मक प्रतिक्रिया आ सम्पूर्ण पाठक आलोचनात्मक विश्लेषण एक नहि। तथापि बुलकीक अन्तिम प्रश्न, स्त्री-देहक कथन-दृष्टि आ सामूहिक प्रतिशोधक नैतिक अनिश्चितता पर मत उपन्यासक मूल पाठसँ निकलैत अछि।[103]

८ सितम्बर २०२५ केर संजय झा ‘नागदह’क पुस्तक-प्रतिक्रिया लोकजीवन, संस्कृति आ ‘सत्य जकाँ’ रचनात्मकताक प्रशंसा करैत अछि; लेखक स्वयं लिखैत छथि जे ई तत्कालीन पहुँच-समाचार अछि, विस्तृत

101 मिश्र, मनसरबी, बुलकीक उपासना, नीरसक परिवारक प्रार्थना आ सौदामिनीक प्रसंग।

102 मिश्र, मनसरबी, राजकांतक बादक धार्मिक आचरणक उल्लेख।

103 झा, जगदानन्द ‘मनु’। “डॉ. कैलाश कुमार मिश्र जीक उपन्यास मनसरबीक समीक्षा।” मैथिलीपुत्र, ३० अगस्त २०२५। https://maithileeputra.blogspot.com/2025/08/।

समीक्षा बादमे करबाक इच्छा अछि। अतः एहि टिप्पणीक प्रमाण-मूल्य पुस्तकक शुरुआती पाठकीय ग्रहणधरि सीमित राखल गेल अछि।[104]

प्रकाशकक पुस्तक-सूचीमे शीर्षक, लेखक आ आईएसबीएनक पुष्टि भेटैत अछि। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्रक लेखक-नामसँ उपलब्ध मैथिली गीत-वर्गीकरणक शोधलेख लोक-साहित्यक प्रति हुनक रुचिक स्वतन्त्र बाहरी साक्ष्य अछि। एकरे आधारपर उपन्यासक सभ प्रसंगकेँ लेखकक आत्मजीवन अथवा वास्तविक गामक घटना घोषित करब उचित नहि। लेखकीय 'सत्य जकाँ'क सावधानी बाहरी शोधमे सेहो बनेने राखबाक चाही।[105]

२४. मैथिली उपन्यास-परम्पराक संग विषयगत संवाद

हरिमोहन झाक 'कन्यादान'क विषयमे प्रकाशित शैक्षिक पुस्तक-समीक्षामे स्त्री-शिक्षा आ बेमेल विवाहक प्रश्न प्रमुख रूपसँ चिन्हित अछि। एहि प्रसंगक सहारे 'मनसरबी'मे नैनाक असमान आयुक विवाह आ बुलकीक बालविवाहकेँ मैथिली गद्यक दीर्घ सामाजिक चिन्तासँ विषयगत स्तरपर जोड़ि सकैत छी। मुदा दुनू कृतिक समग्र समानता अथवा प्रत्यक्ष प्रभावक निष्कर्ष निकालबाक लेल अलग तुलनात्मक पाठ-अध्ययन आवश्यक अछि। एतय केवल समस्याक समान धरातल संकेतित अछि, साहित्यिक वंशावलीक दावा नहि।[106]

'मनसरबी'क विशेष स्थान एहि बातमे देखाइत अछि जे स्त्रीक इच्छाक कथा भूमि, श्रम आ सामाजिक प्रतिहिंसासँ अलग नहि रहि जाइत अछि। नैनाक प्रेम-निषेध धार्मिक-गोत्रीय मान्यतासँ, बुलकीक यातना कर्ज आ दबंगईसँ, सौदामिनीक बचाव आर्थिक पुनर्निर्माणसँ आ राघबक अन्तर्द्वन्द्व वर्गीय मर्यादासँ जुड़ल अछि। ई बहुस्तरीयता ओकरा केवल एक प्रेमी-युगलक दुखान्तक सीमासँ बाहर निकालैत अछि।

२५. कलात्मक उपलब्धि आ विवेकपूर्ण आपत्ति

उपन्यासक प्रमुख उपलब्धिमे ग्रामीण श्रमक ठोस विवरण, जीवित लोकबोली, नैतिक रूपसँ भिन्न स्वभावक स्त्री-पात्र, प्रेम आ शोषणक संयुक्त संरचना, नन्दक मनोपरिवर्तन, सौदामिनीक आर्थिक निर्णय

104 झा, संजय 'नागदह'। "मनसरबी – मैथिली उपन्यास।" संजय झा 'नागदह' ब्लॉग, ८ सितम्बर २०२५। https://sanjayjhanagdah.blogspot.com/।

105 मैत्रेयी प्रकाशन। "मनसरबी मैथिली उपन्यास।" प्रकाशकीय पुस्तक-सूची। https://www.maitreyipublication.com/; तुलना करू: मिश्र, "Classification and Structure of Maithili Folksongs"।

106 Ranjan, Manas. "Book Review: Harimohan Jha, The Bride: The Maithili Classic Kanyadan." Intellectual Resonance: DCAC Journal of Interdisciplinary Studies 7 (December 2024). https://dcac.du.ac.in/assets/pdf/Journal/Vol-7/14.pdf।

आ बुलकीक अन्तिम पाजेब-प्रसंग शामिल अछि। विशेषकर स्त्रीक सहमति आ हिंसाक अन्तर एतय कतेको ठाम स्पष्ट रेखांकित अछि। कथाक बहुत दृश्य—नीरसक परिवार लेल दूध, खरहोरिमे नाग-नागिन, गुप्त धानकटनी, नैनाक अन्तिम निवेदन—पाठकक स्मृतिमे टिकबाक शक्ति रखैत अछि।

तथापि आलोचनात्मक प्रश्न कम नहि : स्त्री-देहक बारम्बार अलंकारित वर्णन, अपराधक अनिवार्य रोग-दण्डक सरल नैतिक क्रम, कतिपय पात्रक अन्तरमनमे अचानक बदलाव, लखरू प्रसंगक अनुपात, कथनक आवर्ती उपदेश, प्रमुख नामक स्थानीय असंगति आ वृद्ध बुलकीक जीवनक बहुते महत्त्वपूर्ण वर्षक संक्षेप—ई सभ कलात्मक एकाग्रताकेँ चुनौती दैत अछि। एहि प्रश्नक उल्लेख कृतिक महत्त्व घटेबाक लेल नहि, ओकर वास्तविक संरचनाकेँ बिनु अतिरंजना बुझबाक लेल अछि।

विशेषतः लेखकक आरम्भिक घोषणा—आन लिंग, जाति आ वर्गक हृदयमे प्रवेश करब—समीक्षाक कसौटी बनेबाक चाही। बुलकीक श्रम, नैनाक विवशता आ सौदामिनीक आर्थिक विवेक एहि घोषणाकेँ बहुत दूरधरि फलित करैत अछि; पुरुष-दृष्टिसँ स्त्री-देहक अतिविस्तृत अवलोकन किछु ठाम ओही उपलब्धिक प्रतिपक्ष बनैत अछि। एहि द्वन्द्वकेँ स्वीकार केनाइ पोथीक जटिलताक सम्मान अछि।

२६. निष्कर्ष : कर्मफलसँ आगाँ, न्यायविहीन जीवनक साक्ष्य

‘मनसरबी’क कथा देखबैत अछि जे अन्याय केवल गामक कोनो एक दुष्टक कर्म नहि, पारिवारिक प्रभुत्व, कर्ज, सामाजिक मर्यादा, लैंगिक दण्डहीनता, जाति-आधारित असमानता आ सम्पत्तिक अधिकारसँ बनल सम्बन्ध अछि। कथा एहि सम्बन्धक विरुद्ध अनेक उत्तर रखैत अछि—राघबक मायक करुणा, नन्दक सामूहिक संगठन, सौदामिनीक आर्थिक आत्मनिर्णय, बुलकीक प्रत्यक्ष प्रतिकार। कोनो एकटा उत्तर पर्याप्त नहि ठहरैत अछि।

पोथी पाठककेँ दुष्टक पतन देखबैत कखनो सन्तोष दैत अछि; अन्तमे बुलकीक जीवनक सामने वैह सन्तोष अवैध लगए लगैत अछि। ओ अपन अधिकार लेल आवाज उठबैत अछि, शोषककेँ प्रतिकार करैत अछि, प्रेमक मूल्य बुझैत अछि, मुदा स्थायी सुरक्षा नहि पबैत अछि। अतः ई उपन्यासक अन्तिम उपलब्धि नैतिक उपदेशक निश्चितता नहि, ओहि निश्चितताक टूटब अछि। राघबक प्रश्नमे लेखक आ पाठक दुनूकेँ ठहरि अपन न्याय-बोध फेरसँ जाँचय पड़ैत अछि।

पाजेबक छोट लाल पुरिया एहि अर्थमे उपन्यासक सर्वाधिक सघन वस्तु-बिम्ब बनैत अछि : एक स्त्रीक जीवनमे बचल स्मृति, जकर मूल्य बजारक टाकासँ नहि नापल जा सकैत अछि। ओहि भेंटक पाछू नानीसँ भेटल कथनक लुइर, गामक लोकभाषा, खेतक श्रम, प्रेमक अधूरापन आ सामाजिक क्रूरताक समस्त कथा एकहि बिन्दुपर सिमटि अबैत अछि। ‘मनसरबी’केँ पढ़लाक बाद प्रश्न रहि जाइत अछि—कर्मफल जँ न्याय

अछि, तँ बुलकीक न्यायक हिसाब एखनो बाँकी किएक? एहि अनुत्तरित प्रश्नक कारण उपन्यास अपन समाप्त भेलाक बादो पाठकक भीतर चलैत रहैत अछि।

सन्दर्भ-सूची

प्राथमिक कृति

मिश्र, कैलाश कुमार। मनसरबी : मैथिली उपन्यास। प्रथम संस्करण। दिल्ली: मैत्रेयी प्रकाशन, २०२५। आईएसबीएन ९७८-८१-९८६८४६-४-६।

सहायक अध्ययन आ अन्य स्रोत

झा, जगदानन्द 'मनु'। "डॉ. कैलाश कुमार मिश्र जीक उपन्यास मनसरबीक समीक्षा।" मैथिलीपुत्र, ३० अगस्त २०२५। https://maithileeputra.blogspot.com/2025/08/

झा, संजय 'नागदह'। "मनसरबी – मैथिली उपन्यास।" संजय झा 'नागदह' ब्लॉग, ८ सितम्बर २०२५। https://sanjayjhanagdah.blogspot.com/

कुमार, अवनीश (Awanish Kumar)। "Land and Caste Relations in North Bihar: Observations from Two Villages." Review of Agrarian Studies, खण्ड १२, अङ्क १ (२०२२)। https://doi.org/10.25003/RAS.12.01.0007

Mishra, Kailash Kr. "Classification and Structure of Maithili Folksongs." Vihangama, खण्ड १ (२००१)। इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र। https://ignca.gov.in/PDF_data/Classification_Structure_Maithili_FolkSongs.pdf

मैत्रेयी प्रकाशन। "मनसरबी मैथिली उपन्यास।" प्रकाशकीय पुस्तक-सूची। https://www.maitreyipublication.com/

Ranjan, Manas. "Book Review: Harimohan Jha, The Bride: The Maithili Classic Kanyadan." Intellectual Resonance: DCAC Journal of Interdisciplinary Studies, खण्ड ७ (दिसम्बर २०२४)। https://dcac.du.ac.in/assets/pdf/Journal/Vol-7/14.pdf

विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना : लोकसृजन, यायावरी आ साहित्यिक विवेक

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक निबन्ध, यात्रा-वृत्तान्त आ कथा-समीक्षाक आलोचनात्मक अध्ययन

ग्रन्थपरिचय आ आलोचनात्मक प्रस्तावना

'विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना' (विदेह-सदेह १०) कैँ केवल विषय-विविधताक आधारपर निबन्धसंग्रह कहब अपर्याप्त होएत। ई एहन पोथी अछि, जतय मिथिलाक चित्रपरम्परा, उत्तर-पूर्व भारतक जनजातीय जीवन, ब्रजक तीर्थ-संस्कृति, सार्वजनिक जीवनक राजनीतिक संवाद आ मैथिलीक गामकेन्द्रित कथा-साहित्य एके लेखकक अवलोकनशील दृष्टिमे एक-दोसरसँ जुड़ैत अछि। प्रत्यक्ष अनुभव, सांस्कृतिक व्याख्या, व्यक्तिगत स्मृति आ साहित्यिक मूल्यांकन एकर मुख्य अभिव्यक्ति-पद्धति अछि। एतय 'समालोचना' शब्दक अर्थ केवल साहित्यिक रचनापर निर्णय देब नहि, अपितु समाजक प्रचलित धारणाक जाँच करब सेहो अछि।

ग्रन्थक शीर्षपृष्ठपर २०१२ ई.क संस्करण आ श्रुति प्रकाशनक विवरण अंकित अछि। सम्पादनक उत्तरदायित्व गजेन्द्र ठाकुर तथा सह-सम्पादनक उत्तरदायित्व उमेश मण्डलकैँ देल गेल अछि। अनुक्रममे संकलित निबन्ध, यात्राप्रसंग आ साहित्यिक समीक्षा डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक नामसँ प्रकाशित अछि। ग्रन्थक विधागत नामकरणमे 'प्रबन्ध', 'निबन्ध' आ 'समालोचना' तीनू पदक सह-अवस्थान विशेष अर्थ रखैत अछि। एहि सह-अवस्थानसँ लेखकीय अनुभवकैँ कोनो एक विधाक सीमामे नहि, अनेक गद्य-विधाक परस्पर संवादमे पढ़बाक अवसर भेटैत अछि।[107]

संकलनमे नौटा रचनात्मक एकाइ अछि: 'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्त्तमान आ भविष्य'; 'यायावरी'क अन्तर्गत 'हॉफलोंग', 'भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन', 'लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार', 'मलिक भाय केर फुटपाथी चिंतन', 'उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात' आ

107 कैलाश कुमार मिश्र, विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (विदेह-सदेह १०), सम्पा. गजेन्द्र ठाकुर, सह-सम्पा. उमेश मण्डल (नई दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१२)।

'संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर'; तथा 'गामक जिनगी' आ 'जीवन संघर्ष'क समीक्षा। चित्रकला-विषयक प्रस्तावना, बीचक छहटा यात्रा-प्रसंग आ अन्तक दूटा साहित्यिक समीक्षा मिलि एकरा लोकानुभव, सांस्कृतिक प्रश्न आ कथासाहित्यक मूल्यांकनक संयुक्त स्वरूप दैत अछि।[108]

एहि संकलनक आलोचनात्मक अध्ययनमे कथ्य, वक्ता, सन्दर्भ आ रचनात्मक संरचनाक बीचक भेद आवश्यक अछि। यात्राक प्रत्यक्ष अनुभवकेँ सम्पूर्ण नृवंशवैज्ञानिक निष्कर्ष नहि मानल जा सकैत, आ कथासाहित्यक प्रति आत्मीय प्रशंसाकेँ औपचारिक शिल्प-समीक्षाक विकल्प नहि मानब चाही। एहि कारणेँ रचनासभक आन्तरिक साम्यक संग ओहिमे प्रयुक्त प्रमाणक प्रकृति, अनुभवक विश्वसनीयता आ मूल्यनिर्णयक सीमा जँचब सेहो आवश्यक अछि।

१. संकलनक भीतरी एकता : स्थान बदलैत अछि, प्रश्न नहि

पहिल नजरिमे मिथिला चित्रकला आ दिल्लीक फुटपाथपर राजनीतिक गपशपमे कोनो सीधा सम्बन्ध नहि बुझाइत अछि। मुदा दुहूमे लेखकक मूल प्रश्न समान अछि: समाजक सांस्कृतिक अर्थ के बनबैत अछि, ओकर रक्षा के करैत अछि, आ शक्ति अथवा बाजारक प्रवेशसँ ओ अर्थ कोना बदलैत अछि? चित्रकलामे माय-बेटीक कौशल-संक्रमण, हॉफलोंगमे जनजातीय महिलाक सामूहिक निर्णय, संगाईप्राऊमे पूर्वज-परम्परा, आ मण्डलक कथामे गामक साधारण लोकक व्यावहारिक बुद्धि—ई सभ अपन-अपन क्षेत्रक भीतर ज्ञानक वैकल्पिक केन्द्र प्रस्तुत करैत अछि।

ई अन्तःसूत्र पाठक साहित्यिक महत्त्व बढ़बैत अछि। विद्वत्ता एतय मात्र पुस्तकालयक उपलब्धि नहि, लोकाचार, श्रम, प्रकृति आ सामाजिक अनुभवक समवेत फल अछि। मुदा ई एकता सम्पूर्ण रूपसँ अविरोधी नहि। किछु ठाम लेखक जनसमुदायक स्वायत्त आवाजकेँ आगाँ अनैत छथि, तँ किछु ठाम हुनकर अपन धार्मिक, राजनीतिक अथवा नैतिक रुचि व्याख्यापर हावी भऽ जाइत अछि। तें संकलनक मूल्य एकर घोषित निष्कर्ष मात्र नहि; ओहि तनावमे सेहो अछि जतय अवलोकन आ पूर्वधारणा एक-दोसरसँ टकराइत अछि।

पुस्तकक 'भूत, वर्त्तमान आ भविष्य'क कालबोध, यात्राक 'हम'क आत्मानुभव आ 'गामक जिनगी'क साहित्यिक मूल्यांकन—तीनूकेँ एक संग पढ़लासँ स्पष्ट होइत अछि जे लेखकक चिन्तामे सांस्कृतिक निरन्तरता एक आवश्यक मूल्य अछि। तथापि परम्पराकेँ अपरिवर्तनीय राखबाक आग्रह आ बदलैत जीविकाक यथार्थक बीच द्वन्द्व सेहो उपस्थित अछि। एहि द्वन्द्वकेँ पहिचानब समीक्षा लेल प्रशंसा करबासँ बेसी फलदायी अछि।

108 मिश्र, विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, अनुक्रम।

२. मिथिला चित्रकला : 'समानान्तर साक्षरता'क मौलिक विचार

'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्त्तमान आ भविष्य' संकलनक सर्वाधिक तर्कप्रधान लेख अछि। लेखक मिथिला चित्रकलाकेँ केवल सजावट अथवा पर्यटकक उपभोगक वस्तु नहि मानैत छथि। हुनकर दृष्टिमे चित्रांकन स्त्रीक अनुभव, अभिलाषा, स्मृति आ सांस्कृतिक अधिकार व्यक्त करबाक माध्यम अछि। ओ एकरा 'समानान्तर साक्षरता'क रूपमे पढ़ैत छथि। ई व्याख्या महत्त्वपूर्ण अछि, कारण ई वर्णमालाक औपचारिक शिक्षा आ सांस्कृतिक अभिव्यक्तिक वास्तविक क्षमता बीचक अन्तर देखबैत अछि। लिखित अक्षर नहि जननिहार स्त्री सेहो अरिपन, कोहबर, रंग, आकृति आ अनुष्ठानक सहारे अपन जगतकेँ अर्थ दऽ सकैत छथि।[109]

लेखमे चित्रकलाक तीन स्थानिक रूप स्पष्ट कएल गेल अछि—भूमिपर अरिपन, देबारपर चित्र, आ चलायमान वस्तुपर चित्रांकन। अरबा चाउरक लई, केरा अथवा मैना पात, पीढ़ी, माटिक बरतन, सिक्की, बाँस आ लोकजीवनक आन सामग्रीक उल्लेख चित्रकलाकेँ अमूर्त सौन्दर्यशास्त्रसँ निकालि घरेलू श्रम आ पदार्थक संसारमे स्थापित करैत अछि। एतय कलाक माध्यम स्वयं सामाजिक इतिहासक दस्तावेज बनैत अछि: कोनो प्रतीक केवल देखबाक वस्तु नहि, ओ ककरो परब, विवाह, कामना अथवा सामुदायिक स्मृतिसँ जुड़ल अछि।

कोहबरक भीतर माछ, सुग्गा, कमल, बाँस, सूर्य, चन्द्रमा, हाथी आदि प्रतीककेँ लेखक उर्वरता, समृद्धि आ शुभकामनाक संवाहक मानैत छथि। एहि व्याख्याक सामर्थ्य ई अछि जे ओ बिम्ब आ जीवन-प्रसंगकेँ एक संग पढ़ैत अछि। मुदा प्रतीकक अर्थ सभ समुदाय, काल आ कलाकारक लेल सर्वथा एकरंग रहत, एहन मानि लेब उचित नहि। प्रत्येक कलाकारक रचना, जातीय-सामाजिक पृष्ठभूमि आ अवसरक पृथक अध्ययनसँ अर्थक अधिक सूक्ष्म बहुलता सोझाँ आबि सकैत अछि।

लेखमे दीवारसँ कागज आ क्यानवस धरि चित्रकलाक संक्रमणक इतिहास अकाल, रोजी-रोटी आ बाजारसँ जोरल गेल अछि। ई अर्थ-राजनीतिक दृष्टि एकर महत्त्वपूर्ण योगदान अछि। कौशलक प्रसारक संग जे नव आय सम्भव भेल, ओहि आयमे स्त्रीक अपन निर्णयाधिकार कतेक बढ़ल, व्यापारिक लाभक वितरण केना भेल आ मध्यस्थक भूमिका की रहल—ई प्रश्न लेख नहि खोलि पबैत अछि। फलतः व्यवसायीकरणकेँ मात्र क्षयक कथा मानब जतेक एकांगी होएत, ओतबे एकरा केवल मुक्ति मानब सेहो होएत। लेख एहि द्वन्द्वक द्वार खोलैत अछि, मुदा अन्तिम सामाजिक-आर्थिक जाँच पाठकपर छोड़ि दैत अछि।

सीता देवी, बौआ देवी, सरिता, गंगा देवी, महासुन्दरी देवी, गोदावरी दत्त, जमुना देवी आ आन कलाकारक उल्लेख कला-इतिहासकेँ व्यक्तिनाम दैत अछि। गंगा देवी द्वारा अस्पताल, रेल, चिकित्सक आ उपचारक

109 मिश्र, 'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्त्तमान आ भविष्य', विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना।

दृश्य चित्रित करबाक प्रसंग विशेष रूपसँ विचारणीय अछि। जँ परम्पराक संरचना बदलैत अनुभवकेँ आत्मसात करबाक क्षमता राखैत अछि, तँ आधुनिक विषय ओकर अनिवार्य विनाश नहि; सम्भवतः जीवित परम्पराक पुनर्सृजन अछि। लेखक एहि नवाचारक समर्थन-विरोध दुनू दर्ज करैत छथि, जे लेखकेँ केवल विलाप बनबाकसँ बचबैत अछि।

जमुना देवीक शिक्षण-प्रसंगमे जातीय सीमा पार कऽ छात्र-छात्राकेँ बिना शुल्क कला सिखेबाक अनुभव वर्णित अछि। एहि दृश्यक साहित्यिक महत्त्व उल्लेखनीय अछि: कलाक प्रशिक्षण केवल पद्धतिक हस्तान्तरण नहि, प्रतिष्ठा आ सम्मानक सामाजिक सम्बन्धकेँ नव रूप देबाक माध्यम बनैत अछि। तथापि 'ब्राह्मण', 'कायस्थ' आ 'हरिजन'क अनुक्रममे जे वर्गीकरण देल गेल अछि, से कलाकारक वास्तविक भागीदारीक सम्पूर्ण इतिहास नहि मानल जा सकैत। 'हरिजन' मूल पाठक ऐतिहासिक शब्द अछि; वर्तमान आलोचनात्मक विवेचनमे 'दलित' कहब अधिक समुचित अछि। मिथिला चित्रकलाक बहुजातीय अवदान बुझबाक लेल वर्गीकृत ढाँचासँ आगाँ जाइ कलाकारक स्व-कथन, स्थानीय परम्परा आ अभिलेखक तुलना अपेक्षित अछि।

लेखकक संरक्षणवादी आग्रहमे एक महत्त्वपूर्ण अन्तर्विरोध अछि। जे चित्रकला मायसँ बेटी धरि निरन्तर बदलैत सीखल जाइत रहल, ओकर एकमात्र 'मूल रूप' स्थिर कोना निर्धारित होएत? परम्पराक लय, प्रतीक-ज्ञान, निर्माण-प्रक्रिया आ सामुदायिक प्रसंगकेँ बचाएब निश्चय उचित अछि, मुदा कलाकारकेँ नव विषय चुनबाक अधिकारसँ वञ्चित करब कलात्मक स्वाधीनताक विरुद्ध जेतै। एहि कारणेँ संरक्षणक उचित अर्थ संग्रहालयीय जड़ता नहि, ज्ञानसँ जोड़ल सृजनात्मक स्वायत्तता होएबाक चाही।

डॉ. मिश्रक चित्रकलासम्बन्धी चिन्तनक एक पूर्वप्रकाशित अंग्रेजी सन्दर्भ 'Mithila Paintings: Women's Creativity Under Changing Perspectives' अछि। 'Indian Folklore Research Journal'क दिसम्बर २००३ अंकमे प्रकाशित एहि आलेखक परिचयमे सेहो स्त्रीक सृजन, भूमिचित्र आ देबारचित्रसँ क्यानवसक संक्रमण, अकालपछाति आजीविका आ परम्पराक संरक्षण मुख्य प्रश्न अछि। विषयगत साम्य स्पष्ट अछि, मुदा दूनू संस्करणक पूर्ण पाठान्तर देखल बिना परवर्ती मैथिली रचनाकेँ पूर्वप्रकाशित आलेखक शब्दशः अनुवाद कहब उचित नहि।[110]

३. हॉफलोंग : कार्यशाला, संवाद आ जनजातीय स्त्रीक सक्रियता

'हॉफलोंग' यायावरी खण्डक सर्वाधिक विस्तृत यात्रा-वृत्तान्त अछि। आरम्भमे डॉ. अभिक घोषक संग संवाद लेखककेँ उत्तर कछार पहाड़ी प्रदेशक स्मृतिमे लऽ जाइत अछि। प्रथम पुरुषक ई पद्धति यात्राक

110 Kailash Kumar Mishra, "Mithila Paintings: Women's Creativity Under Changing Perspectives," Indian Folklore Research Journal 1, no. 3 (2003), https://indianfolklore.org/index.php/ifrj/issue/view/57.

प्रारम्भकेँ साधारण भौगोलिक परिचयसँ अलग बनबैत अछि। अवलोकनक प्रवेश-द्वार मित्रक प्रश्न, लेखकक प्रतिक्रिया आ स्मृतिमे पुनः घुरबाक मनोवैज्ञानिक गति अछि।[111]

बाँसक सामूहिक फूलनाइ, मूसक संख्या बढ़ब आ अन्नसंकटक चर्चा प्रकृति आ जीविकाक सम्बन्धकेँ साहित्यिक रूप दैत अछि। वैज्ञानिक शोध सेहो ई पुष्ट करैत अछि जे उत्तर-पूर्व भारतक किछु बाँस-प्रजातिमे सामूहिक फूलनाइक बाद बीज उपलब्ध होएब, कृन्तकक प्रकोप आ फसल-हानिक बीच सम्बन्ध देखल गेल अछि। तथापि सभ बाँस-प्रजाति, सभ स्थान आ सभ फूलनाइक घटना समान परिणाम देत, एहन निष्कर्ष निकालब सम्भव नहि। मूल लेखक ५०–६० वर्षक एक अन्तरालक चर्चा करैत छथि; ओकरा सार्वभौम वनस्पति-नियम नहि मानबाक चाही।[112]

हॉफलोंगक केन्द्रीय साहित्यिक उपलब्धि कार्यशालाक दृश्यावली अछि। दिमासा, कार्बी आ जेमि नागा महिला लोकनिक प्रश्नोत्तरमे संस्कृति केवल शोध-विषय नहि रहि जाइत अछि; अपन समुदायपर चिन्तन करैत, निर्णय लैत आ पहल करैत व्यक्ति सोझाँ अबैत छथि। दिमासा महिलाक नगरक स्वच्छतापर सामूहिक हस्तक्षेपक विचार लेखकक प्रशासन-केन्द्रित समाधानसँ नागरिक पहल दिस ध्यान मोड़ैत अछि। कार्बी महिलाक प्रश्न—जखन परम्परागत वस्त्रक रक्षा जरूरी अछि तँ स्वयं आयोजक ओहन वस्त्र किएक नहि पहिरैत छथि—लेखकक नैतिक अधिकारकेँ उलटि देइत अछि। एतय 'शोधकर्ता' सीखेनिहार सेहो बनैत छथि।

एहि प्रसंगक सौन्दर्यक केन्द्र आत्मसुधार अछि। लेखक अपन गलती स्वीकार करैत छथि। सामान्य यात्रा-वृत्तान्तमे प्रवासी लेखक दूसराक सभ्यता वर्णन करैत रहैत छथि; एतय वर्णित समुदाय स्वयं लेखकक व्यवहारक समीक्षा करैत अछि। एहि प्रत्युत्तरात्मक संरचनासँ पाठक विश्वास बढ़ैत अछि। ई छोट घटना संकलनक व्यापक लोकज्ञान-सम्मानक अवधारणाकेँ व्यवहारमे परिणत करैत अछि।

जेमि नागा महिलाक अनुभव, वैवाहिक रूप-सज्जा आ सांस्कृतिक संघटनक उल्लेख स्थानीय विविधताक बोध करबैत अछि। रानी गैदिन्ल्यूक संघर्षक कथन जनजातीय इतिहासकेँ भारतीय औपनिवेशिक-विरोधी इतिहाससँ जोड़ैत अछि। भारत सरकारक जनजातीय कार्य मन्त्रालयक विवरणमे हुनकर १९१५ मे जन्म, जादोनांगक आन्दोलनमे सहभागिता, कारावास, १९४७ मे मुक्ति आ १७ फरवरी १९९३ मे निधनक उल्लेख अछि; एहिसँ जीवनीक मुख्य ऐतिहासिक रूपरेखाक बाहरी पुष्टि होइत अछि। मुदा मूल लेखकक किछु

111 मिश्र, 'हॉफलोंग', विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना।

112 Shakunthala Sridhara and T. P. Rajendran, "Gregarious Bamboo Flowering and Rodent Outbreaks – An Overview," Proceedings of the Vertebrate Pest Conference 24 (2010), https://doi.org/10.5070/V424110341.

जीवनी-संवाद लोकश्रुति अथवा नाटकीय पुनर्निर्माणक रूपमे पढ़ल जाएबाक चाही, प्रत्यक्ष अभिलेखीय उद्धरणक रूपमे नहि।[113]

साम्प्रदायिक सम्बन्ध आ धार्मिक परिवर्तनपर हॉफलोंगक किछु प्रसंग लेखकक अनुभूतिकेँ तीव्र करैत अछि। ओ सभकेँ सम्पूर्ण जेमि नागा अथवा ईसाई समुदायपर लागू सामान्य निर्णयमे बदलनाइ आलोचनात्मक भूल होएत। पाठमे राजनीतिक-धार्मिक संस्थाक प्रसंग, एक-दू व्यक्तिक राय आ लेखकक सहमति एक संग अबैत अछि; एहि तीनू स्तरकेँ पृथक रखबाक आवश्यकता अछि। समालोचनाक काज एहि ठाम वैचारिक बहसकेँ दबाएब नहि, अपितु अनुभवक प्रमाण-सीमा पहिचानब अछि।

४. बृन्दावन : भक्तिक भावभूमि आ आधुनिक नगरक असुविधा

'भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन'मे यात्रा बाहरी परिवेशसँ बेसी परिवारक स्मृति आ भावनासँ आरम्भ होइत अछि। नानीक सुनाओल लोक-पद, मायक धार्मिक इच्छा, पिताक संग यात्रा आ सासुक संस्कारक स्मृति—एहि सभसँ ब्रज 'दर्शन-स्थल' होएबाक पहिनहि आत्मीय सांस्कृतिक भूगोल बनि जाइत अछि। लेखक बारम्बार यात्राक समय-क्रम परतैत छथि; बाल्यकालक स्मरण, १९९७ क संस्थागत प्रसंग, २००७ क परिवार-यात्रा आ २०११ क पुनःभ्रमण एकटा परतदार आख्यान रचैत अछि।[114]

बृन्दावनक भावलोकक संग लेखमे भोगक भौतिकता सेहो अछि—छप्पन भोग, मन्दिरक आयोजन, भोजन, यात्राक सुविधा, वाहन, घाट, बाजार आ धार्मिक सेवा। शीर्षकक 'भावमय' आ 'भोगमय' मात्र समानार्थी विशेषण नहि; ई भक्ति-अनुभव आ धार्मिक अर्थव्यवस्थाक दू भिन्न आयाम बनैत अछि। 'योगमय'क अर्थ लेखमे आत्मसमर्पण, स्मृति आ आध्यात्मिक तल्लीनतासँ निर्मित होइत अछि; मुदा एकर दार्शनिक व्याख्या व्यवस्थित रूपसँ अलग नहि भेटैत अछि।

यमुनाक पानिक दुर्गन्ध आ घाटपर गन्दगीक वर्णन यात्रा-साहित्यक महत्त्वपूर्ण वास्तविकता अछि। आदर्श धार्मिक भूगोल आ प्रदूषित भौतिक पर्यावरणक टकराव एहि दृश्यकेँ मार्मिक बनबैत अछि। कथाकार पवित्रताक कथनकेँ आँखिमे देखल स्थिति द्वारा प्रश्नांकित करैत छथि। पाठ एहि कारणेँ अन्धभक्ति नहि रहि जाइत अछि, अपितु श्रद्धाक भीतर उत्पन्न पर्यावरणीय असुविधाक दस्तावेज बनैत अछि।

राधा-भक्तक स्वाभाविक संवाद आ ब्रजबोलीक गीत पाठमे बहुभाषिकता प्रवेश करबैत अछि। मैथिली कथकक समक्ष ब्रजभाषा केवल 'परक' भाषा नहि, अपितु भावनात्मक सहयोगी भाषा अछि। लेखकक

113 भारत सरकार, जनजातीय कार्य मन्त्रालय, "Union Minister of Home Affairs and Minister of Cooperation, Shri Amit Shah Will Lay Foundation Stone Tomorrow of Rani Gaidinliu Tribal Freedom Fighters Museum," Press Information Bureau, २१ नवम्बर २०२१, https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1773746.

114 मिश्र, 'भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन', विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना।

बोलीक लचक तथा संवाद-स्थितिक सूक्ष्म विवरण एहि रचनाकेँ तीर्थक ठोस मार्गदर्शिका बनबाक बदला स्मृतिपरक आख्यानक रूप दैत अछि। तथापि स्थानीय पुरोहित, नाविक, महिला अथवा आश्रमक निवासी सभक स्वतन्त्र अनुभव अपेक्षाकृत कम अछि; पाठ मुख्यतः आगन्तुक परिवारक आँखिसँ बनल अछि।

५. लोअर दिवांग घाटी : शीर्षक आ वास्तविक कथा-विस्तारक अन्तर

'लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार'क शीर्षक जातीय-सांस्कृतिक नृवंशवृत्तक अपेक्षा जगबैत अछि। आरम्भमे अरुणाचलक जनजातीय विविधता, रोईंग धरि पहुँचबाक कठिनाई आ यात्राक उद्देश्यक परिचय अछि। मुदा उपलब्ध संकलित पाठक अधिकांश भाग ब्रह्मपुत्र पार करबाक संकट, पूर्णियाँसँ आएल नाविक रामओतारक जीवन-कथा, कादोमे फँसल गाड़ी, सहयात्री आ होटल-व्यवस्थाक घटनामे केन्द्रित अछि। इदु-मिसमी समाजक अनुष्ठान, भाषा, लोककथा, सामाजिक संगठन अथवा स्त्री-शिल्पक ठोस प्रत्यक्ष अध्ययन एहिमे अपेक्षित विस्तार नहि पबैत अछि।[115]

एकर अर्थ ई नहि जे रचना महत्त्वहीन अछि। वस्तुतः नाविकक श्रम, मिथिलासँ पलायन, कर्ज, भूमिहीनता आ परदेशमे जीविकाक कथा अति सजीव रूपसँ उभरैत अछि। पूर्णियाँ आ मधुबनीक परिचय भेटिते नावपर मैथिलीमे भेल संवाद परदेसमे भाषा द्वारा निर्मित क्षणिक आत्मीयताक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। राज्यक सीमा पार कऽ 'हमर' भाषा लोककेँ एक सामाजिक सम्बन्धमे जोड़ैत अछि। रामओतारक कथामे मातृभूमिसँ बिछोह, परिवारक कर्ज आ श्रमक सहारे पुनः स्थिर होएबाक अनुभव संकलनक मण्डल-विषयक समीक्षासँ अन्तर्सम्बन्ध बनबैत अछि।

एक महत्त्वपूर्ण आख्यानगत तनाव पात्र-केन्द्रित असमानतामे अछि। ऋचा नेगी, चालक धर्मा आ सहकर्मी लोकनिक व्यवहारपर लेखक विस्तृत प्रतिक्रिया दैत छथि; अपमानबोध, थकान, क्रोध आ अन्तर्मनक उधेड़बुन खुलि कऽ अबैत अछि। यात्रा-लेखनक एहि आत्मपरकतासँ पाठ जीवित बनैत अछि, मुदा जातीय अध्ययनक घोषित लक्ष्य पाछाँ छुटि जाइत अछि। जँ एहिकेँ प्रथम चरणक यात्रा-दैनन्दिनी मानल जाए तँ एकर सफलता अलग; जँ पूर्ण इदु-मिसमी अध्ययन मानल जाए तँ रचनाक दावा आ उपलब्ध साक्ष्य बीच अन्तर स्वीकार करए पड़त।

लोअर दिवांग घाटी जिला प्रशासनक सांस्कृतिक विवरणमे इदु-मिसमी समुदायक रीह आ के-मेह-हा पर्व, स्त्रीक बुनाइ-कौशल, बाँस-बेंतक शिल्प आ धार्मिक परम्परासम्बन्धी जानकारी भेटैत अछि। ई जानकारी मूल रचनाक एक सीमाकेँ उजागर करैत अछि: शीर्षकमे उल्लिखित समुदायक आन्तरिक जीवनक अपेक्षित

115 मिश्र, 'लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार', विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना।

प्रत्यक्ष चित्रण एतय अपेक्षाकृत कम अछि। बाहरी अभिलेखक सूचनाकेँ लेखकक अप्रकाशित क्षेत्र-अनुभव मानि प्रस्तुत करब तर्कसंगत नहि होएत।[116]

६. मलिक भाय : संवादक शक्ति, विचारक सीमाबोध

'मलिक भाय केर फुटपाथी चिंतन' परम्परागत स्थल-वर्णनसँ भिन्न रचना अछि। ई एकटा व्यक्तिचित्र, आत्मीय संस्मरण आ लम्बा राजनीतिक संवादक मिश्रण अछि। मलिक भायसँ परिचय, नौटंकीपर सहचर्चा आ श्रीराम सेण्टरक आसपास टहलबाक दौरान उठल बातसँ कथा बनैत अछि। लेखकक श्रोता-स्वर प्रश्न करैत अछि, मलिक भाय उत्तर दैत छथि, फेर उत्तर-प्रतिउत्तरक क्रम विषय बदलैत चलैत अछि। एतय 'फुटपाथ' केवल स्थान नहि; औपचारिक व्याख्यानक बाहर अनौपचारिक सार्वजनिक विचार-विमर्शक चिह्न अछि।[117]

पाठक रोचकता व्यक्तिक बोलबाक बेबाक ढंगसँ उत्पन्न होइत अछि। साम्प्रदायिक सहअस्तित्व, राजनीतिक दल, बिहारक चुनाव, प्रशासनिक भ्रष्टाचार आ गुजरातक राजनीतिक प्रसंगपर कथन एके वार्तालापमे गुँथल अछि। एहि रचनाकेँ साहित्यिक रूपमे पढ़ैतकाल ध्यान देबाक बात ई अछि जे वक्ताक राय आ तथ्यात्मक सत्य अलग वस्तु अछि। विशेष राजनीतिक समूह, समुदाय अथवा प्रशासनिक वर्गक विषयमे कहल व्यापक आरोपक स्वतन्त्र दस्तावेजी पुष्टि प्रस्तुत रचनामे नहि भेटैत अछि। तें ओ सभ लेखक द्वारा दर्ज कएल गेल संवाद-पात्रक मत छथि, प्रमाणित सामूहिक व्यवहार नहि।

यायावरी श्रृंखलाक अन्य भागक तुलनामे एतय तर्कक प्रवाह बेसी प्रसंगान्तरशील अछि। नौटंकीक अनुसन्धान आ फुटपाथक अस्थायी बातचीत बीच जे अन्तर अछि, से रचनाक साहित्यिक नाड़ी अछि: नियोजित शोधक बीच अनियोजित समाज-बोधक प्रवेश। मुदा वर्णित वक्ता प्रत्येक विषयपर विशेष अधिकार रखैत छथि, एहन विश्वास जँ पाठकसँ अपेक्षित होए तँ ई आलोचनात्मक रूपसँ दुर्बल पड़ैत अछि। कथाकार जतेक बेर मलिक भायक व्याख्यासँ प्रभावित होइत छथि, ओतबे बेर पाठक लेल विपरीत साक्ष्य, वैकल्पिक दृष्टि आ प्रश्नक अवसर रहबाक चाही।

साहित्यिक उपलब्धिक रूपमे ई व्यक्तिचित्र अपन समयक राजनीतिक भाषाक प्रमाण अछि; ऐतिहासिक निष्कर्षक अन्तिम स्रोतक रूपमे एकर प्रयोग उचित नहि। किछु कथन सामाजिक समूहक सम्बन्धमे अत्यन्त व्यापक सामान्यीकरण करैत अछि, आ किछु ठाम अलग-अलग समुदाय भीतरक आन्तरिक मतभेद अदृश्य

116 District Lower Dibang Valley, Government of Arunachal Pradesh, "Idu Mishmi," https://roing.nic.in/culture-heritage/idu-mishmi/.

117 मिश्र, 'मलिक भाय केर फुटपाथी चिंतन', विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना।

भऽ जाइत अछि। आलोचक लेल आवश्यक अछि जे संवादक जीवित स्वरकेँ सराहैत ओकर प्रमाणगत अपूर्णताक सेहो चर्चा करथि।

७. नन्दा-राजजात : मौखिक परम्परा आ स्त्री-देवीक सांस्कृतिक भूगोल

‘उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात’मे यात्रा व्यक्तिगत उदासीसँ शुरू होइत अछि। दिल्लीमे गामक स्मरण लेखककेँ हिमालय दिस घुरबैत अछि। एहि आरम्भमे एक अनुभूतिमय सत्य अछि: प्रवासीक लेल दोसरक पहाड़ सेहो कखनो-कखनो अपन गामक अभाव भरबाक सांस्कृतिक आश्रय बनि जाइत अछि। क्रमशः लेखक नन्दादेवीक अनेक जन्मकथा, जागरक मौखिक परम्परा, देवीक नैहर-सासुरक रूपक आ यात्राक सामाजिक आयोजनक परिचय दैत छथि।[118]

‘जात’केँ देवयात्राक अर्थमे बुझब आ जागरकेँ मिथिलाक अष्टयामसँ जोड़ब तुलनात्मक लोकसंस्कृति-पाठक उपयोगी रणनीति अछि। अपरिचित प्रथाकेँ परिचित सांस्कृतिक उदाहरण द्वारा समझाओल गेल अछि। नन्दा देवीक नैहरसँ बिदाइ, स्थानीय समाजक भक्ति आ महिलाक वैवाहिक जीवनक रूपक एक संग अबैत अछि। इहो देखबाक चाही जे देवीक पीड़ा आ वियोगक कथा समाजक वास्तविक स्त्री-अनुभवक केहन अर्थ लैत अछि; ई प्रश्न रचना उठबैत अछि, मुदा विस्तारसँ विश्लेषण नहि करैत अछि।

गढ़वाल मण्डलक आधिकारिक परिचय नन्दा-राजजातक लगभग बारह वर्षक अन्तराल, नौटीसँ प्रस्थान, रूपकुण्ड-होमकुण्डक मार्ग आ बहुदिवसीय आयोजनक पुष्टि करैत अछि। मूल लेखमे कतेको लोकविश्वास एक संग लिखल अछि; ओकरा ऐतिहासिक अभिलेखक समकक्ष नहि रखबाक चाही। रचनाक प्रामाणिक मूल्य एतय सजीव स्थानीय विश्वासक परिचयमे अछि, पूर्ण तीर्थ-इतिहास अथवा व्यवस्थागत नृवंशविज्ञानमे नहि।[119]

८. संगाईप्राऊ : गामक सूक्ष्म इतिहास आ पूर्वज-स्मरण

‘संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर’ संकलनक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र-आधारित रचना अछि। लेखक मणिपुरक गाममे पहुँचि बसावट, कबीलाई स्मृति, पूर्वजक नाम, परम्परागत मुखियाक कथन, धर्म-परिवर्तन, हस्तकला, आजीविका आ महिलाक स्थितिक चर्चा करैत छथि। पहिल व्यक्तिक अवलोकनक संग गामक

118 मिश्र, ‘उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात’, विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना।

119 Office of the Commissioner, Garhwal Division, Government of Uttarakhand, “Nanda Devi Raj Jat,” https://garhwal.uk.gov.in/nanda-devi-raj-jat/.

वृद्ध आ एथेना सन महिला-पात्रक कथन मिलैत अछि। एहि प्रकारेँ सांस्कृतिक विवरण मानवीय सम्बन्धक भीतर खुलैत अछि।[120]

छह गोत्रक घरक संख्या—कामेई २७, पालमेई ९, गोलमेई ११, गंगमेई ८, मारिंगमेई ८ आ न्यूमेई १—रचना विशिष्ट समयक स्थानीय मौखिक अथवा क्षेत्रीय सूचनाक रूपमे दैत अछि। एकर जोड़ ६४ घर होइत अछि; ई संख्याकेँ स्थायी जनगणना नहि, लेखक द्वारा दर्ज कएल गेल गामक सूचना माननाइ चाही। एहेन सूक्ष्म तथ्य साहित्यिक यात्रा-वृत्तान्तमे दुर्लभ अछि; उचित समय-सन्दर्भ, स्रोतक पहचान आ सत्यापन जोड़ल जाए तँ ई क्षेत्रीय इतिहासक शोध लेल उपयोगी संकेत बनि सकैत अछि।

कबुई अथवा रोंगमेई समुदाय, तींगकाओ रगवांगक मान्यता आ ईसाई धर्मक प्रभावक प्रसंग धर्मकेँ गतिशील सामाजिक घटना बनबैत अछि। एहि ठाम सरलीकृत द्वैत—‘मूल परम्परा’ बनाम ‘बाहरी धर्म’—सँ आगाँ जाइ लोकक व्यक्तिगत आ सामूहिक निर्णय देखबाक आवश्यकता अछि। लेखकक लेखनमे परम्परा बचबाक चिन्ता प्रबल अछि; मुदा धर्मान्तरित व्यक्तिक अपन कथन अपेक्षाकृत कम सुनाइत अछि। सन्तुलित नृवंशशास्त्रीय प्रस्तुति लेल दुहू पक्षक स्वानुभव आवश्यक होएत।

एथेनाक घरक वर्णन, महिलाक श्रम, मद्यपानसँ होइत सामाजिक क्षति आ प्रशिक्षणक आकांक्षासँ गामक जीवित यथार्थ बनैत अछि। घरक स्वच्छता, फूल, हरियरी, वस्त्र-शिल्प आ स्त्रीक कर्तव्यनिष्ठाक प्रशंसा केवल रमणीयता नहि; ओ दैनिक संस्कृतिक भौतिक रूप अछि। मुदा केवल परम्परागत शिल्पमे स्त्रीक अस्तित्व देखब पर्याप्त नहि। तकनीकी शिक्षा, आर्थिक अवसर आ निर्णय-निर्माणमे हुनकर सहभागिताक प्रश्न लेखक स्वयं उठबैत छथि; एहि सँ रचनाक सामाजिक प्रासंगिकता बढ़ैत अछि।

संगाईप्राऊक पाठक सबलता ओहि संतुलनक सम्भावनामे अछि जतय अतीतक सम्मानक संग वर्तमानक कठिनाइ देखल जाइत अछि। ई सामुदायिक स्मृतिक दस्तावेजीकरण अछि, मुदा पूर्ण समाजवैज्ञानिक सर्वेक्षण नहि। भेटघाँटक सीमित समय, अनौपचारिक साक्षात्कार आ स्थानीय कथनक प्रमाणस्तर स्पष्ट कए देल जाए तँ शोधोपयोगिता आर बढ़त।

९. ‘गामक जिनगी’ : कथाक माध्यमसँ ग्रामीण समाजक पाठ

जगदीश प्रसाद मण्डलक ‘गामक जिनगी’पर समीक्षा संकलनक आलोचनात्मक प्रवृत्तिक विशेष उदाहरण अछि। लेखक कथा-संग्रहक सामान्य प्रशंसा कऽ नहि रुकैत छथि; ‘भैंटक लावा’, ‘बिसाँढ़’, ‘पीरारक फड़’, ‘अनेरूआ बेटा’, ‘दूटा पाइ’, ‘बोनिहारिन मरनी’, ‘हारि-जीत’, ‘ठेलाबला’, ‘जीविका’, ‘रिक्साबला’,

120 मिश्र, ‘संगाईप्राऊ : नागा पूर्वजक स्मरणक धरोहर’, विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना।

‘चूनवाली’, ‘डिहक बटबारा’, ‘भैयारी’, ‘बहीन’, ‘पछताबा’, ‘डॉ. हेमन्त’, ‘बाबी’ आ ‘कामिनी’ सन कथाक प्रसंग लऽ सामाजिक अर्थक चर्चा करैत छथि। समीक्षाक समृद्धि एहि बहुल कथासम्पर्कमे अछि।[121]

‘भैंटक लावा’ आ ‘बिसाँढ़’क प्रसंग बाढ़ि-रौदीक समाजमे संकट-प्रबन्धन आ स्त्रीक व्यवहारिक बुद्धिक महत्त्व रेखांकित करैत अछि। कथामे ज्ञान प्रायः सरकारी अधिकारी अथवा शिक्षित पुरुषक एकाधिकार नहि; गामक महिला, मजदूर अथवा उपेक्षित समुदाय संकटमोचनक बौद्धिक केन्द्र बनि सकैत अछि। समीक्षक एहि बातकेँ सराहैत छथि, जे संग्रहक आरम्भिक ‘समानान्तर साक्षरता’क विचारसँ गहन मेल रखैत अछि।

‘बोनिहारिन मरनी’मे स्त्रीक कठोर श्रम, आर्थिक असुरक्षा आ आत्मबलक प्रसंग अछि। एतय करुणा साहित्यिक संवेदना उत्पन्न करैत अछि; मुदा श्रमक संरचनात्मक शोषणक कारण—मजदूरीक दर, भूमिसम्बन्ध, ठेकादारीक सत्ता—जँ खुलि कऽ चर्चा होइत तँ आलोचना अधिक पैघ सामाजिक स्वरूप पबैत। ‘हारि-जीत’क कुम्हार-परिवारक विस्थापन कोसीक कटावकेँ केवल प्राकृतिक दुर्घटना नहि, परम्परागत पेशा आ गृहस्थीक संकट बनबैत अछि। समीक्षा लोकजीवनक भीतर कारीगरीक सम्मानकेँ स्थापित करैत अछि।

‘ठेलाबला’, ‘दूटा पाइ’, ‘पछताबा’ आ ‘भैयारी’क व्याख्यामे शहर दिस पलायन आ गामसँ सम्बन्धक क्षीणता प्रमुख अछि। लेखक नव जीविकाक खोजकेँ नकारैत नहि छथि, मुदा जड़ि बिसरबाक प्रवृत्तिपर तीक्ष्ण टिप्पणी करैत छथि। एहि नैतिक अभिप्रायमे एक सीमा अछि: पलायन कखनो व्यक्तिगत लोभसँ नहि, संरचनात्मक बेरोजगारी, विपन्नता अथवा अवसरक अभावसँ होइत अछि। साहित्यिक समीक्षा जँ प्रवासीक बाध्यताकेँ सेहो समान महत्त्व दितय तँ गाम-शहरक सम्बन्ध बेसी जटिल आ यथार्थपूर्ण बनितय।

‘चूनवाली’ सन कथाक विवेचन विलुप्त होइत लोकपेशाक स्मृति सहेजैत अछि। ‘डिहक बटबारा’मे शिक्षित पात्रक लोभ आ ग्रामीण न्यायबोधक द्वन्द्व प्रस्तुत होइत अछि। ‘बाबी’मे औपचारिक अक्षरज्ञानसँ बाहर सामाजिक बुद्धिक मूल्य अछि; ‘बहीन’मे जन्मसँ बेसी व्यवहारपर सम्बन्धक कसौटी अछि। अलग-अलग कथाक सामाजिक सूत्र चिह्नित करब समीक्षकक गुण अछि, मुदा अनेक ठाम कलात्मक शिल्पक जाँच नैतिक सन्देशक वर्णनक पाछाँ रहि जाइत अछि।

पात्रक नामकरण, ग्रामीण उपमा, कहावत आ वाक्यक लयपर समीक्षकक ध्यान विशेष उल्लेखनीय अछि। एतय ओ केवल विषयवस्तु नहि, कथाकारक भाषिक साधनकेँ सेहो चिह्नित करैत छथि। तथापि कथाक कथावाचक-दृष्टि, काल-विन्यास, संवाद-निर्माण, चरित्रक अन्तर्विरोध आ अन्तक खुलापनपर तुलनात्मक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम अछि। फलतः समीक्षा सामाजिक अर्थमे समृद्ध, औपचारिक आख्यानशास्त्रमे

121 मिश्र, ‘गामक जिनगी’, विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। एहि सन्दर्भमे मूल कथा-संग्रहक पृथक प्रति नहि, मिश्रक प्रकाशित समीक्षाक कथन आधार अछि।

आंशिक अछि। ई सीमा स्वीकार कएलाक बादो एकर महत्त्व घटैत नहि; कारण मैथिली ग्रामीण कथाकेँ सामाजिक ज्ञानक स्रोत मानबाक आग्रह स्पष्ट रूपसँ उपस्थित अछि।

१०. 'जीवन संघर्ष' : बँसपुराक माध्यमसँ मिथिलाक सामूहिक चित्र

'जीवन संघर्ष' उपन्यासक समीक्षामे समीक्षक अपन पठन-अनुभवसँ शुरू करैत छथि। ओ लिखैत छथि जे सामान्यतः एक बैसारमे कम पृष्ठ पढ़ैत छथि, मुदा ई उपन्यास हुनका लगातार पढ़बाक लेल प्रेरित केलक। आलोचनामे अपन पाठकीय स्थितिक ई उद्घाटन महत्त्वपूर्ण अछि: निर्णयकेँ निरपेक्ष आदेशक बदला अनुभवक सार्वजनिक बयानक रूप भेटैत अछि। मुदा एहि आत्मस्वीकृतिक बादो कठोर मूल्यांकनक कसौटी आवश्यक रहैत अछि।[122]

बँसपुरा गाम लेखनक प्रमुख केन्द्र अछि। समीक्षकक विवेचनमे नवविवाहिता युवती, पड़ोसी सिसौनी गामक घटना, सामूहिक आक्रोश आ विवेकपूर्ण हस्तक्षेपक प्रसंग विशेष महत्त्व पबैत अछि। हिंसात्मक प्रतिशोधक सम्भावनाक बीच गामक समझदार लोकक भूमिका सामाजिक आख्यानकेँ केवल बदला लेबाक कथा बनबाकसँ रोकैत अछि। सामाजिक संकटमे सामूहिक निर्णय, नेतृत्व आ न्यायबोधक प्रश्न उपन्यासक प्रमुख अर्थ-क्षेत्र बनैत अछि।

समीक्षक गामक कथामे पलायन, सरकारी सहायताक वितरण, विधवा-जीवन, कोसीक कटाव, कुम्हारक पेशा, गामक आपसी टकराव आ श्रमिक लोकनिक विकल्पक उल्लेख करैत छथि। बँसपुराकेँ 'मिनिएचर मिथिला'क रूपमे देखबाक विचार आकर्षक आलोचनात्मक सूत्र अछि: एक सीमित भूगोलमे व्यापक समाजक अनेक प्रवृत्ति एकत्र होइत अछि। मुदा 'सम्पूर्ण मिथिला'क प्रतिनिधित्व एक गामसँ स्वतः सिद्ध नहि होइत; ई आलोचनात्मक रूपक अछि, जनसांख्यिक निष्कर्ष नहि।

दिल्लीसँ गाम लौटि व्यवसाय शुरू करनिहार रमेसराक प्रसंग उपन्यासक आर्थिक कल्पनाशीलताकेँ सोझाँ अनैत अछि। शहरक मजदूरी आ गामक सम्भावित स्वावलम्बनक तुलना, औजारक नामावली आ रोजगारीक अनुभव कथाकेँ श्रम-संस्कृतिक ठोस पदार्थ प्रदान करैत अछि। ओहि संग डोमक पेशा, भगताक सामाजिक दण्ड आ मसोमातक सहाय्यक प्रसंग समाजक भीतर वर्ग, जाति, विधि आ नैतिक न्यायक परस्पर गाँठि देखबैत अछि।

समीक्षकक दृष्टि प्रायः उपन्यासकारक प्रति गहन सहानुभूति रखैत अछि। एहि आत्मीयतासँ मूल्यवान पाठ-सम्बन्ध बनैत अछि, मुदा नकारात्मक परीक्षणक अनुपात कम भऽ जाइत अछि। कथानकक सम्भावित

122 मिश्र, 'जीवन संघर्ष' (उपन्यास समीक्षा), विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना। उपन्यासक मूल पाठकेँ एहि आलोचनाक पृथक आधार नहि मानल गेल अछि।

प्रसार, पात्रक मनोवैज्ञानिक स्तर, संवादक विश्वसनीयता, स्त्रीक दृष्टिकोण आ अन्तर्निहित सामाजिक सत्ता-समीकरणपर प्रश्न उठाओल जा सकैत छल। विशेष रूपसँ मान-सम्मानक नामपर स्त्रीक देहकेँ सामुदायिक प्रतिष्ठाक केन्द्र बनाओल जाएबाक प्रसंग स्त्रीक स्वतन्त्र अनुभवसँ अलग कऽ नहि पढ़ल जाएबाक चाही। एहि आलोचनात्मक सावधानीसँ उपन्यासक साहित्यिक महत्त्व आर परिपक्वतासँ बुझल जा सकैत अछि।

११. कथात्मक शिल्प : 'हम'क अनेक रूप

एहि पुस्तकक एक लक्षणीय विशेषता कथक 'हम'क बदलैत रूप अछि। चित्रकलाक लेखमे 'हम' सांस्कृतिक व्याख्याकार छथि; हॉफलोंगमे कार्यशाला-संचालक; बृन्दावनमे नाती, बेटा आ परिवारक सहयात्री; दिवांगमे थाकल, क्रुद्ध अथवा व्याकुल यात्री; मलिक भायक प्रसंगमे प्रश्न करनिहार श्रोता; संगाईप्राऊमे क्षेत्र-अध्येता; आ साहित्यिक समीक्षामे श्रमसँ पढ़निहार पाठक। ई बहुरूपता लेखकक आवाजकेँ अकादमिक लेखनक निर्जीव समानतासँ बचबैत अछि।

घटनाक क्रमबद्ध प्रस्तुति आ संवादक प्रयोग यात्रावृत्तान्तकेँ कथा-सन्निकट बनबैत अछि। पाठमे प्रत्याशा, बाधा, असुविधा, उलाहना, हास्य आ आत्मनिरीक्षणक क्षण अछि। अनेक घटना नाटकीय तनाव लैत अछि—कादोमे फँसल गाड़ी, नावमे बरखाक आशंका, कार्बी महिलाक प्रश्न, दूषित यमुनाक जल, अथवा मलिक भायक राजनीतिक टिप्पणी। साहित्यिक दृष्टिएँ ई प्रभावी अछि, कारण अनुभव केवल सूचना नहि रहैत; ओ दृश्य, आवाज आ मनोदशा ग्रहण करैत अछि।

कथकक आत्मीयता कखनो सीमा सेहो बनैत अछि। व्यक्तिगत रोषक विस्तृत वर्णन जनसमुदायक इतिहासकेँ पाछाँ धकेलि दैत अछि। कखनो लेखकक नैतिक निर्णय प्रश्नक पहिने उपस्थित होइत अछि; पाठककेँ तकर विपरीत पक्ष सुनबाक अवसर कम भेटैत अछि। ई समस्या विशेषतः दिवांगक शीर्षक-विषयक अन्तर आ मलिक भायक संवादमे देखल जा सकैत अछि। तथापि ई असंगति पुस्तककेँ साहित्येतिहासक लेल उपयोगी बनबैत अछि, कारण एतय आधुनिक मैथिली प्रथम-पुरुष गद्यक प्रामाणिक सम्भावना आ सीमा दुनू खुलैत अछि।

१२. मैथिली भाषाक स्वरूप : लोकबोली, अन्तरभाषिकता आ सम्पादन

संकलनक भाषा बहुस्तरीय अछि। मिथिलाक घरेलू वस्तु, पर्व, जाति-पेशा आ लोकसम्बन्धक शब्दक संग अंग्रेजी, हिन्दी, प्रशासनिक पदावली आ क्षेत्रीय नाम प्रवेश करैत अछि। 'भेट', 'गाम', 'मोन', 'कनियाँ', 'अरिपन', 'सिक्की', 'जागर' आ 'नागा' सम्बन्धी पद अनेक सांस्कृतिक जगतकेँ एकहि गद्य-प्रवाहमे अनैत

अछि। लेखक एहन प्रसंगमे शब्दक स्थानीय अर्थ खोएने बिना एक भाषा द्वारा दोसर अनुभवक व्याख्या करैत छथि।

लेखकक मैथिली प्रायः मौखिक सान्निध्य बनबैत अछि। प्रश्नक छोट वाक्य, वार्तालापक लय, विस्मय, तामस आ अपनापन एकर जीवन्तता अछि। प्रकाशित पाठमे कतहु संयुक्ताक्षरक असामान्य फाँक, मात्राक असंगति, विरामचिह्नक अनियमितता आ वर्तनीक विविधता देखाइत अछि। एहि सभकेँ स्वतः लेखकीय भाषिक अक्षमताक प्रमाण मानब उचित नहि; पाठक प्रकाशन आ पुनर्मुद्रणक प्रक्रियामे सेहो अशुद्धि प्रवेश कऽ सकैत अछि।

भाषिक एकरूपताक दृष्टिएँ ‘चित्रकला/पेंटिंग’, ‘देबार/देवाल’, ‘क्यानवस’, ‘वाणिज्यीकरण’, ‘हॉफलोंग’, ‘दिवांग/दिबांग’ तथा ‘जेमि/जिमि’ सन रूपसभ ध्यान खींचैत अछि। स्थानीय उच्चारण, नामक प्रचलित रूप आ साहित्यिक मैथिलीक मानक रूपक बीच संतुलन आवश्यक अछि। तथापि जीवित बोलीक लय आ संवादक स्वाभाविकताकेँ सपाट भाषा-शुद्धिक नामपर नष्ट करब साहित्यिक रूपसँ हानिकारक होएत।

१३. स्त्री, जाति आ सृजनाधिकार : पुस्तकक अन्तरपाठीय सूत्र

चित्रकलाक मिथिलाञ्चली स्त्री, हॉफलोंगक कार्यशाला-भागीदार, वृन्दावनक माय-सासु, संगाईप्राऊक एथेना आ मण्डलक कथाक मरनी, बाबी अथवा अन्य महिला-पात्र—ई सभकेँ एक संग पढ़ब पुस्तकक अत्यन्त सार्थक पद्धति अछि। स्त्री एहि पाठसभमे कखनो स्मृतिक संरक्षिका, कखनो परिवारक केन्द्र, कखनो कारीगर, कखनो राजनीतिक-नागरिक हस्तक्षेपक कर्ता, तँ कखनो विपन्न श्रमिकक रूपमे सोझाँ अबैत छथि। एतय ‘महिलाक योगदान’ कहलासँ आगाँ बढ़ि ई देखबाक आवश्यकता अछि जे निर्णय, पारिश्रमिक, प्रतिष्ठा आ ज्ञानक स्वामित्व ककर हाथमे अछि।

मिथिला चित्रकलाक बाजार एकटा कठिन प्रश्न उठबैत अछि: लोकशिल्पक मूल्य बढ़िते जँ आयक नियन्त्रण दोसरक हाथमे चलि जाए तँ कलाकारक आत्मनिर्भरता कतेक वास्तविक रहैत अछि? हॉफलोंगक कार्बी महिला शोधकर्ताकेँ प्रश्न करैत छथि, से प्रतिनिधित्वक शक्ति सम्बन्ध उलटि दैत अछि। ‘गामक जिनगी’मे अज्ञात आ अनपढ़ मानल गेल लोकक व्यावहारिक बुद्धि साहित्यक दृष्टिकोण बदलैत अछि। ई सभ अलग रचनाक भीतर एकहि सम्भावना खोलैत अछि—अधिकार-विहीन मानल गेल लोक स्वयं ज्ञानक सर्जक छथि।

जातीय प्रश्नपर पुस्तकक स्वर एकरूप नहि। चित्रकलामे कलाकारक जातीय प्रवेशक अनुक्रम अछि; ‘गामक जिनगी’ आ ‘जीवन संघर्ष’मे श्रम, अस्पृश्यता-सन्निकट पेशा, सामाजिक प्रतिष्ठा आ ग्रामीण शक्ति-संरचनाक प्रसंग अछि। मुदा जातीय पदानुक्रमक संस्थागत कारणक परीक्षण कतेको ठाम नैतिक आदर्शक

पाछाँ रहि जाइत अछि। सामाजिक सद्भाव महत्त्वपूर्ण लक्ष्य अछि, मुदा सद्भावक चर्चा कऽ असमानताक वास्तविक वितरण अदृश्य कऽ देब आलोचनाक उद्देश्य नहि होएबाक चाही।

१४. पर्यावरण, पलायन आ जीविकाक साझा कथानक

संकलनक भिन्न-भिन्न स्थान पर्यावरणीय संकटसँ जुड़ैत अछि। मिथिलामे अकाल आ चित्रकलाक नवा बाजार; हॉफलोंगमे बाँस-फूलनाइ आ अन्नक संकट; दिवांगक ब्रह्मपुत्र-पार आ दूरस्थ आजीविका; बृन्दावनमे यमुनाक प्रदूषण; 'हारि-जीत' आ 'जीवन संघर्ष'मे कोसीक कटाव—ई सभकेँ एक संग पढ़लासँ प्रकृति 'दृश्य' नहि, जीवन-व्यवस्थाक सक्रिय शक्ति बनैत अछि।

एहि सम्बन्धमे लेखकक दृष्टि अनुभव-प्रधान अछि। ओ संकटकेँ व्यक्ति आ परिवारक स्थितिमे धरैत छथि, जे पाठक लेल सहज बोधगम्य होइत अछि। मुदा संकट-प्रबन्धन, भूमि-अधिकार, नदी-नीति, पर्यावरणीय विनियमन अथवा सरकारी व्यवस्थाक संख्यात्मक अध्ययनक अभाव अछि। एहि कारणेँ एहि संकलनकेँ सामाजिक-पर्यावरणीय संवेदनाक दस्तावेज मानब अधिक उपयुक्त अछि; विशुद्ध पर्यावरण-विज्ञान अथवा नीतिशास्त्रक पूर्ण शोधग्रन्थ कहब अनुपयुक्त होएत।

पलायनक प्रश्न सेहो विरोधाभासपूर्ण अछि। दिवांगमे परदेश पहुँचल नाविक मेहनतसँ अपन आर्थिक स्थिति बदलैत अछि; 'गामक जिनगी'मे शहरक चकाचौंध लोककेँ जड़िसँ काटैत अछि; 'जीवन संघर्ष'मे शहरसँ गाम घुरि जीविका बनओनिहार व्यक्ति सम्भावनाक उदाहरण बनैत अछि। एहि तीनू प्रसंगक तुलना बतबैत अछि जे प्रवास नितान्त विनाशकारी अथवा स्वतः मुक्तिदायी नहि। ओकर परिणाम ऋण, भूमि, शिक्षा, पेशा, बाजार, परिवार आ सामाजिक स्वीकृतिक संयुक्त प्रभावसँ बनैत अछि।

१५. प्रमाण, पक्षधरता आ शोध-पद्धतिक सीमा

एहि संकलनक सबसँ पैघ बल सजीव दृष्टान्त अछि; एतय व्यक्तिक स्वर सुनाइत अछि आ स्थानक भौतिकता अनुभव होइत अछि। मुदा साहित्यिक प्रामाणिकता आ ऐतिहासिक/नृवंशवैज्ञानिक प्रामाणिकता एक नहि। प्रत्यक्ष देखल घटनाक विवरण एक स्तरक प्रमाण अछि; सुनल दन्तकथा दोसर; राजनीतिक संवाद तेसर; आ बाहरी अभिलेखक आधारपर सत्यापित तथ्य चारिम। ई चारूकेँ एकहि कोटिमे राखलासँ पुस्तकक मूल्यांकन भ्रामक भऽ सकैत अछि।

प्रथम, जनजातीय परम्परासम्बन्धी किछु कथन एक वा दूटा व्यक्तिक सूचना द्वारा प्रस्तुत अछि। ओहि वक्ताक नाम, स्थान, साक्षात्कारक तिथि आ भाषा-प्रयोग सर्वत्र समान स्पष्टतासँ नहि भेटैत अछि। दोसर, संस्कृति-रक्षाक मूल्यनिर्णय कखनो धार्मिक अथवा राजनीतिक पूर्वमान्यताक समीप पहुँचि जाइत अछि।

तेसर, लेखक स्थानीय समाजक स्त्रीक स्वायत्तताक समर्थन करैत छथि, मुदा अनेक अवसरपर हुनक स्वर अधिकतर लेखकक वर्णनक माध्यमसँ सुनाइत अछि। चारिम, ग्रामीण साहित्यपर दुनू समीक्षामे प्रशंसात्मक घनत्व अधिक अछि आ औपचारिक शिल्प-समीक्षा अपेक्षाकृत कम।

एहि सीमाक चर्चा कएलासँ पुस्तकक उपलब्धि अस्वीकार नहि होइत अछि। उलटे पाठकेँ प्रमाणानुसार पढ़बाक ई प्रक्रिया एकर असल महत्त्वकेँ स्पष्ट करैत अछि। यात्रा-वृत्तान्त एतय निरीक्षणक पहिल दस्तावेज बनैत अछि; सम्पूर्ण नृवंशविज्ञान नहि। साहित्यिक समीक्षा एतय लेखकीय समाजबोधक आलोचनात्मक साक्ष्य बनैत अछि; कथा-संग्रह अथवा उपन्यासक पूर्ण अन्तिम निर्णय नहि। एहि भेदक आदरसँ पढ़ब विद्वतापूर्ण पाठक अनिवार्य शर्त अछि।

१६. बाहरी शोधसँ प्राप्त पुष्टि आ जाँचबाक शेष प्रश्न

मिथिला चित्रकलाक प्रसंगमे भारतक भौगोलिक-संकेतक पञ्जीकरण अभिलेख मधुबनी चित्रकलाक आवेदन संख्या ३७, २२ अगस्त २००५ कें आवेदन आ १६ मई २००७ कें प्रमाणपत्रक तिथि दर्शबैत अछि। ई तथ्य कलाक संस्थागत मान्यताक एक स्वतन्त्र सन्दर्भ अछि। मुदा पञ्जीकरण-सूचना मात्रसँ प्रत्येक कलाकारक आय अथवा संरक्षणक वास्तविक प्रभाव निर्धारित नहि होइत। एतय क्षेत्रीय आर्थिक अध्ययनक आवश्यकता शेष अछि।[123]

हॉफलोंगक बाँस-फूलनाइ सम्बन्धी आशंका वैज्ञानिक अध्ययनमे प्रासंगिक सिद्ध होइत अछि; मुदा अलग प्रजाति आ भूभागक अन्तर जरूरी अछि। रानी गैदिन्ल्यूक संघर्षक प्रमुख काल-तिथि शासकीय स्रोतसँ पुष्ट होइत अछि। नन्दा-राजजातक बारह-वर्षीय आवर्तन आ यात्रा-पथ शासकीय परिचयमे दर्ज अछि। इदु-मिसमी समुदायक शिल्प, धार्मिक परम्परा आ पर्वक विवरण लोअर दिवांग घाटीक आधिकारिक स्रोतमे उपलब्ध अछि—मुदा मूल लेखमे वर्णित नहि भेल विवरणकेँ मूल लेखकक काज मानब गलत होएत।

‘मलिक भाय’ खण्डक राजनीतिक टिप्पणीक लेल एहि अध्ययनमे स्वतंत्र अभिलेखीय निष्कर्ष स्थापित नहि कएल गेल अछि। एहि कारणेँ ओहि कथनसभक अध्ययन संवाद-शैली, सामाजिक पूर्वधारणा आ समयक राजनीतिक भाषाक रूपमे कएल गेल अछि। एहि पद्धतिसँ समीक्षा अनावश्यक तथ्य-आरोपणसँ बचैत अछि आ मूल रचनाक साहित्यिक प्रकृतिक सम्मान करैत अछि।

123 Geographical Indications Registry, Intellectual Property India, “Madhubani Paintings,” आवेदन सङ्ख्या ३७, आवेदन २२ अगस्त २००५, प्रमाणपत्र १६ मई २००७, https://search.ipindia.gov.in/GIRPublicSearch/Application/Details/37.

१७. साहित्येतिहासमे स्थान : लोकज्ञानक विस्तार, आलोचनाक अपूर्ण परियोजना

एहि संकलनक योगदान तीन ठाम विशेष रूपसँ देखाइत अछि। प्रथम, ई मैथिली गद्यकेँ मिथिलाक सीमासँ बाहरो सांस्कृतिक निरीक्षणक समर्थ माध्यम बनबैत अछि। अरुणाचल, असम, मणिपुर, ब्रज आ उत्तराखण्डक अनुभव मैथिलीमे व्यक्त भेल अछि; भाषा अपन स्थानीय आत्मीयता अक्षुण्ण राखैत अपरिचित संसारक अध्ययन करैत अछि। दोसर, ई संस्कृति आ साहित्यक केन्द्रमे साधारण जनक अनुभव रखैत अछि—चित्रकार महिला, नाविक, श्रमिक, परम्परागत कारीगर, गामक विवेकी व्यक्ति। तेसर, ई साहित्यक समीक्षा आ क्षेत्र-अनुभवक बीच संवादक सम्भावना खोलैत अछि।

संग्रहक आलोचनात्मक अपूर्णता सेहो एहि योगदानक संग अभिन्न अछि। सांस्कृतिक विविधताक पक्षधर लेखक कखनो एकल 'मूल परम्परा'क रक्षाक आग्रह करैत छथि; उपेक्षित स्त्रीक स्वाधीनताक पक्षधर लेखक कखनो ओकर स्वानुभवकेँ पर्याप्त स्थान नहि दैत छथि; गामक सामाजिक विवेकक प्रशंसक लेखक कखनो प्रवासक बाध्यताकेँ नैतिक चूकक निकट रखि दैत छथि। एहि विरोधाभासकेँ केवल दोष-सूची बनाउलाक बदला आधुनिक मैथिली वैचारिक गद्यक संघर्षक दस्तावेज मानब अधिक उपयुक्त अछि।

पुस्तकक सर्वोत्तम पृष्ठ ओ अछि जतय लेखक अपन निश्चित धारणासँ हटि कऽ दूसराक आवाज सुनैत छथि। कार्बी महिलाक प्रश्न, रामओतारक आजीविका-कथा, गंगा देवीक नव चित्र-विषय, एथेनाक घरेलू संसार आ मण्डलक कथाक अप्रतिष्ठित श्रमिक—एहि सबहक माध्यमसँ मैथिली गद्य अपन अनुभूतिक क्षेत्र बढ़बैत अछि। पुस्तकक कमजोर क्षण ओ अछि जतय राजनीतिक अथवा सांस्कृतिक निर्णय प्रत्यक्ष प्रमाणसँ आगाँ निकलि जाइत अछि। आलोचनाक वास्तविक न्याय एहि दुनू अवस्थाकेँ एक संग देखबामे अछि।

निष्कर्ष : सहेजब मात्र नहि, प्रश्न करैत सहेजब

'विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना'क असल सार एकटा सांस्कृतिक आग्रहमे अछि: लोकजीवनकेँ ज्ञानक योग्य क्षेत्र मानू, आ लोकक सृजनात्मक अनुभवकेँ विद्वताक बाहरी हाशियापर नहि राखू। मिथिला चित्रकलाक महिला-निर्मित चिह्न, उत्तर-पूर्वक सामुदायिक स्मृति, ब्रजक भावनात्मक भूगोल आ बँसपुराक संघर्षशील समाज—सभ मिलि कऽ एहि आग्रहकेँ भिन्न-भिन्न रूप दैत अछि। ई पोथी संश्लिष्ट सिद्धान्तक सर्वथा पूर्ण उदाहरण नहि; एहि ठाम संस्मरणक आत्मीयता, अवलोकनक ऊष्मा, नैतिक पक्षधरता आ शोधक अपूर्णता एक-दोसरसँ जोड़ल अछि।

पुस्तकक साहित्यिक उपलब्धि एतय अछि जे ई मैथिलीमे यात्रा-वृत्तान्त, लोकसंस्कृति-लेखन आ ग्रामीण कथा-समीक्षाकेँ एकहि सांस्कृतिक प्रश्नभूमिपर उपस्थित करैत अछि। एकर मुख्य सीमा प्रमाणक असमान घनत्व, वर्णित समुदाय सभक स्वरक अपूर्ण प्रतिनिधित्व, किछु अध्यायक शीर्षक-विषयक अन्तर आ आलोचनामे प्रशंसाक अपेक्षाकृत अधिकता अछि। जे पाठक एहि दुनू पक्षकेँ देखैत छथि, हुनका लेल ई संग्रह अनुसन्धानक अन्तिम पड़ाव नहि, अपितु अनेक सार्थक शोध-प्रश्नक आरम्भ सिद्ध होइत अछि।

सन्दर्भ-सूची

प्राथमिक ग्रन्थ

मिश्र, कैलाश कुमार। विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना (विदेह-सदेह १०)। सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर; सह-सम्पादक: उमेश मण्डल। नई दिल्ली: श्रुति प्रकाशन, २०१२।

शोधलेख आ आधिकारिक अभिलेख

District Lower Dibang Valley, Government of Arunachal Pradesh. “Idu Mishmi.” https://roing.nic.in/culture-heritage/idu-mishmi/.

Geographical Indications Registry, Intellectual Property India. “Madhubani Paintings.” Application No. 37. https://search.ipindia.gov.in/GIRPublicSearch/Application/Details/37.

Mishra, Kailash Kumar. “Mithila Paintings: Women’s Creativity Under Changing Perspectives.” Indian Folklore Research Journal 1, no. 3 (2003). https://indianfolklore.org/index.php/ifrj/issue/view/57.

Ministry of Tribal Affairs, Government of India. “Union Minister of Home Affairs and Minister of Cooperation, Shri Amit Shah Will Lay Foundation Stone Tomorrow of Rani Gaidinliu Tribal Freedom Fighters Museum in Luangkao Village, Tamenglong District, Manipur.” Press Information Bureau, 21 November 2021. https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=1773746.

Office of the Commissioner, Garhwal Division, Government of Uttarakhand. “Nanda Devi Raj Jat.” https://garhwal.uk.gov.in/nanda-devi-raj-jat/.

Sridhara, Shakunthala, and T. P. Rajendran. “Gregarious Bamboo Flowering and Rodent Outbreaks – An Overview.” Proceedings of the Vertebrate Pest Conference 24 (2010). https://doi.org/10.5070/V424110341.

लोकक जीवन, स्त्रीक स्वर आ प्रमाणक कसौटी

‘विदेह सदेह २९’ मे डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक गद्य-पद्यक साहित्यिक आ मानवशास्त्रीय समीक्षा

पाठक परिचय आ समीक्षाक आधार

‘विदेह सदेह २९ : डॉ. कैलाश कुमार मिश्र केर गद्य आ पद्य रचना’ (२०२२) गजेन्द्र ठाकुरक सम्पादनमे प्रकाशित बहुविधात्मक संकलन अछि। एकर रचनासभ ‘विदेह’ ई-पत्रिकाक अङ्क १–३५० सँ संकलित अछि। संग्रहमे लघुकथा कहल गेल विस्तृत आख्यान, दीर्घकथा, यात्रा-संस्मरण, लोकपरम्पराक विवेचन, कला आ इतिहासपर लेख, साहित्यिक समीक्षा तथा अन्तमे ‘गामक कचोट’ कविता सम्मिलित अछि। एहि रचनासभकेँ एकल साहित्यिक विधाक चौखटिमे नहि, कथाशिल्प, लोकज्ञान आ सामाजिक आलोचनाक पारस्परिक सम्बन्धमे देखब अधिक उपयुक्त अछि।[124]

एहि संग्रहक केन्द्रीय साहित्यिक उपलब्धि एतबे नै जे लेखक मिथिलाक पाबनि, गीत आ कथाकेँ विस्मृत होमयसँ बचेबाक प्रयत्न करैत छथि। विशेष बात ई अछि जे ओहि सांस्कृतिक जगतक भीतर स्त्रीक श्रम, प्रेम, क्रोध, अपमान, सार्वजनिक वाणी आ निर्णय-सामर्थ्य सेहो देखब चाहैत छथि। परन्तु एहि दृष्टिक संग किछु अवरोध सह-अस्तित्वमे अछि: लोकविश्वासक प्रति अपार अनुराग, कथाकारक पुरुष-दृष्टिक कखनो अनपेक्षित प्रभुत्व, इतिहासक अनुमान आ जाँचल तथ्यक बीच ढीला सीमाङ्कन, तथा किछु ठाम भाषाक असमान सम्पादन। समीक्षाक मूल प्रश्न ईएह अछि: लोकजीवनक सघन अनुभूति साहित्यिक ज्ञान कतेक दूर धरि बनि पबैत अछि, आ कतऽ जा कऽ ओकरा प्रमाणक अधिक कठोर अनुशासन चाही?

124 कैलाश कुमार मिश्र, ‘विदेह सदेह २९ : डॉ. कैलाश कुमार मिश्र केर गद्य आ पद्य रचना’, सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर (विदेह, २०२२)।

संग्रहक स्वरूप आ लेखकक रचनात्मक स्थिति

अनेक विधाक संकलन, एक शोध-दृष्टिक विस्तार

अनुक्रममे ‘पण्डिताइन’, ‘बुरिराज’, ‘चन्दा’, ‘प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री’, ‘सखी कुन्ती’, ‘पुरुषक नहि विश्वासे’ आ ‘परिस्थिति लेखिका’ जकाँ कथा-रचनाक संग ‘फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना’, ‘मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास’ आ ‘लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी’ जकाँ अनुसन्धानपरक निबन्ध रखल गेल अछि। ‘यायावरी’ शीर्षकान्तर्गत उत्तर-पूर्व, उत्तराखण्ड आ ब्रजक अनुभव अछि; ‘बनैत-बिगड़ैत’, ‘मैथिली लोककथा’, ‘गामक जिनगी’ आ ‘जीवन संघर्ष’ पर आलोचनात्मक लेख सेहो अछि। एहिसँ पाठककेँ अलग-अलग लेखक नहि, एकहि रचनाधर्मी चेतनाक परिवर्तित रूप भेटैत अछि: कथाकार जखन लोकगीतक वर्णन करैत छथि तखन कथा कहबाक मोह छोड़ि नहि पबैत छथि; शोधकर्ता जखन कथा रचैत छथि तखन सामाजिक वर्ग, पेशा, विश्वास आ संस्कारक विस्तृत पृष्ठभूमि उपस्थित कऽ दैत छथि।[125]

एहि संयोगक लाभ ई जे पात्र शून्यमे नहि जीबैत छथि। हुनकर भोजन, देह, श्रम, सम्पत्ति, विवाह, भक्ति आ बोली परस्पर गाँथल अछि। हानि ई जे गद्यक गति बराबर नियंत्रित नहि रहैत। किछु आख्यानमे कृत्यक अपेक्षा लेखकक व्याख्या अधिक स्थान लैत अछि; किछु विवेचनमे व्यक्तिगत स्मृतिक बल शोधक अनुशासनपर भारी पड़ैत अछि। तथापि विधासभक एहि आवागमनसँ लेखकक अपन चिन्ताक एक सुसम्बद्ध मानचित्र निर्मित होइत अछि।

लेखकक आत्मस्थितिः मैथिलीमे लिखबाक संकोचसँ सार्वजनिक हस्तक्षेप धरि

‘नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग’क आरम्भमे लेखक अपन अंग्रेजी लेखनकेँ व्यवसायगत अभ्यास कहैत मैथिलीमे लिखबाक संकोच स्वीकार करैत छथि। ‘रचना’ पत्रिकामे ‘यायावरी’ स्तम्भ लिखबाक प्रसंग आ ‘विदेह’मे यात्रा-वृत्तान्त प्रस्तुत करबाक निर्णय उल्लेखनीय अछि। एहि आत्मस्वीकारक महत्त्व मात्र आत्मकथात्मक नहि: मातृभाषामे विशेषज्ञ ज्ञानक प्रवेशक सामाजिक इतिहास एहिमे विद्यमान अछि। मानवशास्त्रक प्रशिक्षित दृष्टि जखन मैथिली गद्यक आश्रय लैत अछि तखन जटिल सांस्कृतिक विषय परदेशी शैक्षणिक भाषाक बन्धनसँ बाहर आबैत अछि।[126]

125 मिश्र, ‘विदेह सदेह २९’, ‘अनुक्रम’; ‘पण्डिताइन’, ‘बुरिराज’, ‘चन्दा’ तथा अनुषंगिक गद्य-रचनासभ।

126 मिश्र, ‘नॉर्थ कछार हिल्स: धरतीक नुकाएल स्वर्ग (यायावरी–१)’, ‘विदेह सदेह २९’।

तथापि 'लोकक निकटता' अपने आपमे निष्पक्षताको प्रमाण नहि। लेखकक पारिवारिक संस्कार, ब्राह्मणिक अनुष्ठानसँ परिचय, दिल्लीक विद्वत्जगत आ देशक विविध सांस्कृतिक अञ्चलमे भ्रमण हुनकर दृष्टिक साधन सेहो अछि, सीमा सेहो। एतऽ लेखकीय 'हम' विश्वस्त साक्षी भऽ पाठकसँ गप करैत अछि; ओकर अनुभव आदरणीय अछि, मुदा प्रत्येक व्याख्या अन्तिम निर्णय नहि। संग्रहकेँ पढ़बाक उचित तरीका लेखकक अनुभूतिक गरमाहट आ तकर जाँच-पड़तालक आवश्यकता दुनूकेँ संग राखब थिक।

कथासाहित्यक समाज, स्मृति आ आख्यान

'पण्डिताइन': एक स्त्रीक अनुपस्थितिमे उपस्थित जीवन

'पण्डिताइन' फोनपर मृत्युस्मरण आ बरखीमे आमन्त्रणसँ आरम्भ होइत अछि। राघबक स्मृति जटा-अनुराधाक संसारमे प्रवेश करैत अछि आ कथा भोलाक निर्धन ब्राह्मण परिवार, सौराठ सभा, विवाह-बिचौलिया नीरस झा, बाल-विवाह, शिक्षा, आश्रम, कारावास, कर्मकाण्डी जीवन आ अनुराधाक निधन धरि फैलि जाइत अछि। प्रारम्भ आ अन्तक एहि वलयाकार विन्याससँ पाठक पहिने मृत स्त्रीक अभाव अनुभव करैत अछि, तकर बाद हुनक जीवनक परिस्थितिक इतिहास जनैत अछि। कथाक भावात्मक सूत्र अनुराधाक सेवा मात्र नहि, कठिन अवस्थामे जटाक सहचर बनि ठाढ़ रहबाक निर्णय सेहो अछि। निर्दोष साबित करबाक संघर्षमे अनुराधा आ सत्यव्रतक सहयोग कथाकेँ घरेलू समर्पणसँ आगू न्यायक प्रश्न धरि लऽ जाइत अछि।[127]

एहि रचनाक सामाजिक यथार्थ विशेष तीख अछि। ब्राह्मण पदवी आर्थिक सुरक्षा नै दैत; विवाह-बाजारमे देह, शिक्षा, आयु आ सम्पत्ति निर्णायक बनि जाइत अछि। पैंच-उधार आ दलाली मात्र प्रसंग नहि, पारिवारिक विवशताकेँ संचालित करएबला तन्त्र अछि। मुदा शीर्षक 'पण्डिताइन' अनुराधाकेँ पतिक पेशा-सापेक्ष नाम दैत अछि, आ ओकर रूप-वर्णनमे कथावाचकक दृष्टि अनेक बेर स्त्रीकेँ पुरुष-आनन्दक वस्तु बना दैत अछि। अनुराधाक साहस आ आत्मनिर्णयक सम्भावना एहि दृष्टिसँ अधिक जटिल अछि। 'लघुकथा'क नाम दऽ एतेक व्यापक जीवन-वृत्तान्त प्रस्तुत करब विधागत रूपसँ प्रश्नोत्तेजक अछि; ई संक्षिप्त क्षणक कथा नहि, लघु-उपन्यासक निकट दीर्घ आख्यान अछि। सर्वाधिक टिकाउ प्रभाव अन्तक ओ दृश्य छोड़ैत अछि जतऽ अनुराधाक स्वर गीत, चूड़ी आ भक्तिगानक स्मृतिमे बाँचल रहैत अछि।

127 मिश्र, 'पण्डिताइन', 'विदेह सदेह २९'।

‘बुरिराज’: विद्वत्ताक आडम्बर आ संस्थागत अवसरवाद

‘बुरिराज’मे राघब, सोहन आ निर्भयक प्रसंग विश्वविद्यालय, शोध, नौकरी आ सांस्कृतिक संस्थाक परिसरमे खोलाइत अछि। निर्भयक बाहरी व्यक्तित्व, सामाजिक पहुँच, पदोन्नति आ उपाधि प्रतिष्ठाक प्रतीक बनैत जाइत अछि, जखन कथावाचक तकर भीतरक नैतिक शून्यतापर प्रश्न करैत अछि। आखिरी व्यंग्यक मूल अर्थ ई जे संस्थागत शक्ति ‘डॉक्टर’ पदवी देखि लैत अछि, किन्तु मनुष्यक चरित्रक समीक्षा नहि करैत। एहि व्यंग्यक बल जीवनीगत घटनाक क्रममे अछि; विश्वविद्यालयक बाह्य सभ्यता आ निजी स्वार्थक सामीप्य पाठककेँ असहज करैत अछि।[128]

संग्रहक दोसर कथा जकाँ एतहुँ राघब लेखक-सदृश साक्षीक भूमिका निभबैत छथि। ई निरन्तर पुनरावृत्ति एक साझा कथा-जगत निर्माण करैत अछि; मुदा आलोचनात्मक सावधानी जरूरी अछि। कथावाचक जे व्यक्ति-विवरण दैत छथि, ओ कथाक सत्यक भीतर स्थित विवरण अछि, स्वतन्त्र जीवन-वृत्तक प्रमाण नहि। कथा अपने अन्तमे पूर्ण काल्पनिक होयबाक टिप्पणी दैत अछि। एहि टिप्पणीकेँ ध्यानमे राखि व्यंग्यकेँ संस्था-विशेष वा वास्तविक व्यक्तिपर आरोपक रूपमे नहि, साहित्यिक सत्ता-आलोचनाक रूपमे पढ़ब चाही।

‘चन्दा’: खेलक मैदानसँ सम्पत्तिक हिंसा धरि

‘चन्दा’ किशोर राघव आ चन्दाक खेल, आपसी आकर्षण, गाँवक ओसार आ परस्पर परिचयक रङ्गसँ आरम्भ होइत अछि। जे ठाम कबड्डीक शारीरिक चंचलता छल, ओहि संसारमे धीरे-धीरे परिवारक सम्पत्ति, हिस्सेदारी, भाइ-भाइक वैर, श्रमक अवमूल्यन आ हिंसाक स्मृति प्रवेश करैत अछि। बुलेसर आ कन्हैया सम्बन्धक द्वन्द्व कथाकेँ कौटुम्बिक राजनीति बना दैत अछि। व्यक्तिगत स्नेहक कोमलता सामूहिक कटुताक बीच असहाय भऽ जाइत अछि। चन्दाक उपस्थितिसँ ई इतिहास केवल पुरुषक झगड़ाक वर्णन नहि रहैत; उजड़ैत सम्बन्धक मनोवैज्ञानिक प्रभावो देखाइत अछि।[129]

लेखक दृश्य, संवाद आ स्मृतिक मध्यमे गति बनबैत छथि, मुदा कतेको ठाम दीर्घ पारिवारिक वृत्तान्त कथा-गतिकेँ रोकैत अछि। चन्दा नामक नायिका शीर्षकक केन्द्रमे रहितो कथा-निर्णयक अधिकांश साधन पुरुषक हाथमे अछि। ई साहित्यिक कमी मात्र नहि, कथित सामाजिक व्यवस्थाक पुनरुत्पादन सेहो बुझल जा सकैत अछि। अन्तमे दाहसंस्कारक दृश्यमे जतऽ राघवकेँ मृतक, पीड़ित आ संघर्षक छाया एकहि बेर देखा पड़ैत अछि, ओ अपूरित न्याय आ अपराध-बोधकेँ तीव्र प्रतीकात्मक रूप दैत अछि।

128 मिश्र, ‘बुरिराज’, ‘विदेह सदेह २९’; रचनाक अन्तमे कथाक काल्पनिकता सम्बन्धी सूचना देल गेल अछि।

129 मिश्र, ‘चन्दा’, ‘विदेह सदेह २९’।

‘प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री’: सहानुभूति, जनजातीय परिवेश आ भाषिक पूर्वग्रह

एहि कथामे छोटानागपुरक वन-प्रकृति, कथावाचकक बाल्यकाल, स्थानीय समुदायसँ निकटता, राजकुमारी नामक युवती आ मंगनू मिस्त्रीक प्रसंगसँ सामाजिक असुरक्षाक कथा बनैत अछि। रोग, असमान सम्बन्ध आ मृत्युक घटनाक बीच कथावाचकक राजकुमारीक प्रति सहानुभूति गहिर अछि। प्रकृति, देह आ समुदाय एक-दोसरसँ जुड़ल देखाइत अछि। मुदा आलोचनात्मक पाठककेँ दू स्तर अलग करए पड़त: कथामे वर्णित स्थानीय जनविश्वास, आ चिकित्सकीय अथवा ऐतिहासिक रूपसँ प्रमाणित सत्य। रोग-संचरण सम्बन्धी कथावाचकक निर्णयकेँ कथा-संवाद बुझब उचित अछि; बिना वैद्यकीय अभिलेखक ओकरा स्वतन्त्र प्रमाण नहि कहल जा सकैत अछि।[130]

‘निश्छल आदिवासी’ आ ‘नीच मिस्त्री’ जकाँ विरुद्ध विशेषण सामाजिक सहानुभूतिक बीच स्थापित श्रेणीबद्धताकेँ सेहो खोलैत अछि। जनजातीय समुदायकेँ सर्वथा भोला आ शहर/पुरुषकेँ सर्वथा दूषित बना देब यथार्थकेँ सरल करबाक जोखिम रखैत अछि। राजकुमारीक स्वतन्त्र वाणी आ सामुदायिक प्रतिक्रिया जतेक बेशी उभरित, कथा ततेक अधिक सम्पूर्ण होइत। एतऽ लेखकक करुणा वास्तविक साहित्यिक ऊर्जा अछि, किन्तु करुणाकेँ प्रतिनिधित्वक एकमात्र पर्याप्त शर्त नहि मानल जा सकैत अछि।

‘सखी कुन्ती’ आ ‘पुरुषक नहि विश्वासे’: स्त्रीजीवनक दू अलग बिम्ब

‘सखी कुन्ती’ बाल्यकालक उच्छृंखल, आत्मीय, आ अन्ततः वियोगमय स्मृति अछि। कथावाचकक दृष्टिमे कुन्ती केवल एक परिचित स्त्री नहि, जीवनक ओ रूप थिकीह जे समयक मारिसँ बदलि जाइत अछि। कथाक अन्तमे वर्तमानक जीर्ण कुन्तीसँ अधिक स्मृतिक पुरान कुन्तीकेँ जीवित रखबाक इच्छा मनोवैज्ञानिक रूपसँ मार्मिक अछि, मुदा एहिमे एक कठिन प्रश्न सेहो अछि: की जीवित स्त्रीक परिवर्तित अवस्था स्वीकार करबाक बदला ओकर आदर्शीकृत छवि सहेजब कथावाचकक सुविधा थिक? एहि असुविधाजनक प्रश्नसँए कथा मार्मिक बनैत अछि।

‘पुरुषक नहि विश्वासे’मे आशुतोष, चन्द्रकला, सौम्या आ अन्य पात्रक शिक्षा, विवाह, स्पर्धा, सम्बन्ध-विच्छेद आ उपलब्धिक विस्तृत संसार अछि। चन्द्रकला अन्तमे सफल गृहिणी, माय आ शिक्षिका होइतहुँ पुरुषपर भरोसा नहि करैत छथि। शीर्षकक विरोधाभास एही ठाम सघन अछि: सामाजिक प्रतिष्ठा आ पारिवारिक व्यवस्थित जीवन स्वतः मनक विश्वासक पुनर्स्थापना नहि करैत। तथापि घटनाक दीर्घ श्रृंखला

130 मिश्र, ‘प्रकृति सुन्दरि आ चूहर मिस्त्री’, ‘विदेह सदेह २९’।

स्त्रीक भीतरी अनुभवकेँ कखनो पाछाँ धकेलैत अछि। कथा जे बात अन्तिम वाक्यद्वारा कहैत अछि, ओकर नैतिक जटिलता स्त्रीक प्रत्यक्ष स्वरमे आरो प्रभावी होइत।[131]

‘परिस्थिति लेखिका’: कथामे कथा आ स्त्रीक रचनात्मक आत्मरक्षा

संग्रहक सर्वाधिक विस्तृत कथात्मक उपक्रममे सँ ‘परिस्थिति लेखिका’ एक अछि। राघव दरिभंगामे प्राध्यापक सुधाकरक घर पहुँचैत छथि; कथा धीरे-धीरे नन्दिताक जीवन, वैवाहिक अनुभव, रागिनीक दुःख, लेखनक उद्भव आ सामाजिक मर्यादाक संघर्षक दिशामे बढ़ैत अछि। नन्दिताक अपन बात कहबाक अवसर एक महत्त्वपूर्ण आख्यानात्मक मोड़ अछि। ओ केवल वर्णित पात्र नहि रहि, अपन जीवनक आख्यान स्वयं प्रस्तुत करए लगैत छथि। कथावस्तुमे स्मृति, संवाद, अन्तःकथा, कविता आ यात्राक पुनरारम्भ एक संग आबैत अछि। अन्तक निष्कर्ष जे परिस्थितिए नन्दिताकेँ लेखिका बनौलक, रचनात्मकताकेँ विलासिता नहि, अनुभवक प्रतिरोधक माध्यम बना दैत अछि।[132]

मुदा एहि प्रयोगक सीमा सेहो स्पष्ट अछि। नन्दिताक आत्मकथा बेर-बेर राघवक प्रतिक्रिया आ उत्सुकतासँ नियन्त्रित होइत अछि। पुरुष-श्रोता स्त्री-अनुभवक ‘प्रमाणक’ स्थिति ग्रहण करैत अछि। देह-वर्णन, घरक निजी परिस्थितिक चित्रण आ भावनात्मक प्रसंगक विस्तार कखनो कथा-गठनकेँ असन्तुलित करैत अछि। कथामे उद्धृत हिन्दी कविता रागिनीक दुःखक नाटकीय साधन अछि, ओकर स्वतन्त्र रचनाकारक परिचय स्रोतमे स्पष्ट रूपसँ स्थापित नहि; तेँ ओकरा बाहरी लेखकीय कृतित्वक निश्चित प्रमाण बनायब नहि चाही। एहन आरक्षित पाठमे ‘परिस्थिति लेखिका’क महत्त्व कम नहि होइत, बल्कि शिल्प आ स्त्री-अधिकारक भीतरक तनाव स्पष्ट होइत अछि।

लोकगीत, स्त्री-अनुभव आ अनुष्ठान

फकड़ा: लोकक ‘सार्वजनिक स्थान’मे मैथिलानीक अनुभव

‘फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना’ संग्रहक केन्द्रीय निबन्ध अछि। लेखकक आरम्भिक स्थापना जे मिथिलाक लोकस्मृतिक जड़ि मैथिलानी छथि, ओकरा ओ गीत, विधि-विधान, कहबी, विवाह, श्रम आ सामाजिक निषेधक उदाहरणसँ खोलैत छथि। विशेष रूपसँ महत्त्वपूर्ण विचार ई अछि जे सार्वजनिक शिक्षासँ वंचित स्त्री सेहो लोकमाध्यमकेँ अपन प्रेम, आक्रोश, आर्थिक विपन्नता

131 मिश्र, ‘सखी कुन्ती’ तथा ‘पुरुषक नहि विश्वासे’, ‘विदेह सदेह २९’।

132 मिश्र, ‘परिस्थिति लेखिका’, ‘विदेह सदेह २९’।

आ पुरुषक व्यवहारपर टिप्पणी करबाक स्थान बनबैत छथि। फकड़ा एतऽ केवल ‘बोलचालक मणि’ नहि, व्यंग्य, आपत्ति आ सामाजिक मनोविज्ञानक संक्षिप्त वाहक अछि।[133]

एहि आलेखक शोधात्मक शक्ति असंख्य लोक-वाक्यकेँ स्त्रीक सामाजिक दशासँ जोड़बाक यत्नमे अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ छोट-छोट कथ्य पाठकक भीतर एक व्यापक समूह-स्वर निर्मित करैत अछि। तथापि लोककथनक स्थानीय भेद, गायिका वा वक्ताक आयु, जाति, अवसर, प्रदर्शन-परिस्थिति, अभिलेखनक तारीख आ वैकल्पिक पाठसभक जानकारी सामान्यतः व्यवस्थित रूपमे समक्ष नहि अबैत अछि। एहि कारण पाठक जनैत अछि जे लेखकक अनुभव गहिर अछि, मुदा ई निर्णय कठिन रहैत अछि जे कोन फकड़ा कतय कतेक प्रचलित अछि। लेखक स्वयं लेखकेँ विशाल विषयक मात्र किछु बून्द कहैत छथि; एहि आत्मसीमाङ्कनमे विनय आ भविष्यक शोधक प्रस्ताव दुनू अन्तर्निहित अछि।

सीता: श्रद्धाक भीतर प्रतिरोधक लोकस्वर

‘मैथिलानी केर उपराग राम सँ आ समाज सँ: सीता दाई केर वेदना’ आ ‘फाटू हे धरती: सीता दाई केर वेदना’केँ संग पढ़ला पर एहि संग्रहक स्त्री-विमर्शक धार अधिक स्पष्ट होइत अछि। लेखक रामक प्रति मिथिलाक श्रद्धा स्वीकार करैत छथि, मुदा सीताक निर्वासन आ पत्नीकेँ सामाजिक अपवादक आधारपर त्याग देबाक प्रसंगमे उपरागक लोकपरम्पराकेँ वैध ठहरबैत छथि। एक लोकसमाज अपन आराध्यसँ प्रश्न पूछैत अछि; विरोध श्रद्धाक समाप्ति नहि, नैतिक सम्बन्धक विस्तार बनि सकैत अछि।[134]

‘फाटू हे धरती’क पाठ विशेष प्रभावशाली अछि, कारण लेखकक मायक मुँहसँ निकलल व्यथामय उच्चारण कथावाचकक बाल्यकालीन जिज्ञासाकेँ बादक सामाजिक बोधसँ जोड़ैत अछि। सीता एतऽ केवल महाकाव्यक पात्र नहि रहि, अन्यायक क्षणमे अपन वेदना कहबाक सांस्कृतिक भाषा बनैत छथि। तथापि प्रत्येक मैथिलानीक अनुभूति एकहि प्रकारक अछि—एहन व्यापक निष्कर्षक स्थानपर विभिन्न समुदाय, पीढ़ी आ सामाजिक स्थितिक अनुभव देखाएब आगाँक शोधक आवश्यक दिशा हएत। लेखकक उपलब्धि ‘मर्यादा’केँ एकतरफा आदेशक स्थानपर बहसक विषय बना देब थिक।

133 मिश्र, ‘फकड़ाक संग यात्रा करैत मैथिलानीक मनोदशाक: मानवशास्त्रीय विवेचना’, ‘विदेह सदेह २९’।

134 मिश्र, ‘मैथिलानी केर उपराग राम सं आ समाज सं: सीता दाई केर वेदना’ तथा ‘फाटू हे धरती: सीता दाई केर वेदना’, ‘विदेह सदेह २९’।

मधुश्रावणी: लोक-वेदक संयोग आ शरीरपर विधिक प्रश्न

‘लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी’मे लेखक एहि पाबनिक कथा, चित्र, गीत, वनस्पति, दाम्पत्य-शिक्षा आ स्त्री-सहभागिताकेँ एक संयुक्त सांस्कृतिक पाठशालाक रूपमे देखैत छथि। बिहुलाक प्रसंग आ अनुष्ठानक घटकसभ सांस्कृतिक सम्पदा बनेबाक कारण मात्र धार्मिक नहि: कथा सुनबाक, कहबाक, चित्र बनाबाक आ नवविवाहिताक सामाजिक संसारमे प्रवेशक परस्पर सम्बन्ध एतऽ बनैत अछि। विधि आ लोकवाणीकेँ एक संग पढ़बाक एहि यत्नमे प्रेक्षणक सूक्ष्मता अछि।[135]

अहिमे विशेष महत्त्व लेखकक आलोचनात्मक साहसक अछि। ओ नवविवाहिताक ठेहुनपर दाग देबाक विधिक कष्टक विरोध करैत प्रतीकात्मक विकल्पक बात रखैत छथि। परम्पराकेँ संरक्षित रखबाक अर्थ प्रत्येक व्यवहारकेँ अक्षुण्ण राखब नहि—ई तर्क लेखकक सांस्कृतिक दृष्टिक विकसित रूप अछि। ‘गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर द्वंद्व?’ एहि बहसकेँ आरो जटिल बनबैत अछि। देवीक कथामे ई तीक्ष्ण सामाजिक सम्बोधन स्त्रीक ईर्ष्या, असुरक्षा, दाम्पत्य सम्बन्ध आ प्रतिवादक लोकभाषा बनि जाइत अछि। लेखक अन्तमे पूछैत छथि जे ई पाबनि सभ जातिमे समान रूपसँ किएक नहि फैलि सकल; ई प्रश्न समावेशक सीमाकेँ स्पर्श करैत अछि। उत्तर निश्चित मानि लेलासँ बेशी महत्त्व एकरा खुलल अनुसन्धान-विषय बनौने राखबामे अछि।

मैथिलानीपर विमर्शक अधिकारी के? प्रतिनिधित्व आ उत्तरदायित्व

एहि शीर्षकक लेख स्त्रीपर लिखबाक अधिकारकेँ जन्मगत अथवा लिंगगत एकाधिकारसँ अलग करए चाहैत अछि। लेखक महिला रचनाकारक विचार, अपन मुसहर समुदाय सम्बन्धी क्षेत्र-अनुभव आ साहित्यिक उदाहरणक आधारपर कहैत छथि जे सहानुभूति आ गहन अध्ययनसँ दोसरक अनुभवपर सेहो जिम्मेदार लेखन सम्भव अछि। प्रश्न उचित अछि: पीड़ा अनुभव करनिहारक स्वरकेँ सर्वोपरि मानबाक संग आन साक्षीक अध्ययनकेँ सम्पूर्ण निषिद्ध किएक मानल जाए? मुदा एकरा उल्टा कहब सेहो अधूरा हएत जे केवल संवेदनशील लेखकक उपस्थिति पीड़ित समुदायक अपन बोलबाक जगहक बदला बनि जाए।[136]

संग्रहक रचनासभ एहि द्विविधाकेँ स्वयं उदाहरणसँ खोलैत अछि। लेखक स्त्रीक जीवनक पक्षधर छथि, मुदा कखनो स्त्रीक देह-वर्णन, व्यवहारक मूल्याङ्कन आ सामाजिक प्रतिनिधित्व पुरुष-वर्णनक मर्यादामे बन्हल रहैत अछि। सुदृढ़ आलोचनात्मक स्थिति ई हएत जे स्त्री, दलित, जनजातीय वा कोनो समुदायपर लिखबाक

135 मिश्र, ‘लोक वेद आ व्यवहारक पाबनि मधुश्रावणी – मानवशास्त्रीय विवेचन’ तथा ‘गौरी चोरनी, गौरी डाईन आ गौरी छिनारि: मधुश्रावणी कथा केर द्वंद्व?’, ‘विदेह सदेह २९’।

136 मिश्र, ‘मैथिलानी पर विमर्श क अधिकारी के?’ तथा ‘परित्यक्ता आ परिस्थिति: मिथिलाक सन्दर्भ मे’, ‘विदेह सदेह २९’।

द्वार खुलल रहय, किन्तु लेखनमे प्रत्यक्ष समुदाय-स्वर, समीक्षा, उत्तरदायित्व आ स्रोतक स्पष्टता अनिवार्य बुझल जाए। एहि कसौटीपर लेखकक अनेक निबन्ध महत्त्वपूर्ण प्रारम्भ छथि, पूर्ण विराम नहि।

जोगगीत: प्रेम, यौन-संकेत आ तन्त्रक सांस्कृतिक भूमिका

‘मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव’ विवाहक गानकेँ लाज ढाकबाक भाषा मात्र नहि, बल्कि अभिसार, परिहास, सम्बन्ध-निर्माण आ स्त्रीक अनौपचारिक शक्ति-प्रदर्शनक माध्यम बुझैत अछि। जोगक संस्कारमे बर-कनियाक मनोवैज्ञानिक समीपता, लोकगीतक दोअर्थी वाणी, बान्हबाक प्रतीक आ सामाजिक खेल एकत्र होइत अछि। लेखक जोगक ‘जोड़ब’ अर्थपर बल दैत गीतकेँ सम्बन्धक क्रिया मानैत छथि। एहि व्याख्यामे प्रेमक उपहास नहि, दाम्पत्यक सांस्कृतिक तयारीक पाठ अछि।[137]

एतऽ तन्त्र-सम्बन्धी प्रत्येक रूपककेँ वास्तविक अलौकिक प्रभावक प्रमाण नहि बुझबाक चाही। ओ गीतक प्रतीक-व्यवस्था आ गाबनिहारक विश्वासक अंग अछि। लोकगीतक अर्थ अवसर, स्वर, सामूहिक हँसी, पात्र आ सामाजिक बन्धनक बीच बदलैत रहैत अछि। एहि दृष्टिसँ रिचर्ड बाउमनक मौखिक कलाकेँ ‘प्रदर्शन’क रूपमे पढ़बाक विचार उपयोगी तुलनात्मक साधन बनैत अछि: लिखल पंक्तिसँ बाहर गानक क्रिया सेहो अर्थ रचैत अछि। लेखक एहि दिशामे आगू बढ़ैत छथि, मुदा गीतक वास्तविक प्रस्तुति-सन्दर्भक नियमित अभिलेखनसँ हुनकर तर्क आरो पुष्ट होइत।

सुग्गा आ कौआ: लोकगीतक पक्षी नहि, सम्बन्धक दूत

‘सुग्गा आ श्रृंगार’मे सुग्गा प्रेम, सौन्दर्य, बुद्धि, स्मरण आ अन्तरंग संवादक बहुरूपी प्रतीक अछि। लेखक लोक-प्रसंग, सीताक अनुभव, शास्त्रीय कथा आ मिथिलाक दैनिक सम्बोधनकेँ जोड़ैत छथि। एहि आलेखक सुन्दरता प्रतीकक विविधतामे अछि: एकहि पक्षी कखनो प्रियतमक संकेत, कखनो सन्तानक उपमा, कखनो गीतक पात्र, कखनो प्रकृति आ मनुष्यक सहजीवनक स्मृति बनैत अछि। पर्यावरणक संकटसँ एहि प्रतीक-जगतक ह्रासक चिन्ता आलेखकेँ वर्तमान समयसँ जोड़ैत अछि।[138]

‘मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक’ एहि परियोजनाकेँ अति विस्तृत रूप दैत अछि। कौआ सन्देश लऽ जाइत अछि, विरहिणीक संवादक माध्यम बनैत अछि, लोकविश्वास आ कथा-परम्पराक संग संयुक्त होइत अछि। लेखक पञ्चतन्त्रसँ आधुनिक कविता धरि प्रसंग अनैत छथि। एहि प्रचुर सामग्रीक लाभ सांस्कृतिक बहुलता अछि; सीमा ई जे मूल मैथिली गीतक विश्लेषण कखनो अन्य भाषाक उद्धरण आ विचलित प्रसंगक

137 मिश्र, ‘मैथिली जोग गीत मे प्रेम आ तंत्र केर प्रभाव’, ‘विदेह सदेह २९’।

138 मिश्र, ‘सुग्गा आ श्रृंगार: मैथिली लोकगीतक परिदृश्य मे’ तथा ‘मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक’, ‘विदेह सदेह २९’।

बोझसँ दबि जाइत अछि। गीतक पद्य, बोलबाक व्यक्ति, सन्देश ग्रहण करनिहार आ पक्षीक भूमिका अलग-अलग प्रस्तुत रहित तऽ प्रतीकक रूपान्तर अधिक साफ देखाइत।

‘मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास’: खाद्य-सूचीसँ सामाजिक व्यवस्था धरि

एहि आलेखमे मिथिलाक भोजन केवल स्वादक वर्णन नहि। साग, माछ, अन्न, दही, पाबनिक भोजन, रसोईक श्रम आ अतिथि-सत्कार लोकगीतमे सामाजिक सम्बन्धकेँ व्यक्त करैत अछि। लेखक विशेष रूपसँ गृहिणीक अदृश्य श्रमपर ठहरैत छथि। जे स्त्री अपनेकेँ ‘किछु नहि करैत छी’ कहैत छथि, हुनकर नियमित पाक-व्यवस्था, हस्तकला, संस्कार-सञ्चालन, लालनपालन आ लोकस्मृतिक वाहकक भूमिका लेखक सोझाँ अनैत छथि। एहि प्रसंगमे स्त्रीक श्रमकेँ घरेलू निष्क्रियता कहल जाएब पर तीख प्रतिवाद अछि।[139]

भोजन-संस्कृतिक ई विवेचन आवृत्तिमूलक अछि: पाक-प्रकारक संख्या-सूची आ कहबीक बहुलता पाठकेँ अभिलेखीय महत्त्व दैत अछि, मुदा वर्ग, जाति, भूमि, ऋतु आ भोजनक उपलब्धतामे अन्तरक विश्लेषण अपेक्षाकृत सीमित रहि जाइत अछि। एक धनी घरक थारी आ भूमिहीन परिवारक थारीक बीच भेदक बिना ‘मिथिलाक भोजन’ एकरूप नहि भऽ सकैत। तथापि लेखकक मूल प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण अछि: स्त्रीक असंख्य अवैतनिक कौशलकेँ सांस्कृतिक पूँजीक दर्जा देब सामाजिक मूल्याङ्कन बदलबाक पहिल चरण अछि।

मौखिक आख्यानक स्मृति: नानी, भरथरी आ गोपीचन्द

‘मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद’मे लेखक नानीक कथा-स्मृतिक माध्यमसँ लोकगाथा दर्ज करैत छथि। नानीक स्वर, अभिनय, बीच-बीचमे गीत, श्रोता-बच्चाक मोह आ स्मृतिक समयान्तर एहि लेखकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। लेखकक कथन जे स्मरणमे जे नीक भेटत से नानीक, आ जे भटकत से अपन स्मृति-दोषक, स्रोतक प्रति असाधारण नैतिक सचेतना देखबैत अछि। मौखिक परम्परामे ज्ञानी केवल अक्षर पढ़निहार नहि; प्रदर्शनकर्ता, स्मरणकर्ता आ समुदायमे कथा जीवित रखनिहार सेहो छथि।[140]

एहि कथानककेँ रिचर्ड बाउमनक प्रदर्शन-केन्द्रित दृष्टिसँ पढ़ला पर नानीक अभिनय केवल कथा सुनाबाक शैली नहि, अर्थक सृजन बनैत अछि। गुरु गोरखनाथ आ भरथरीक प्रसंग वैराग्यक नैतिक अनुकरण, लोकगानक भावभूमि आ सांसारिक अस्थिरताक कल्पनाकेँ संग लैत अछि। किएककि पाठ स्मृतिपर आश्रित

139 मिश्र, ‘मैथिली लोकगीतमे भोजनक विन्यास’, ‘विदेह सदेह २९’।

140 मिश्र, ‘मैथिली लोक परम्परामे नाथ जोगी राजा भरथरी आ गोपीचंद’, ‘विदेह सदेह २९’।

अछि, एकरा प्रामाणिक मौखिक संस्करणक एक साक्ष्य कहब उचित अछि; भरथरी-गोपीचन्दक ‘एकमात्र’ अधिकृत पाठ नहि। एही सीमाकेँ लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि।

यायावरी, सांस्कृतिक भूगोल आ प्रत्यक्ष अवलोकन

यात्रा-वृत्तान्त: भूगोल नहि, समाजसँ भेटक कथा

नॉर्थ कछार हिल्सक दू खेपमे हाफलौंगक परिवेश, दिमासा-सामुदायिक स्मृति, सांस्कृतिक सम्पदा आ मुख्यधारासँ उपेक्षाक अनुभव प्रमुख अछि। लेखक स्थानीय लोकसँ सुनल नाम-व्युत्पत्ति सेहो राखैत छथि आ एकाधिक व्याख्या सोझाँ रखैत छथि; ई अनिश्चय स्वीकार करबाक पक्ष सकारात्मक अछि। दिमासा महिलासँ भेल वार्तामे शराब, बहुविवाह आ सामाजिक संगठनक चिन्ता उभरैत अछि। यात्रा एतऽ दृश्यसुखसँ सामाजिक हस्तक्षेपक दिशामे मुड़ैत अछि। लेखकक कथन जे बाहरसँ आबयवाला शोधकर्ता सिखाबय मात्र नहि, स्थानीय अनुभवसँ सीखय सेहो—संग्रहक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रतिज्ञा थिक।[141]

‘लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार’ कठिन मार्ग, समुदायसँ भेंट आ सम्पर्कक सीमाकेँ दर्ज करैत अछि। ‘संगाईप्राऊ’मे नागा पूर्वज-स्मृति आ सामुदायिक उद्यम, ‘नन्दा-राजजात’मे तीर्थक सामूहिक गति, आ ‘भावमय, भोगमय, योगमय बृन्दावन’मे भक्ति, लोककथा आ यात्रा-दृष्टि एकत्र होइत अछि। एहि रचनासभकेँ एकहि मानकसँ नापब उचित नहि: कतहु क्षेत्र-अवलोकन प्रधान, कतहु आध्यात्मिक संस्मरण। सभकेँ तथ्यात्मक क्षेत्र-प्रतिवेदन मानि लेलासँ लिखनिहारक अनुभव आ जनविश्वासक मर्यादा भंग हएत।

‘मलिक भाय केर फुटपाथी चिंतन’: वार्तालापक साहित्यिक उपयोग

एहि यायावरीक केन्द्र स्वयं यात्रा-स्थान नहि, मुर्तजा मलिक संग बातचीतक बहाने सार्वजनिक जीवन, राजनीति, प्रशासन आ सांस्कृतिक संस्थाक अनुभव अछि। संवादक रूप लेखककेँ तत्कालीन जनमत, शंका आ तीख व्यंग्य राखबाक अवसर दैत अछि। मलिक भायक कथन कथावाचककेँ प्रेरित करैत अछि, मुदा ओ स्वतः प्रमाणित ऐतिहासिक तथ्य नहि बनि जाइत। एहि भेदकेँ ध्यानमे राखब महत्त्वपूर्ण अछि—विशेष रूपसँ प्रशासन वा राजनीतिक व्यक्तिक बारेमे गरमागर्म टिप्पणी पढ़ैत काल। लेख संवादक गतिसँ जीवित रहैत अछि; तकर कठिनाई ई जे पाठक बहुत विषयपर एक पक्षक प्रेक्षण पबैत अछि, जाँचल तुलनात्मक सामग्री

141 मिश्र, ‘नॉर्थ कछार हिल्स’, ‘लोअर दिवांग घाटी: इदु-मिसमी जनजातिक अनुपम संसार’, ‘संगाईप्राऊ’ तथा ‘उत्तराखण्डक नन्दा-राजजात’ सम्बन्धी यात्रावृत्तान्त, ‘विदेह सदेह २९’।

कम। एकरा तत्कालीन बौद्धिक वातावरणक साक्ष्यक रूपमे पढ़ब, निर्णयात्मक राजनीतिक इतिहासक रूपमे नहि, अधिक उचित अछि।

लोककला, सामाजिक पुनर्विचार आ आलोचना

मिथिला चित्रकला आ सांझी: स्त्रीक चित्रित भाषा

'मिथिला चित्रकला: भूत, वर्तमान आ भविष्य'मे रंग, भित्ति, कोहबर, धार्मिक अवसर आ स्त्रीक रचनात्मकता मुख्य सूत्र अछि। लेखक चित्रकलाकेँ स्त्रीक मनोवृत्ति व्यक्त करबाक 'लिपि'क रूपमे बुझैत छथि। ई सूझ अत्यन्त उपजाऊ अछि: चित्र कागजपर राखल वस्तु मात्र नहि, संवादक साधन आ सामाजिक स्मृतिक वाहक थिक। बाजारक दबाबमे मूल सौन्दर्यात्मक भाषाक पतनक जे भय लेखक रखैत छथि, ओ संरक्षणक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि।[142]

मुदा 'मूल' आ 'परिवर्तित' कलाकेँ सदा शत्रु मानबो एक सरल निष्कर्ष हएत। नव कलाकार, दलित समुदाय आ स्त्रीक नूतन विषय-चयन परम्पराकेँ केवल बिगाड़ैत नहि, ओकर अर्थक्षेत्र बढ़बैत सेहो छथि। राष्ट्रीय शिल्प संग्रहालयक परिचय आ नवीन कलाअध्ययनसँ सेहो भित्तिचित्र, कोहबर, बाजार आ अलग-अलग सामाजिक समूहक योगदानक बहुलता स्पष्ट होइत अछि। एहि बाहरी सन्दर्भमे लेखकक चित्रकला-प्रेम उचित बुझाइत अछि, किन्तु सम्पूर्ण कला-इतिहास लेल अधिक विविध साक्ष्य चाही। 'मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला'मे सामा-चकेबा आ सांझीक तुलनासँ ईही जिज्ञासा व्यापक भऽ जाइत अछि। दैनिक रूपसँ नव चित्र रचबाक, उखाड़बाक आ पुनः बनाबाक क्रिया चित्रकेँ स्थिर वस्तु नहि, काल-सम्बद्ध अनुष्ठान बना दैत अछि।[143]

सामाजिक परम्परापर आन्तरिक आपत्तिः बलिप्रदान आ तमाकू

'छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन'क विशेषता लेखकक आत्मघोषणा अछि जे ओ परम्पराकेँ मानैत छथि, मुदा हिंसा आ शोषणकेँ मानबाक बाध्यता नहि मानैत। पूजाक सार्वजनिक स्थलमे बलिक विरोध, संस्कारक विकल्प, परिवारक संग मतभेद, आ सामुदायिक सहमतिक आग्रह लेखकेँ घोषणापत्रक स्थानपर

142 मिश्र, 'मिथिला चित्रकला (पेटिंग): भूत, वर्त्तमान आ भविष्य' तथा 'मेवाड़ आ मालवाक सांझी लोककला: एक परिचय', 'विदेह सदेह २९'।

143 Claire Burkert आ Cristin McKnight Sethi, 'Painting in Mithila, an introduction', Smarthistory (२८ अप्रैल २०२१), https://smarthistory.org/painting-mithila-introduction/।

आत्मसंघर्षक दस्तावेज बना दैत अछि। परम्परा आ नैतिकता एतऽ स्थिर विरोधी नहि: सुधार परम्पराक भीतरसँ सम्भव मानल जाइत अछि।[144]

'तमाकूल सँ बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति'मे लेखक व्यसनक दैनिक सामान्यीकरण पर चोट करैत छथि। घरक आतिथ्यसँ सार्वजनिक व्यवहार धरि तमाकूक स्वीकार्यता एक सामाजिक चिन्ता बनैत अछि। पाठक एकटा जरूरी अन्तर ध्यानमे राखथि: व्यसनक विरुद्ध लेखकक नैतिक आग्रह आ स्वास्थ्य-सम्बन्धी विशिष्ट चिकित्सकीय दावा अलग प्रकारक प्रमाण चाहैत अछि। दोसर प्रकारक दावाक वैज्ञानिक जाँच लेखमे व्यवस्थित शोध-सन्दर्भसँ पूरा नहि कएल गेल अछि। साहित्यिक-समाजसुधारक लेखनक दृष्टिसँ ई निबन्ध सशक्त अछि; सार्वजनिक स्वास्थ्यक अन्तिम प्रमाणपत्रक रूपमे एकरा प्रस्तुत करब उचित नहि।

आलोचक कैलाश: पोथी पढ़बाक सामाजिक मानक

'बनैत-बिगड़ैत'क समीक्षामे सुभाषचन्द्र यादवक कथा-भाषा, निम्न-मध्यमवर्गीय अनुभव, पाखण्डविरोध, कोसीक परिवेश आ वर्ग-सापेक्ष संकोच लेखकक विशेष ध्यान खींचैत अछि। ओ 'ओ लड़की'क नवीनक अपमानानुभूतिसँ भाषा-प्रयोग आ सामाजिक मनोदशा एकत्र देखैत छथि। 'रामलोचन ठाकुरक मैथिली लोककथा'मे कथासंग्रहकेँ केवल कागजपर राखल कथा नहि, लोककंठक पुनर्लेखन मानैत छथि; पद्य-टुकड़ाक पुनरावृत्ति आ लोकज्ञानी पात्रक भूमिका प्रमुख बनैत अछि। आलोचक कथासभकेँ सामाजिक-सांस्कृतिक ज्ञानक स्रोत मानैत छथि।[145]

जगदीश प्रसाद मण्डलक 'गामक जिनगी' आ 'जीवन संघर्ष'पर टिप्पणीमे बाढ़ि, रोजगार, ग्राम्य-जीवन, विधवा, श्रम आ स्थानीय समाधानक मूल्यांकन प्रधान अछि। लेखक मण्डलक समस्या-केन्द्रित किन्तु आशावान कथा-दृष्टिक प्रशंसा करैत छथि। एहि आलोचनासभमे मैथिली साहित्यक सामाजिक उपयोगिता लेल आत्मीय आग्रह अछि। मुदा प्रशंसा कखनो शिल्पक सम्भावित दोषपर कठोर विचारकेँ कम स्थान दैत अछि। कथासंरचना, वाचक-प्रयोग, कथाभाषाक विविधता, पात्रक स्वतन्त्रता आ व्यतिक्रमपर समान विस्तारसँ विचार भेने आलोचना आरो समृद्ध होइत।

'इंद्रधनुषी अकास' शीर्षकक छोट टिप्पणीमे लेखक जगदीश प्रसाद मण्डलक कविता-संग्रहक आमुख लिखबाक प्रसंगसँ अपन मानवशास्त्रीय प्रशिक्षण आ काव्यात्मक अभिव्यक्तिक दूरी स्वीकार करैत छथि।

144 मिश्र, 'छागरक बलिप्रदानपर चिन्तन: परम्परामे परिवर्तनक औचित्य' तथा 'तमाकूल सं बरबाद होइत मैथिल आ मैथिली संस्कृति', 'विदेह सदेह २९'।

145 मिश्र, 'बनैत-बिगड़ैत' पर विवेचना, 'रामलोचन ठाकुरक मैथिली लोककथा: एक विवेचना', 'गामक जिनगी' आ 'जीवन संघर्ष' पर समीक्षा, 'विदेह सदेह २९'।

एकरा स्वतन्त्र विस्तृत कवितासमीक्षा बुझब उचित नहि; ई मण्डलक साहित्यिक दृष्टिक सराहनामूलक प्रस्तावना थिक।

‘रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस केर उदासीनता’ साहित्यिक मान्यताक राजनीति आ लोक-स्मृतिक बीच तनाव उजागर करैत अछि। लेखक लोकप्रिय गीतकारक योगदानक अपेक्षाकृत कम संस्थागत सम्मानपर प्रश्न करैत छथि। एहि लेखमे साहित्यिक मूल्यांकनक संग सांस्कृतिक संस्थाक भूमिका मुख्य विषय बनि जाइत अछि। किन्तु विशिष्ट पुरस्कार-सम्बन्धी कथनकेँ आधिकारिक दस्तावेजसँ जाँचब आवश्यक अछि; लेखकक आरोप वा अनुभूतिकेँ बिना प्रत्यक्ष अभिलेखक ऐतिहासिक निष्कर्ष बना देब अनुचित हएत।[146]

लोकइतिहासक लेख: विश्वास, स्थलनाम आ ऐतिहासिक प्रमाण

‘राजस्थान केर मंडोवरमे रावण आ मंदोदरीक विवाह’ यात्रा-स्थल, भग्न वास्तु, लोककथा आ पुरातात्त्विक जिज्ञासाक संयुक्त प्रसंग अछि। लेखक प्रश्न उठबैत छथि जे पत्थर आ जन-स्मृतिक गुप्त कथा कोना खुलेत। एहि प्रश्नक साहित्यिक आ अनुसन्धानात्मक महत्त्व अछि। मुदा स्थानीय कथा मात्रसँ रामायणकालीन घटना सिद्ध भऽ जाइत—एहन दावा लेखकक विवरणसँ प्रमाणित नहि होइत। लोकपरम्परा ई बतबैत अछि जे समाज किछु स्थलकेँ कोना अर्थ दैत अछि; ऐतिहासिक घटनाक काल, स्थान आ तथ्य निश्चित करबाक लेल स्वतन्त्र लेख, पुरातत्त्व आ समकालीन अभिलेख चाही।[147]

‘सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता’मे स्थलनाम, धरोहर, शिवलिंग, स्वप्न, कुल-इतिहास आ स्थानीय सूचना बहुधा एक संग रखल गेल अछि। आलेखक अन्तमे कुमार गगनक ई-पत्र जोड़ब सराहनीय अभिलेखीय विशेषता अछि; पाठकेँ संवादक प्रक्रिया बनबैत अछि। मुदा ‘सौराठ’ आ ‘सौराष्ट्र’क सम्भावित भाषिक सम्बन्ध वा सीताक स्वयंवरक स्थानकेँ मान्य लोककथासँ आगाँ निर्विवाद इतिहासक रूप देबाक लेल पर्याप्त भाषावैज्ञानिक आ ऐतिहासिक प्रमाण आवश्यक अछि। लेखक कतेको ठाम ‘कहल जाइत अछि’ आ ‘भऽ सकैत अछि’ कहैत सावधानी बरतैत छथि; पाठककेँ सेहो ओही सावधानी अक्षुण्ण रखबाक चाही।[148]

‘महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नबाज’मे मणिपुरक राजनीतिक-सांस्कृतिक इतिहास आ लोकस्मृतिक परिचय अछि। लेखक विभिन्न मत समक्ष रखबाक प्रयास करैत छथि। एतऽ ऐतिहासिक दावाक

146 मिश्र, ‘रवीन्द्रनाथ ठाकुर, हुनक रचना आ जनमानस केर उदासीनता’, ‘विदेह सदेह २९’।

147 मिश्र, ‘राजस्थान केर मंडोवरमे रावण आ मंदोदरीक विवाह: लोक इतिहास केर मूर्त आ अमूर्त प्रमाण’, ‘विदेह सदेह २९’।

148 मिश्र, ‘सौराठक सोमनाथ आ सौराष्ट्रक सोमनाथमे समानता’, ‘विदेह सदेह २९’; एहि आलेखक संग कुमार गगनक ई-पत्र सेहो संकलित अछि।

तिथि, पदनाम आ वंशावलीक दोहरापन जाँचबाक लेल अतिरिक्त विशेषज्ञ स्रोत आवश्यक हएत। निबन्धक महत्त्व मैथिली पाठककेँ मिथिलाक बाहरक इतिहाससँ परिचित करबामे अछि, नहि कि इतिहासलेखनक सभ विवादक अन्तिम निपटारामे।[149]

कविता, आख्यान-शिल्प आ भाषिक विश्लेषण

'गामक कचोट': स्मृतिक सूचीसँ आधुनिक जीवनक विडम्बना

पद्य-खण्डमे 'गामक कचोट' एकटा कविता अछि। रूप-रचनाक दृष्टिसँ ई भाव-सूची आ लोकस्मृतिक क्रमबद्ध आवाहन अछि: पोखरि, नहरि, फूल, तुलसी-चौरा, माटिक महादेव, खेल, आम बिछब, मड़ुआ, माछ, दूध, खिड़सा, सोहर, समदाउन, जोग आ ऋतुगान—सभ छवि एक-दोसरकेँ पुकारैत आगाँ बढ़ैत अछि। कविताक महत्त्व केवल ग्राम्य-वस्तुक संख्या नहि, अनुभवक इन्द्रियगत विस्तार अछि। पाठककेँ स्वाद, गन्ध, स्पर्श, ध्वनि आ घरेलू कामक संयुक्त संसार भेटैत अछि। ग्राम्य जीवन आदर्श भऽ उठैत अछि किएक तँ ओकरा सभ ज्ञानेन्द्रिय माध्यमसँ स्मरण कएल जा रहल अछि।[150]

अन्तिम भागमे नगरक साधन-सुविधाक संग मधुमेहसँ ग्रसित मनुष्यक उपमा आधुनिक समृद्धिक असमर्थता व्यक्त करैत अछि: सब भेटैतहुँ ओहि स्वादक उपभोग नै भऽ पबैत। ई तुलना तीख अछि, मुदा ग्राम्य गरीबी, रोग, जातीय विभाजन वा श्रमक कठोरताकेँ लगभग अदृश्य बना दैत अछि। कविताक स्मृति चयनात्मक अछि—ई कविताक विधागत गुणो भऽ सकैत अछि, आलोचनात्मक सीमा सेहो। विशेष तथ्य ई जे विशाल गद्य-संग्रहक अन्तमे एहि एकल कवितासँ पूर्वक सामाजिक-विवेचन भावात्मक प्रतिध्वनि पबैत अछि; जे सांस्कृतिक संसार निबन्धमे विश्लेषित छल, से कवितामे आतुर पुकार बनि जाइत अछि।

कथा-शिल्प: राघवक पुनरावृत्ति, संवादक बहुलता आ कालक घेरा

संग्रहक अनेक कथामे 'राघव' नामक कथावाचक, श्रोता अथवा अनुभवक वाहक पुनः-पुनः अबैत छथि। एहि पुनरावृत्तिसँ अलग कथासभक भीतर एक अर्थगत सम्बन्ध बनैत अछि। राघव कखनो लेखक-सदृश निरीक्षक, कखनो मित्र, कखनो नारीजीवनक गोपनीय कथाक श्रोता छथि। 'पण्डिताइन'क वर्तमानसँ अतीतमे जाइत फेर वर्तमानमे घुरि अबबाक रचना आ 'परिस्थिति लेखिका'क भीतर कथाक पुनर्संयोजन दर्शबैत अछि जे लेखककेँ कथाक समय-संरचना सँ लगाव अछि।

149 मिश्र, 'महाराजा पंहिबा: मणिपुर केर गरीब नवाज', 'विदेह सदेह २९'।

150 मिश्र, 'गामक कचोट', 'विदेह सदेह २९'।

मुदा अवलोकनक ई साक्षी कखनो सर्वज्ञक स्थानमे पहुँचि जाइत अछि। स्त्रीक मोन, दूरस्थ घटनाक निजी संवाद आ पात्रक मानसिक निर्णयक बारेमे व्यापक जानकारीक दावा कथागत स्वातन्त्र्यक भीतर सम्भव अछि; परन्तु जखन भाषा क्षेत्र-अनुसन्धानक सन भऽ जाइत अछि, तखन कथा आ प्रतिवेदनक भेद धुँधला पड़ैत अछि। कथा-साहित्य लेल ई दोष अनिवार्य नहि, किन्तु विधा-परिचयक अस्पष्टता पाठककेँ भ्रमित कऽ सकैत अछि। ‘लघुकथा’ रूपमे प्रकाशित अनेक विस्तृत रचनाक लम्बाई आ बहुपीढ़ी कथाविस्तार एहि समस्याकेँ बढ़बैत अछि। भविष्यमे विधागत वर्गीकरण अधिक सावधानीसँ कएल जाए तऽ पोथीक साहित्यिक मानचित्र स्पष्ट हएत।

भाषा: बोलचालक ऊर्जा, तद्भवक जीवन आ सम्पादकीय असमानता

लेखकक मैथिली गद्यक सर्वाधिक प्रभावी भाग ओहि ठाम अछि जतऽ घरेलू संवाद, लोकशब्द आ कहबी अपन सहज स्थितिमे आबैत अछि। ग्रामीण जीवनक शब्द-संसार—भानस, पैंच, बँसबिट्टी, ड्योढ़ी, कोहबर, सौराठ, चिपड़ी, खिड़सा, कंसार—पाठकेँ स्थानीय अनुभवसँ सघन करैत अछि। स्त्रीगणक बोलीमे कथित वक्रता, व्यंग्य, मान-मनौवल आ उपरागक स्वर जे अनुवादसँ सरलतासँ नहि भेटैत, से मूल गद्यक महत्त्वपूर्ण सम्पदा थिक। लेखकक क्षेत्र-अनुभव एहि शब्दसभकेँ अर्थहीन अलङ्कार नहि रहए दैत; ओ सामाजिक क्रियाक संग अबैत अछि।

सीमा सेहो कम नहि। एकहि लेखमे ‘सं’, ‘सँ’, ‘मे’, ‘में’, ‘नहि’, ‘नै’, ‘कएल’, ‘केल’ जकाँ लेखनरूपक असंगति, हिन्दी-अंग्रेजीक अनावश्यक शब्द, विरामचिह्नक अति अथवा अभाव, तथा किछु ठाम स्पष्ट टङ्कणदोष भेटैत अछि। रचनासभ अलग-अलग समयमे प्रकाशित भेलाक कारण भाषा-विन्यासक अन्तर स्वाभाविक अछि; किन्तु संकलन-सम्पादनक स्तरपर मानकीकरण अपेक्षित छल। भाषा-निखारक अर्थ लोकबोलीक प्राण छीनब नहि, अपितु ध्वनि, विभक्ति, सर्वनाम आ शीर्षक-रूपकेँ सोचि-समझि एकरूप करब थिक। साहित्यिक समीक्षा लेल मूल पाठक उद्धरण जखन आवश्यक हो, तखन तकर असंगत लेखन ज्योंक-त्यों देखब कतेको बेर पाठभेदक प्रमाण बनैत अछि; आलोचनात्मक गद्यकेँ स्वयं भाषिक सुसंगति बनौने रखबाक चाही।

मानवशास्त्रीय पद्धतिक कसौटी: प्रेक्षण आ प्रमाणक दूरी

एहि संकलनकेँ केवल निबन्धकारक भावुक प्रेमक पोथी कहब अन्याय हएत। लेखक अनेक स्थलक यात्रा करैत छथि, कथावाचक/सूत्रदाताक नाम कखनो दैत छथि, गीतक बोल उद्धृत करैत छथि, लोकविश्वासक भिन्न अर्थ दर्ज करैत छथि, आ अनुष्ठानक सामाजिक भूमिका बतेबाक यत्न करैत छथि। ई सामग्री सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययनक लेल उपयोगी अछि। क्लिफर्ड गीर्त्सक ‘सघन वर्णन’क अवधारणा कहैत

अछि जे सांस्कृतिक क्रियाक अर्थ तकर सामाजिक प्रसंग बिनु नहि बुझल जा सकैत; लेखकक किछु सफल प्रसंग एहि दिशाक निकट पहुँचैत अछि।[151] रिचर्ड बाउमनक ‘वाचिक कला: प्रदर्शन’ दृष्टि गीत आ कथाकेँ लिखित पाठसँ आगू सजीव सामाजिक घटना मानैत अछि।[152]

तथापि पुस्तकसँ ‘कुल मिथिला’क एकरूप निष्कर्ष निकालब पद्धतिगत जोखिम अछि। गीत-गायिकाक स्थान, क्षेत्र, अवसर, जाति, पीढ़ी, मूल रेकॉर्डिङ्ग, सन्दर्भक भेद, सहमति आ अनुवाद-प्रक्रियाक स्पष्ट विवरण सदिखन उपलब्ध नहि। लेखसभमे कतेक स्मृति बाल्यकालक अछि, कतेक प्रत्यक्ष क्षेत्रकार्यक, कतेक दोसर स्रोतसँ प्राप्त, से समान रूपसँ अंकित नहि। एहि कारण संवेदनशील व्याख्या अनेक ठाम विश्वसनीय होइतहुँ पुनःपरीक्षण कठिन होइत अछि। शोधक अपेक्षा ई नहि जे अनुभवकेँ त्यागि देल जाए; बल्कि ई जे अनुभूतिपर आधारित निष्कर्षक संग प्रमाण-श्रृंखला सेहो देखाओल जाए।

स्रोत-श्रेयक आलोचनात्मक परीक्षा

‘मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक’ निबन्धमे अंग्रेजी ‘You start dying slowly’ आ ओकर मैथिली रूपान्तरण पाब्लो नेरुदाक नामसँ प्रस्तुत अछि; निबन्धमे नेरुदाकेँ स्पेनक कवि सेहो कहल गेल अछि।[153] नेरुदा वस्तुतः चिलीक कवि छलाह।[154] ‘A morte devagar’ शीर्षकसँ परिचित उक्त रचनाक मूल श्रेय ब्राजीलक लेखिका मार्था मेदेइरोसकेँ जाइत अछि; इंटरनेटपर ई रचना नेरुदाक नामसँ प्रसारित भेल।[155]ई त्रुटि संग्रहक समग्र साहित्यिक योगदानकेँ निष्प्रभावी नहि करैत, मुदा साहित्यिक सन्दर्भमे लेखक-श्रेयक विश्वसनीयता आ प्रत्यक्ष स्रोतक परीक्षण कतेक आवश्यक अछि, से स्पष्ट करैत अछि।

निष्कर्ष

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक एहि संकलनक वास्तविक केन्द्र ‘लोक’क महिमामण्डन नहि, लोकजीवनक अनेक विरोधाभाससँ लगातार संवाद थिक। जे लेखक कोहबर, मधुश्रावणी, लोकगान आ परम्पराक पक्षधर

151 Clifford Geertz, ‘Thick Description: Toward an Interpretive Theory of Culture’, The Interpretation of Cultures: Selected Essays (New York: Basic Books, १९७३)।

152 Richard Bauman, ‘Verbal Art as Performance’, American Anthropologist 77, अंक २ (१९७५), https://doi.org/10.1525/aa.1975.77.2.02a00030।

153 मिश्र, ‘मैथिली लोकगीतमे कौआ सम्बाहक’, ‘विदेह सदेह २९’।

154 Library of Congress, ‘Pablo Neruda’, जीवनी-सूचना, https://www.loc.gov/item/n79046560/pablo-neruda-chile-1904-1973/।

155 L&PM Editores, ‘Poema atribuído a Pablo Neruda na Internet é de Martha Medeiros’, १३ जनवरी २००९; लेखमे मूल रचनाक श्रेय मार्था मेदेइरोसकेँ देल गेल अछि।

छथि, सएह ठेहुन दागबाक विधि, सार्वजनिक बलि, तमाकू आ स्त्रीक अपमानपर प्रतिवाद करैत छथि। जे लेखक ग्रामीण स्मृतिमे डूबल छथि, सएह यात्राक माध्यमसँ मिथिलासँ बाहर नागा, दिमासा, इदु-मिसमी, मालवा आ मेवाड़क सांस्कृतिक संसार मैथिली पाठक समक्ष अनैत छथि। जे कथाकार स्त्रीक वेदनाकेँ केन्द्रमे रखैत छथि, हुनकर गद्यकेँ पुरुष-दृष्टिक पूर्वग्रहसँ मुक्त भऽ अनवरत सीखबाक सेहो आवश्यकता अछि। एहि द्वन्द्वकेँ छिपौने बिना पोथीक मूल्य देखब चाही।

साहित्यिक दृष्टिसँ प्रभावशाली रचना ओ सभ अछि जतऽ विशिष्ट दृश्य सामाजिक प्रश्नक संग जुड़ि जाइत अछि—‘पण्डिताइन’क अन्तक शोकध्वनि, ‘चन्दा’क दाहसंस्कार, ‘सखी कुन्ती’क स्मृति, नन्दिताक आत्मकथाक क्षण, मायक ‘फाटू हे धरती’, नानीक भरथरी-गान, अथवा ‘गामक कचोट’क ग्राम्य-संवेदनात्मक सूची। अनुसन्धानक दृष्टिसँ सबसँ फलप्रद आलेख ओ सभ अछि जतऽ लेखक प्रश्नकेँ खुलल रखैत छथि—मधुश्रावणीक जातीय सीमा, लोकगानमे स्त्रीक विरोध, परम्परामे हिंसाक विकल्प, लोककथाक संरक्षण, आ स्थलनामक ऐतिहासिक सन्दर्भ।

तकर विपरीत पुस्तकक तीन मुख्य सीमा अछि: कतिपय कथामे अनावश्यक विस्तार; क्षेत्र-अवलोकन, स्मृति, लोकमान्यता आ सत्यापित तथ्यक बीच असमान दूरी; आ संकलित पाठक सम्पादन-स्रोत-निर्देशनक अपर्याप्तता। एहि सीमासभकेँ चिन्हित करब लेखकक कार्यक विपरीत नहि, ओकर टिकाउ महत्त्वक प्रति जिम्मेदारी थिक। एहि कृतिक स्थान मैथिली गद्यक ओहि धारामे अछि जे साहित्य, सांस्कृतिक मानवशास्त्र आ जनजीवनक आलोचनाकेँ एक-दोसरसँ संवाद करबैत अछि। ई संग्रह भविष्यक शोधकर्ताकेँ तैयार उत्तरसँ बेसी उपयोगी प्रश्न दैत अछि; आ एही प्रश्नशीलता ओकर स्थायी उपलब्धि अछि।

सन्दर्भ-सूची

मिश्र, कैलाश कुमार। विदेह सदेह २९ : डॉ. कैलाश कुमार मिश्र केर गद्य आ पद्य रचना। सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर। विदेह, २०२२।

Bauman, Richard. ‘Verbal Art as Performance.’ American Anthropologist, खण्ड 77, अंक 2 (1975)। https://doi.org/10.1525/aa.1975.77.2.02a00030

Burkert, Claire, आ Cristin McKnight Sethi. ‘Painting in Mithila, an introduction.’ Smarthistory, 28 अप्रैल 2021। https://smarthistory.org/painting-mithila-introduction/

Geertz, Clifford. ‘Thick Description: Toward an Interpretive Theory of Culture.’ The Interpretation of Cultures: Selected Essays. New York: Basic Books, 1973।

Library of Congress. ‘Pablo Neruda.’ जीवनी-सूचना। https://www.loc.gov/item/n79046560/pablo-neruda-chile-1904-1973/

L&PM Editores. ‘Poema atribuído a Pablo Neruda na Internet é de Martha Medeiros.’ 13 जनवरी 2009। https://www.lpm.com.br/site/default.asp?ID=706072&SecaoID=816261&SubsecaoID=0&Template=..%2Fartigosnoticias%2Fuser_exibir.asp&TroncoID=805136

नित नवल कैलाश कुमार मिश्र

पाँच कृति, पाँच अध्ययन

मिथिलाक गाम, ओकर लोकस्मृति, लोकगीत, स्त्रीक स्वर आ मैथिली गद्यक बदलैत संसार — डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक एहि सभ दिसाक लेखनकें एहि पोथीमे पाँचटा साहित्यिक आ स्रोत-समीक्षात्मक अध्ययनक माध्यमे पढ़ल गेल अछि।

एतय गामक लोक इतिहास अछि, पोथी-समीक्षाक आलोचनात्मक विवेक अछि, बुलकीक न्यायविहीन जीवनक प्रश्न अछि, यायावरी आ मिथिला चित्रकलाक चर्चा अछि, आ लोकगीत-फकड़ामे मैथिलानीक अनुभव अछि। प्रत्येक अध्ययन कृतिक उपलब्धिकें सराहैत अछि, मुदा प्रमाण आ निकटपाठक कसौटीपर ओकर सीमा सेहो परखैत अछि।

एहि पोथीमे अध्ययन कएल गेल कृति

१ अरेड़ : गामक लोक इतिहास
२ ‘बुकमेनिया’ : पाठ, समाज आ समालोचनात्मक विवेक
३ मनसरबी — जाति, स्त्री-अनुभव आ न्यायक अनुत्तरित प्रश्न
४ विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना : लोकसृजन, यायावरी आ साहित्यिक विवेक
५ विदेह सदेह २९ : लोकक जीवन, स्त्रीक स्वर आ प्रमाणक कसौटी

विदेह वेबसाइट
www.videha.co.in

विदेह ई-जर्नल
videha-ejournal.github.io/videha

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर • सम्पादक : विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
© गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर, २०२७